# तंत्र प्रयोग

तंत्र में प्रयुक्त होने वाली सुलभ सामग्री से सफल प्रयोग।

योगीराज यशपालजी

# तन्त्र प्रयोग

(नया परिवर्द्धित संस्करण)

तन्त्र में प्रयुक्त होने वाली सामग्री की पहचान, प्राप्त करने के उपाय, प्रयोग कब और कैसे करें तथा समाज के सभी वर्गों के लिये उपयोगी तन्त्र प्रयोगों का एक सफल प्रस्तुतिकरण

*लेखक :*

**योगीराज श्री यशपाल जी**

संस्थापक एवं प्रबन्ध निर्देशक—
तंज्योति गुह्यविद्या साधन एवं अनुसन्धान केन्द्र

मूल्य : ₹ 200.00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

*प्रकाशक* : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार
फोन : (01334) 226297

*वितरक* : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

दिल्ली विक्रेता : **गगन बुक डिपो**
4694, बल्ली मारान, दिल्ली-110006
फोन : (011) 23950635, मो. : 9315667218
वेबसाइट : www.randhirbooks.com

संस्करण : **सन् 2021**

*मुद्रक* : **राजा ऑफसेट प्रिंटर्स**, दिल्ली-92

---



---

ISBN : 81-86955-88-7

**TANTRA PRAYOG**

*WRITTEN BY : YOGIRAJ YASHPAL JI*
*PUBLISHED BY : RANDHIR PRAKASHAN, HARDWAR (INDIA)*

# अपनी बात

तन्त्र प्रयोग?

आज जबकि तन्त्र तथा तान्त्रिक को पढ़े लिखे लोग धोखा, पाखण्ड तथा अन्धविश्वास कहते हैं तो तन्त्र प्रयोग लिखने का औचित्य क्या?

आप जब किसी को कोई चीज दिखाना चाहते हैं या उसे समझाना चाहते हैं यदि वह व्यक्ति उस विषय की गहरायी या उस चीज की विशेषता को नहीं जानता इसलिए वह आपका, आपकी चीज का तथा आपकी बात का मजाक उड़ाता है, व्यंग्य बाण छोड़ता है तथा अन्धविश्वास कहता है। यही स्थिति पढ़े-लिखे लोगों की हो गयी है। जिस पश्चिमी सभ्यता के पीछे यह लोग दौड़ते हुए जिस तन्त्र को पाखण्ड तथा अन्धविश्वास कहते हैं, उसी तन्त्र को पाश्चात्य लोग अपने जीवन में उतार रहे हैं। वहाँ पर इस विषय पर विस्तार से अनुसन्धान चल रहा है। यदि वह लोग पाखण्ड कर रहे हैं या अन्धविश्वास पर जीने जा रहे हैं तो यह उचित नहीं कि आप उनकी सभ्यता अपनायें। यह जानकर भी यदि आप पश्चिमी सभ्यता के दीवाने हैं तो भगवान जाने कौन कितना दोषी है।

हम भारतीय पढ़-लिख करके पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण करते हुए तन्त्र तथा तान्त्रिक को गाली देते हैं। जबकि इसी विषय को पश्चिम वालों ने विज्ञान के रूप में स्वीकार कर लिया है। कितनी विडम्बना है हम भारतवासियों के लिये कि हम भारतीय होकर भारतीय पुरातन विद्या को गाली देते हैं जबकि इसी विद्या ने विदेशी विद्वानों को आकर्षित कर रखा है।

शिक्षा का अर्थ होता है बौद्धिक विकास। शिक्षित होने का यह अर्थ नहीं होता कि व्यक्ति अपने नैतिक मूल्यों से ही गिर जाये और प्राचीन महाऋषियों को तथा प्राचीन पूज्य ग्रन्थों को गालियाँ दे। यह भूल जाये कि जिस विद्या को आज सभ्य समाज प्राप्त कर रहा है, वह भी सर्वप्रथम हमारे भारत में प्रारम्भ हुई थी।

भारतीय इतिहास गाली देने योग्य नहीं बल्कि विद्या प्राप्त करने के लिये है। संसार के समस्त देशों से भी हमारी प्राचीन सभ्यता आज भी खुदाई के अन्तर्गत प्राप्त होती है। जिसमें उस समय के अवशेष मिलते हैं। शिव तथा दुर्गा की प्रतिमायें मिलती हैं। अकल्पनीय यन्त्र मिलते हैं। यदि आप इस पर अभिमान करते हैं तो भारतीय प्राचीनता को गाली या अन्धविश्वास कहना मेरी समझ से आपके द्वारा अपने आपको ही कहना है।

मैं इस बात से तो सहमत हो सकता हूँ कि कुछ तान्त्रिक लोग अपने निजी स्वार्थ के लिये तन्त्र का दुरुपयोग करते हैं परन्तु इस बात से नहीं कि तन्त्र पाखण्ड या अन्धविश्वास है। आज बहुत से रोगों को आधुनिक चिकित्सा जगत मानता ही नहीं जिसमें से 'भूत लगना' और 'नाफ टलना' मुख्य हैं। जब किसी की नाफ टल जाती है तो उसे असहनीय पीड़ा होती है। इसका उपाय केवल तान्त्रिक के पास होता है और तान्त्रिक व्यक्ति ऐसे रोग को केवल सात बार फूँक मार कर दूर कर देता है। यदि नाफ ठीक हो गयी और वह स्वस्थ हो गया तो क्या यह पाखण्ड है? भूत-प्रेत लगने पर डॉक्टर उसे हिस्टीरिया कह देते हैं और उसका इलाज महीनों तक चलने पर भी वह हिस्टीरिया ठीक नहीं होता। एक तान्त्रिक व्यक्ति तीन फूँकों से ही पाँच मिनट में उस रोग को तथा रोग के कारण को दूर

करता है तो क्या यह पाखण्ड है?

मैं मानता हूँ कि तन्त्र के नाम पर बहुत से पाखण्डी अपनी दुकान चला रहे हैं। ऐसे समय में आपको ही निश्चय करना होता है कि सत्य क्या है तथा असत्य क्या है। तान्त्रिक व्यक्ति का पाखण्ड तो पाँच मिनट में ही उभर कर सामने आता है। यदि आप इस पाँच मिनट में उस पाखण्डी की पाखण्डता को भाँप नहीं पाते तो कमी तन्त्र की नहीं बल्कि आपकी है। यह ठग तो सदियों से रहे हैं और रहेंगे। आपको स्वयं ही कुछ निर्णय करने होंगे।

एक बाजार में कई डॉक्टर होते हैं जिनमें कुछ वास्तव में डॉक्टर होते हैं और कुछ नीम हकीम होते हैं। अब आप अपनी आवश्यकता के अनुसार यदि नीम हकीम के पास चले जाते हैं तो इसमें वास्तविक डॉक्टरों का क्या दोष है? इसी भाँति तन्त्र या तांत्रिक का कोई दोष नहीं होता बल्कि दोष होता है उस व्यक्ति का जो नीम हकीम के पास जा पहुँचता है।

जो तन्त्र में विश्वास करते हैं वह कितने दीन हैं? वह कितने दुखी हैं? जरा इस पर विचार तो करें। आज आये दिन अनेकों घरों से बहुएँ जलायी जा रही हैं। यह लोग कौन हैं और ऐसा क्यों हो रहा है? अब आप कहेंगे कि यह जो बहुएँ जला रहा वह बहू का ससुर, सास, देवर, ननद तथा पति है। मैं यह कहूँगा—'नहीं! यह जो बहुएँ जला रहा है वह किसी का रिश्तेदार नहीं बल्कि मध्यम वर्ग का जीवन है और यही मध्यम वर्ग तन्त्र पर विश्वास नहीं करता।'

तन्त्र का अर्थ क्या होता है?

'तं' अर्थात् तन जिसे कि देह कहते हैं। 'त्र' अर्थात् त्राण जिसे कि रक्षा करना कहते हैं। अतः निष्कर्ष यह निकला कि वह प्रक्रिया

जिसके द्वारा शरीर की रक्षा की जा सके उसे 'तन्त्र' कहते हैं।

तन्त्र में षट्कर्मों का समावेश होता है। जिसे कि मारण, मोहन, स्तम्भन, वशीकरण, उच्चाटन तथा विद्वेषण कहते हैं। अब आप सोचेंगे कि यदि तन्त्र का अर्थ तन की रक्षा से है तो मारण का अर्थ क्या है? जी हाँ! मारण का अर्थ मारण ही है परन्तु इसका प्रयोग भी तन की रक्षा के हेतु ही किया जाता है।

आपने देखा होगा परन्तु सोचा न होगा कि दुल्हन को सजाते सँवारते क्यों हैं? मैं समझता हूँ। दुल्हन को सजाने सँवारने की क्रिया का अर्थ केवल वशीकरण तथा मोहन ही होता है। यह क्रिया विशेष सामग्री के अभाव में लुप्त होते देखी गयी है। यदि कन्याएँ वशीकरण प्रयोग करतीं तो वह कभी जलायी नहीं जाती। आज जो स्त्रियाँ वशीकरण प्रयोग करती हैं उनका घर सफल है, वह सुखी हैं। मैंने स्वयं देखा है, अत: मैं स्पष्ट कह देना चाहता हूँ कि यदि कोई तन्त्र से दूर है तो वह अपने आप से तथा अपने सुखों से दूर है।

तन्त्र प्रयोग में बहुत ही स्पष्टवादिता से काम लिया है और मेरा विश्वास है कि इस पुस्तक को पढ़ने के बाद आपकी यह शिकायत समाप्त हो जायेगी कि तन्त्र पर कोई अच्छी पुस्तक नहीं है।

इस पुस्तक में केवल तन्त्र ही नहीं बल्कि तान्त्रिक सामग्रियों का विशेष परिचय भी प्रस्तुत किया गया है। इस भाँति की पुस्तक लिखने की मेरी हार्दिक इच्छा थी और आज यह इच्छा पूर्ण होकर आपके हाथ में है। आप अपनी आवश्यकता के अनुसार कोई भी प्रयोग करके लाभ उठा सकते हैं। आप सुखी रहें, आपका परिवार सुखी रहे, इसी अभिलाषा से यह प्रयत्न किया गया है।

# परिवर्द्धित संस्करण के विषय में

सर्व रूप मयं काली, सर्व काली मयं जगत।
अतोऽहम काली रूपा, त्वम् नमामि खड्ग खण्डेश्वरी॥

आज तन्त्र प्रयोग अपने परिवर्द्धित संस्करण में प्रकाशित होकर आपके हाथ में है और इस बार इसमें संशोधन करके विषय सामग्री बढ़ा दी गयी है, सभी मन्त्र यथास्थान प्रस्तुत हैं और देवी पाठ तथा हनुमत बीसा अपनी भव्य गरिमा के साथ पुस्तक के परिशिष्ट खण्ड में प्रस्तुत कर दिये गये हैं।

प्रथम संस्करण के पाठकों के अनेकों स्नेही पत्र और आलोचनात्मक पत्र प्राप्त हुए जिनसे आगामी संस्करण को एक सशक्त आधार प्राप्त हुआ है। अब इसके कई संस्करण छप चुके हैं और लगातार पुस्तक का प्रचार-प्रसार बढ़ा है। इस पुस्तक में कही गयी अत्यधिक वनोषधि आपके घर आँगन में या नगर के पार्कों में उपलब्ध रहती है परन्तु पहचान न होने के कारण ही आपको असुविधा होती है। इस समस्या का निराकरण करने के लिये मैंने कैमरे से वनौषधियों के चित्र लेकर एक पुस्तक का प्रबन्ध किया है जिसका नाम ''तान्त्रिक जड़ी-बूटी दर्पण'' है। यह भी प्रकाशित हो चुकी है। इसे अन्तिम प्रारूप मेरे शिष्य अवतार सिंह अटवाल ने दिया है।

अब शीघ्र ही मेरी चिर प्रतीक्षित पुस्तक 'मन्त्र रहस्य' भी अपनी पूरी गरिमा के साथ रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार से छपी है। आप इससे भी पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

आपको सफलता मिले, इसी आशा के साथ

आपका—**यशपाल**

# तन्त्र पर श्री यशपाल जी के विचार

- ❖ तन्त्र किसी विषय का प्रारम्भ नहीं अपितु यह तो वह विषय है जिसके बाद कोई विषय शेष नहीं रहता है।
- ❖ तन्त्र एक रहस्य है जिसे जिसने जितना समझा, उसने उतना ही स्वयं को पहचाना।
- ❖ तन्त्र परम तत्त्व से साक्षात्कार कराता है।
- ❖ तन्त्र के द्वारा समस्त कामनाओं को प्राप्त किया जा सकता है।
- ❖ तन्त्र विश्वास का सूत्रपात करता है।
- ❖ तन्त्र द्वारा प्राप्त किये गये फलों से व्यक्ति में आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।
- ❖ तन्त्र प्रयोग के द्वारा स्थूल से सूक्ष्म का तथा सूक्ष्म से स्थूल का रहस्य ज्ञात होता है।
- ❖ तन्त्र के द्वारा उस अभिजित शक्ति को प्राप्त किया जाता है जिसे आधुनिक विज्ञान कभी भी प्राप्त नहीं कर पायेगा।
- ❖ तन्त्र के द्वारा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति होती है आज जो भी प्रगति है वह सब तन्त्र ही है यथा—राजतन्त्र, मशीनतन्त्र, उर्वरक तन्त्र आदि।
- ❖ तन्त्र के द्वारा असम्भव को भी सम्भव बनाया जाता है।
- ❖ तन्त्र के द्वारा भाग्य को भी अनुकूल बनाया जा सकता है।

- ❖ तन्त्र मृत्यु के बाद के रहस्य को भी प्रस्तुत करता है।
- ❖ जो कल था वह आज नहीं, जो आज है वह कल नहीं होगा लेकिन तन्त्र कल भी था, आज भी है और कल भी रहेगा।
- ❖ तन्त्र के अभाव में व्यक्ति दुःख तथा क्लेश ही पाता है।
- ❖ तन्त्र एक मौन क्रिया है जिससे बड़े-बड़े आश्चर्यजनक तथ्य प्रस्तुत होते हैं।
- ❖ पूर्व जन्म के शुभ कर्मों के फलस्वरूप यदि तन्त्र का रहस्य ज्ञात हो जाये तो उसे जीवन में उतार लेना चाहिये।
- ❖ तन्त्र के अन्तर्गत षट्कर्म आते हैं परन्तु षट्कर्म के प्रभाव में तन्त्र कभी नहीं आता। तन्त्र षट्कर्मों से बहुत आगे की अगम्य विद्या है।
- ❖ तन्त्र और उनके प्रयोगों का आशय अन्यासी और अघोरियों से नहीं बल्कि साधारण मनुष्यों से सम्बन्धित है।
- ❖ तन्त्र का दुरुपयोग करने वाले समाज के शत्रु तथा महापापी हैं।

पुस्तक में दिये तन्त्र प्रयोग समाज की भलाई एवं कल्याण के लिए हैं यदि कोई दुष्ट दुष्प्रयोग करता है तो लेखक या प्रकाशक उत्तरदायी नहीं है।

# अनुक्रम

## परिशिष्ट खण्ड

# तन्त्र प्रयोग

## अपराजिता

भारत को केवल एक देश या देश की धरती के रूप में ही नहीं, बल्कि स्वर्ग भूमि के रूप में भी जाना-माना जाता है। भारत की भूमि को ही केवल यह विशेषता प्राप्त हुई कि आध्यात्म का जन्म, पालन तथा पूर्णता केवल यहीं पर हुई है और आप जानते हैं कि आध्यात्म का तथा स्वर्ग का परस्पर कितना अटूट सम्बन्ध है।

भारत की धरती में ही केवल स्वर्ग भूमि वाली विशेषताएँ पूर्णतया से पायी जाती हैं इसी कारण भारत की स्वर्गीय भूमि पर विभिन्न भाँति की चमत्कारिक जड़ी-बूटियाँ भी पायी जाती हैं।

यह एक लता जातीय बूटी है जो कि वन-उपवनों में विभिन्न वृक्षों या तारों के सहारे ऊर्ध्वगामी होकर सदा हरी-भरी रहती है। यह लता भारत के समस्त भागों में बहुलता से पायी जाती है और इसकी विशेष उपयोगिता बंगाल में दुर्गा देवी तथा काली देवी की पूजा के अवसर पर स्पष्ट दर्शित होती है।

भारत के विशेष पर्व नवरात्र के शुभ अवसर पर गोपनीय

पूजा में नौ वृक्षों की टहनियों की पूजा की जाती है। इन नौ वृक्षों में एक अपराजिता भी है।

अपराजिता के ऊपर बहुत ही सौन्दर्यमयी पुष्प अधिकांश खिले रहते हैं, अतः इसे पुष्प प्रेमी अपने घरों के आँगन या दरवाजों पर चढ़ा लेते हैं। गर्मी के केवल कुछ दिवस छोड़ करके शेष पूरे वर्ष भर यह लता पुष्पों से श्रृंगार किये रहती है।

अपराजिता पुष्प भेद के कारण दो प्रकार की होती है—१. नीले पुष्प वाली तथा २. श्वेत पुष्प वाली।

नीले पुष्प वाली लता को 'कृष्ण कान्ता' और श्वेत पुष्प वाली लता को 'विष्णु कान्ता' कहते हैं। मुख्यतया दोनों को ही अपराजिता कहा जाता है।

इसके पत्ते बनमूँग की भाँति आकार में कुछ बड़े होते हैं। प्रत्येक शाखा से निकलने वाली प्रत्येक सींक पर पाँच या सात पत्ते दिखायी देते हैं।

अपराजिता का पुष्प सीप की भाँति आगे की तरफ गोलाकार होते हुए पीछे की तरफ संकुचित होता चला जाता है। पुष्प के मध्य में एक और पुष्प होता है जो कि स्त्री की योनि की भाँति होता है। सम्भवतः इसी कारण शास्त्रों में इसे भगपुष्पी तथा योनि पुष्पा का नाम दिया गया है। नीले फूल वाली भगपुष्पा के भी दो भेद हैं जो कि ऊपर वर्णित के अलावा केवल इकहरा पुष्प ही होता है।

इसकी जड़ धारण करने से भूत-प्रेतादि की समस्या का निवारण होकर समस्त ग्रह दोष समाप्त हो जाते हैं।

इसके प्रयोग निम्नलिखित हैं—

## सुगम प्रसव

प्रसव के समय कष्ट से तड़पती या मरणासन्न हुई गर्भवती स्त्री की कटि में श्वेत अपराजिता की लता लाकर लपेट देने से कष्ट का समापन हो जाता है और प्रसव में सुगमता हो जाती है।

## वृश्चिक दंश

जब बिच्छू काट ले तो दंशित स्थल पर ऊपर से नीचे की तरफ श्वेत अपराजिता की जड़ को रगड़ें और उसी तरफ वाले हाथ में इसकी जड़ दबा दें तो पाँच मिनट में ही विष उतर जाता है।

## भूत बाधा

कृष्ण कान्ता की जड़ को नीले कपड़े में लपेट कर शनिवार वाले दिन रोगी के कण्ठ में पहना दें तो लाभ होता है। इसके साथ ही इसके पत्ते और नीम के पत्तों की धूप दी जाये या इनका रस निकाल कर एकसार करके नाक में टपका देने से आश्चर्यमयी लाभ प्राप्त होता है।

## गर्भ धारण

प्रायः किसी न किसी कारण से यौवनमयी कामिनियाँ चाहते हुए भी गर्भ धारण नहीं कर पातीं जिस कारण उनकी मानहानि अत्यधिक होती है। कभी-कभी तो इन्हें बाँझ मान कर श्रीमान जी की दूसरी शादी कर दी जाती है। ऐसी स्त्रियाँ नीली अपराजिता की जड़ को काली बकरी के शुद्ध दुग्ध में पीस कर के मासिक रजोस्राव की समाप्ति पर स्नान के पश्चात् पी लें और सारे दिन

भगवान कृष्ण की बाल रूप में पूजा करते हुए व्रत रखें रात्रि को गर्भ धारण के हेतु पति के साथ सहवास करें तो गर्भ की स्थिति हो जाती है।

यदि ऐसा करने से लाभ न हो तो अगले मासिक स्राव के स्नान पर लगातार तीन दिन तक यह प्रयोग करती रहें तो अवश्य गर्भ धारण हो जाता है।

## चोरों-बाघों से रक्षा

श्वेत अपराजिता को श्वेत बकरी के मूत्र के साथ घिस कर एक गोली बना लें और अपने पास रख लें। यह गोली जब तक आपके पास रहेगी तब तक 'चोर व्याघ्रादिरक्षणम्' अर्थात् चोरों और बाघों से रक्षा होती रहेगी।

## प्रबल वशीकरण

रविवार वाले दिन जब पुष्प या हस्त नक्षत्र पड़े तब इस लता पर खिले हुए समस्त पुष्पों को तोड़ कर रख लें।

यदि सूर्य ग्रहण या चन्द्र ग्रहण का अवसर हो तो इसकी मूल का संग्रह कर लें।

अब कृष्ण पक्ष में पड़ने वाली अष्टमी या चतुर्दशी को जब शनिवार पड़े या बुधवार पड़े तो किसी शिवालय में जाकर संग्रह की गई सामग्री को पीस कर गोली बना लें। इस गोली को छाया में ही सुखायें। इस प्रयोग को करते समय श्वेत वस्त्र धारण किये रहें।

इस गीली के सूखने पर सम्भाल कर रख लें और जब भी किसी से दास की भाँति कार्य करवाना हो तब इस वटी को घिस

कर माथे में तिलक लगा लें तो साधारण पुरुष या स्त्री की बात ही क्या, जब प्रबल शत्रु भी 'हाँ जी-हाँ जी' करने लगेंगे।

जब बहुत बड़ी भीड़ को मोहित करना हो तब इस वटी को ही मुख में जिह्वा के नीचे रख लेने से युद्ध भी समाप्त हो जाता है, फिर साधारण भीड़ की तो बात ही क्या कहें!

## सफेद रत्ती (गुंजा)

कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जो रत्ती से परिचित न हो। यह लता जाति का वृक्ष होता है। प्रायः छोटे-छोटे पेड़ों के तनों से लिपट कर के ऊर्ध्वमुखी होता है। यह सफेद तथा लाल दो रंगों में प्राप्त होता है। आदिकाल से जौहरी लोग सोना तथा रत्न का इससे वजन करते हैं। इसी कारण इसका नाम रत्ती पड़ा जबकि गुंजा के नाम से सर्वविख्यात है। वर्षा के प्रथम वारिपात के साथ ही जमीन में पड़ी हुई जड़ से अंकुर निकल पड़ते हैं। शनैः शनैः बढ़ते हुए यह अपने पूर्ण रूप को प्राप्त होती है। इसमें गुलाबी रंग के साथ सेम के पुष्पों से कुछ बड़े सेम के ही पुष्पों की भाँति पुष्प लगते हैं। इस लता की पत्तियाँ इमली के पत्तों की भाँति होती हैं। इसके ऊपर शरदकाल में पुष्प आते हैं। होली से कुछ पहले ही यह लता सूख जाती है। इसके सूख करके फटे हुए फलों से रंगीन छोटे-छोटे मोतियों की भाँति लाल रंग की तथा सफेद रंग की रत्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। बरबस ही मन करता है कि इन्हें तोड़ लिया जाय। इन दोनों में से लाल रंग की लता सर्वत्र उपलब्ध है। सफेद रंग की लता कहीं-कहीं भाग्यवश ही पायी जाती है। इसी

कारण लाल रत्ती का ही प्रयोग बहुधा किया जाता है। माना जाता है कि यदि यह लाल रत्ती किसी के घर में फेंक दी जाय तो उस घर के प्राणी लड़-लड़ कर बेहाल हो जाते हैं। आपको यदि सफेद रंग की रत्ती की लता मिले तो सावधानी से कही विधियों से उसकी जड़ (मूल) प्राप्त करें। यदि सफेद रंग की न मिले तो लाल रंग से कार्य चलायें।

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो तब इसकी मूल प्राप्त करें।

शुक्रवार के दिन यदि रोहिणी नक्षत्र पर ग्रहण पड़े तो भी उत्तम होगा। इस संयोग में भी इसकी मूल ले सकते हैं।

कृष्ण पक्ष अर्थात् अंधेरी रातों को जिस दिन अष्टमी तिथि पड़े और हस्त नक्षत्र का संयोग बने तो भी मूल ली जा सकती है। कृष्ण पक्ष की ही चौदस तिथि को स्वाति नक्षत्र हो या शतभिषा नक्षत्र हो तो आप इसकी जड़ का संग्रह कर सकते हैं।

उपरोक्त योगों की प्रथम रात्रि को आधी रात के समय अपने मन को भय रहित करके परिशिष्ट खण्ड में कहे तरीकों के अनुसार धूप दीप करके लता को आमन्त्रित कर आइये। इसके बाद मुँह अन्धेरे ही पुनः धूप दीप करके कही गयी विधि के अनुसार इसकी जड़ प्राप्त कर लें। रास्तें में किसी से न बोलें। मूल प्राप्त करते समय निर्वस्त्र रहने से अधिक लाभ होगा। घर जाकर उस मूल को दूध से स्नान करावें और फिर इसके चमत्कार स्पष्ट देखें।

## रत्ती के प्रयोग

१. यदि किसी को विष चढ़ गया हो तो इस जड़ को धोकर वह

पानी रोगी को पिलाने से विष समाप्त हो जाता है।

२. यदि इसकी जड़ को चन्दन की भाँति घिस करके माथे पर लगाया जाये तो लोग आकर्षित होकर गुणगान करने लगते हैं। अतः किसी भी समय में यह विधि प्रयोजनीय है।
३. यदि इस जड़ को ताँबे के ताबीज में भर करके किसी औरत के कमर में बाँधा जाये तो वह अपने कन्त से विषयभोग करके नवें मास में पुत्र रत्न को जन्म देती है। अतः पुत्र की कामना वाले लोग इसको प्रयोग करें।
४. यदि किसी और के मासिक का खून लेकर चन्दन की भाँति इसकी जड़ को उसमें रगड़ा जाये। इसके बाद इसको नेत्रों में काजल की भाँति डाला जाये और शत्रु से लड़ने के लिये जाया जाये तो शत्रु और उसकी सेना आपको विकराल रूप में देखेगी और डर करके भाग जायेगी।
५. यदि इस जड़ को शुद्ध शहद के साथ रगड़ करके काजल की भाँति अन्जन किया जाये तो गुप्त शक्तियों के दर्शन होते हैं। (सावधान—कमजोर दिल वाले यह प्रयोग न करें।)
६. बकरी के मूत्र के साथ इसे रगड़ करके अपने हाथों पर लेप कर लें तो दूर-दूर की सूझती है अर्थात् तीनों काल का ज्ञान प्राप्त होता है।
७. शुद्ध देशी घी के साथ इसे रगड़ करके पुरुष अपनी इन्द्री पर इसका लेप करे तो वीर्य स्तम्भन होता है। काम-शक्ति बढ़ती है, जिस कारण मन में उत्साह पैदा होता है।
८. शुद्ध गोरोचन की स्याही बनाकर जिसका भी नाम लिया

जाएगा वह तुरन्त मर जायेगा।

९. इसकी जड़ को गुलाब के रस के साथ घिस करके किसी शव की नाड़ी पर लेप कर दिया जाये तो वह मरा हुआ व्यक्ति चार घड़ी के लिये जीवित हो जाता है।

१०. इसकी जड़ को अंकोल के तेल में घिस करके नेत्रों में लगाने से पृथ्वी में दबा हुआ धन दिखायी देता है।

११. बाघिन का दूध लाकर इसकी जड़ को इसमें चन्दन की तरह रगड़ करके निर्वस्त्र होकर सारे शरीर पर इसका लेप लें। इसके बाद वस्त्र ग्रहण करके युद्ध में जाइये। आपका बाल भी बाँका न होगा।

१२. इसकी जड़ को तिल के तेल में घिस करके सारे शरीर पर मल लिया जाय तो देखने वाले को आप प्रबल शक्तिशाली दृष्टिगोचर होंगे अर्थात आपको देखते ही लोग आपसे भय मान जायेंगे।

१३. इसकी जड़ के अलसी के तेल में घिस करके कोढ़ी को लगाया जाय तो कोढ़ ठीक हो जाता है।

१४. इसकी जड़ को काजल की भाँति आँखों में डालने से केवल सात दिन के प्रयोग से ही अन्धा देखने लगता है।

१५. इसकी जड़ को यदि गंगाजल से रगड़ करके नेत्रों में लगाया जाय तो बिन मौसम, बिन बादल बरसात होती है।

१६. लाल रत्ती की लता को किसी क्रूर दिवस वाले दिन जिसके आँगन में लगा या लगवा दिया जाय तो शीघ्र ही उस घर के निवासियों का उच्चाटन हो जाता है।

# उल्लू

यह रात्रिचर पक्षी है और प्राय: सभी स्थानों पर पाया जाता है। कोई बिरला ही होगा जो इसे न जानता हो। तन्त्रों में इसके अनेकों प्रयोग होते हैं जो कि आगामी पृष्ठों पर कहे गये हैं। यहाँ पर उल्लू साधन की एक अत्यन्त गुप्त क्रिया प्रस्तुत कर रहा हूँ और निवेदन यही करता हूँ कि इस प्रयोग को स्वयं तक ही सीमित रखें।

## उल्लू साधन (वशीकरण के लिए)

सबसे पहले किसी शुभ समय, अच्छा होगा यदि ग्रहण काल हो तो नीचे दिया मन्त्र सावधानी के साथ एक सौ आठ बार जप लें। इस भाँति यह मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

***मन्त्र*—'ॐ नमो भगवते रुद्राय।'**

इस मन्त्र को सिद्ध कर लेने के बाद कहीं पर किसी वृक्ष से उल्लू पकड़ें। उल्लू को पकड़ते समय उपरोक्त मन्त्र जपते रहें। इसी मन्त्र को जपते हुए उल्लू को अपने घर ले जायें। एकान्त स्थान पर बैठ करके उस उल्लू का पंचोपचार से पूजन करें। इस पूजन के पश्चात उल्लू के पंखों पर हाथ रख करके उपरोक्त मन्त्र का २१ बार जप करें। इसके बाद उल्लू के माथे पर हाथ रख करके पुन: इक्कीस बार उपरोक्त मन्त्र का जप करें। यदि आपको उल्लू पर हाथ रखने में असुविधा हो तो बार-बार मन्त्र पढ़ करके कहे गए अंगों पर फूँक मारते रहें। स्मरण यही रखना है कि हाथ रखें या फूँक मारें, मन्त्र का जाप एक अंग के लिए केवल इक्कीस

बार ही किया जायेगा।

अब उल्लू के सामने ही नीचे दिया गया मन्त्र इक्कीस बार पढ़ें।

***मन्त्र*— ॐ कुरु कुरु महेश्वरी अन्नवर्द्धिनी प्रियेश्वरी नमः ॥**

इसके बाद अक्षत लेकर इन्हें भी इसी मन्त्र के द्वारा इक्कीस बार ताड़न करें। इसके बाद उल्लू को भोजन देना होगा। यह भोजन भी विशेष ही होगा। अतः नीचे लिखी सामग्री एकत्र करके उल्लू को खिला दें।

**भोज्य सामग्री**—नरास्थि का चूर्ण, प्रेत मस्तक का तन्तु, मृतक पुरुष का ताम्बूल लेकर चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को तण्डुल, पेय तथा माँस में मिला करके उल्लू को खिला दें।

शराब में जल मिला करके उल्लू के बायें पंख को तोड़ करके अपने हाथ में लें तथा नीचे दिया मन्त्र जपते हुए उस पंख की पूजा करें और उल्लू को छोड़ दें।

***मन्त्र*— ॐ उल्लूकाये नमः ॥**

अब आप वशीकरण प्रयोग कर सकते हैं।

इस पंख का चूर-चूर करके रख लें। यह वशीकरण के लिये उत्तम सामग्री है और इसकी काट कोई भी नहीं है। इस पंख के चूरे को किसी भी खाने-पीने वाली वस्तु में मिला करके जिसे वशीभूत करना हो, उसे खिला दें।

## उल्लू सिद्धि

अब आप अपनी आवश्यकता के अनुसार पुनः पहले वाला सिद्ध मन्त्र जपते हुए कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को पुनः कोई उल्लू

पकड़ कर ले आवें। इसे पकड़ कर एकान्त स्थान में बैठें। काँसे के पात्र में उल्लू को रख दें। पहले वाले मन्त्र का जप करते हुए इस उल्लू की चार परिक्रमाएँ लगायें अर्थात इस उल्लू के चारों तरफ गोलायी से चार चक्कर लगायें। इसके बाद सावधान होकर दाहिने हाथ से उल्लू को पुनः उठा लें। इस प्रकार करने से उल्लू सिद्ध हो जाता है। पुनः इसे काँसे के पात्र में रख दें तथा इसकी पूजा करें।

आप जब काँसे के पात्र में उल्लू को स्थापित करके पूजन करेंगे तो उसके नैनों से आँसू गिरेंगे। इस आँसुओं को बर्तन में एकत्र कर लें।

अब गोरोचन लायें। इसे गाय के घी में मिला करके आँसुओं वाले बर्तन में डाल दें। इसे अच्छी तरह मिलाने के लिये अंगुली से मथें। इस भाँति एक नायाब तान्त्रिक वस्तु का निर्माण हो जाता है। इसका प्रयोग अदृश्य होने के लिये किया जा सकता है। आप जब भी अदृश्य होना चाहते हों तो इस सामग्री को आँखों में काजल की भाँति लगायें। ऐसा करते ही आप अदृश्य हो जायेंगे। आप सभी को देख सकते हैं परन्तु आपको कोई नहीं देख पायेगा। जब आप अदृश्य शक्ति से बाहर आना चाहो अर्थात जब आप चाहें कि लोग आपको देख सकें तो गाय का ताजा मूत्र ले करके अपनी आँखें धो लेवें। इस भाँति पुनः आप दिखायी देने लग जायेंगे।

### उल्लू साधन के अन्य लाभ

जिस उल्लू को सिद्ध किया गया था उसी का खून ले करके अपनी अनामिका अंगुली से भी रक्त निकाल करके दोनों रक्तों को

एकत्र कर लें। यह एक सर्वश्रेष्ठ वशीकरण सामग्री बन जाती है।

१. जब भी आपको किसी राजा या अधिकारी से मनचाहा कार्य कराना हो तो इस रक्त का टीका अपने माथे में लगाकर के उनके पास जाइये। निश्चित सफलता मिलेगी।

२. इसी खून को शुद्ध शहद के साथ मिला करके आँखों में काजल की भाँति लगा लें। ऐसा करने से आकाश मण्डल में देवताओं को विचरण करते हुए तथा देवताओं के विमानों को उड़ते हुए स्पष्ट ही देख सकेंगे।

३. इसी उल्लू के कपाल को सुखा लें। जब यह अच्छी भाँति सूख जाये तो इसका सूक्ष्म चूर्ण कर लें। यह चूर्ण मारण तथा उच्चाटन के लिये सर्वदा सिद्ध रहा है। आप जिस शत्रु से परेशान हैं। शत्रु मानता ही न हो इस चूर्ण को शत्रु के घर में फेंक दें। इस क्रिया के प्रभाव से एक हफ्ते के भीतर आपका शत्रु दुःखी हो करके कहीं भाग जायेगा या अपने कुटुम्ब के साथ ही सदा सर्वदा के लिये नष्ट हो जायेगा।

४. उल्लू का सिर मैनसिल तथा हरताल को एकत्र करके कूट-कूट करके चूर्ण बना लें। इस चूर्ण की चुटकी जिस पर भी मारी जायेगी, वह नष्ट हो जायेगा। ध्यान यह रखना है कि उपरोक्त तीनों वस्तुएँ वजन में समान मात्रा की हों।

५. उल्लू का सिर, मनुष्य का रक्त, श्रोतांजन और अन्तरधूम को संग्रह करके मिला लें, यह सब चूर्ण करना होगा। इस चूर्ण को आँखों में काजल की भाँति लगाने से धरती के भीतर छुपे खजाने दिखायी देते हैं।

६. उल्लू की जीभ को धतूरे के रस में पीस करके जिसे भी खिला दी जायेगी, उसका विद्वेषण हो जायेगा। कुछ समय के उपरान्त स्वत: ही उच्चाटित हो करके कहीं भाग जायेगा।

७. उल्लू की जीभ वरांग का चूर्ण, मालती के फूल मिला करके चूर्ण कर लें। इस चूर्ण में गोरोचन मिला करके एक गोली सी बना लें। त्रिलोह का ताबीज बना करके गोली को इसमें भर के सम्भाल कर रख लें। जब आपकी इच्छा अदृश्य होने की हो तब इस ताबीज को मुख में धारण कर लें। ऐसा करने से आप लोगों को दिखना बन्द हो जायेंगे। जब आप इस ताबीज को मुख से निकालेंगे, तब फिर दिखने लगेंगे।

८. उल्लू की नाभि, हृदय और फेफड़ा को एकत्र करके सुखा लें और फिर सूक्ष्म चूर्ण बना लें। इस चूर्ण में गोरोचन मिला करके गोली बना लें। जब आप अदृश्य होना चाहें तब इस गोली को काजल की भाँति आँखों में लगा लें। इसके प्रभाव से आप अदृश्य हो जायेंगे।

अदृश्य होने के सभी प्रयोगों के साथ यदि नीचे दिया गया मन्त्र जप लिया जाये तो अदृश्य होने में कोई संशय नहीं रहता। सबसे पहले इस मन्त्र को एक सौ आठ बार जप करके सिद्ध कर लें।

**मन्त्र— ॐ नमो कालरात्रि त्रिशूल हस्त धारिणी**
**महिष वाहिनी नर कपाल माल शिरे**
**आगच्छ आगच्छ भगवति अन्तरिक्ष**
**करिणी मम सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा॥**

इससे पहले कि उल्लू साधन पर आगे विवरण प्रस्तुत करूँ, मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि उल्लू तान्त्रिक प्रयोगों में एक विशेष महत्व रखता है। इसके प्रयोग बहुत ही सरल किन्तु खतरनाक होते हैं। मन को मजबूती से पकड़ रखने वाले के लिये तो उल्लू साधन बच्चों के खेल की भाँति है। इसके प्रयोगों के मन्त्र भी एक सौ आठ बार जप करने से सिद्ध हो जाते हैं। यह विषय स्वतन्त्र है अर्थात कीलित नहीं है। अतः इन खतरनाक प्रयोगों को करने से पहले कई बार सोच विचार कर लें। यदि यह प्रयोग आवश्यक ही लगे तो किसी की देख-रेख में करें। नीचे उल्लू के कुछ अन्य प्रयोग बता रहा हूँ।

## पाताल दर्शन

किसी सोमवार या मंगलवार के दिन उल्लू की जीभ को गाय के घी में पका लें। जब यह जीभ अच्छी भाँति पक जाय तो एक ताँबे की ताबीज में भर करके सुरक्षित कर लें। जब आपको पाताल के दर्शन करने हों तब इस ताबीज को कण्ठ में धारण कर लें। जब तक यह ताबीज कण्ठ में रहेगा तभी तक पाताल के रहस्य दिखते रहेंगे। अतः आवश्यकता के अनुरूप ही इसका प्रयोग करें।

## सर्व ज्वर नाशक

उल्लू के नेत्रों को निकाल करके उसी उल्लू के रक्त को भी निकाल लें। इस रक्त में नेत्रों को घिस लें। इससे भोजपत्र के ऊपर रोगी का नाम लिख दें। इसी भोजपत्र को काले धागे में लपेट करके रोगी के कण्ठ में धारण करवा दें। इसके प्रभाव से रोगी का सभी भाँति का ज्वर नष्ट हो जाता है।

## वीर्य स्तम्भन

काम की अधिकता तथा शुक्र की क्षीणता आज अधिकता से पायी जा रही है, जिसके कारण युवती का शरीर शीघ्र टूट जाता है वह बुझी-बुझी रहती है रोग बढ़ जाने पर हिस्टीरिया आदि हो जाता है। इन रोगों से बचने के लिये पुरुष को अपने शुक्र को शक्तिकृत करना चाहिये। इस विषय में यह प्रयोग प्रभावशाली है। इसके प्रयोग से वीर्य स्तम्भित रहेगा। जिसके कारण अधिक समय तक भोग होने पर स्त्री संतुष्ट होगी।

पाताल दर्शन की भाँति ही यह प्रयोग करें। जब उल्लू की जीभ घी में अच्छी भाँति भुन जाय तो त्रिलोह के ताबीज में इस जीभ को भर करके रख लें। मंगलवार के दिन इस ताबीज को आदमी अपनी कमर में बाँध लें। इसके प्रभाव से मैथुन में तेजी आती है। वीर्य शीघ्र नहीं गिरता। यदि यह ताबीज बँधा ही रहे तो एक ही क्या दस-दस स्त्रियाँ भी सन्तुष्ट हो जाती हैं।

## पूर्वजन्म का परिचय

तन्त्र में उल्लू साधन एक विस्तृत तथा गोपनीय साधन है। जिसे कि प्रथम बार ही खुल कर स्पष्ट कहा जा रहा है।

प्रत्येक व्यक्ति का पूर्व जन्म होता है। इसे जान करके कोई लाभ नहीं होता, परन्तु मेरी समझ से यदि पूर्व जन्म का पता चल जाय तो एक लाभ अवश्य ही होता है। यदि आपको पूर्व जन्म की साधना तथा इष्ट का पता चल जाय तो आप इस जन्म में उसके द्वारा शीघ्र ही लाभ उठा सकते हैं। आगे जैसी आपकी इच्छा हो, कर सकते हैं।

पूर्व जन्म का विवरण जानने के लिये रविवार या गुरुवार के दिन पुण्य नक्षत्र हो तब उल्लू के नेत्र ले करके श्रोतान्जन में मिला करके नीचे दिये गये मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके अपनी आँखों में काजल की भाँति लगायेंगे तो उसे पूर्व जन्म का पूर्ण विवरण स्मरण हो जायेगा।

**मन्त्र— ॐ नमो भगवते रुद्राय, ॐ लमहे हुलु हुलु बिहुलं बिहुलं हर हरं पलरक्ष पूजतेयं कुमार्यो तु लोचने स्वाहा॥**

## मोहिनी प्रयोग

१. चार मासे उल्लू का रक्त लेकर काली गाय के पाँच सेर दूध में अच्छी भाँति मिला करके दूध से घी बनावें। चौदस वाले दिन यह घी जिस पुरुष या स्त्री को लगा दिया जायेगा वही पीछे-पीछे घर आकर आज्ञा का गुलाम बनता है।

२. उल्लू की आँख निकाल करके गाय का दूध लें और चन्दन की भाँति दूध में आँख को घिसें। इसके बाद आँख का मलीदा बनने पर गोली सी बना करके सुखा लें। यह गोली मुख में धारण करने से राजा का भी वशीकरण होता है।

३. उल्लू का पंजा पानी में घिस करके जिसे भी पिला देंगे वह जिन्दगी भर जी हजूरी करता रहता है।

४. मीठा तेल लेकर उसमें उल्लू की हड्डी डालकर पीसें। पीसने के बाद एक हंडिया में डाल करकें पृथ्वी में दबा दें। यह चालीस दिन तक दबी रहेगी। इस हंडिया को दबा कर प्रति दिवस आधी रात को इसके ऊपर काला आसन बिछा

करके एक सौ आठ बार निम्नलिखित मन्त्र पढ़ा करें।

**मन्त्र—ॐ ह्रीं ह्रीं हँ हँ हू फट् आग्रशिनीं क्लीं स्वाहा।**

इन्हीं चालीस दिनों के मध्य किसी काले रंग की वेश्या के यहाँ आग लगने पर उसके मुख्य द्वार का कोयला या उसका कोई वस्त्र लाकर काजल बनावें। यह काजल लगाकर जिसे देखोगे वही वशीभूत हो जायेगा।

## चितावर

प्राचीन समय से ही ऋषि गणों ने अपने अनथक प्रयास से प्रायः सभी वृक्षों के विज्ञान को समझा तथा उनका प्रयोग करते चले आ रहे हैं लेकिन यह दुर्भाग्य की ही बात है कि चितावर के विषय में कोई भी विशेष परिचय प्राप्त नहीं होता। अतः कहा जाता है कि चितावर विषय पर विवरण न प्राप्त होने से प्रायः कोई भी मनुष्य इससे परिचित नहीं है। जबकि तान्त्रिक प्रयोग में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है।

यह मान लेने में कोई भी शर्म की बात नहीं है कि इस वृक्ष या इसके विषय में प्रायः कोई भी विशेष नहीं जानता, हो सकता है कि प्राचीन समय में इसका परिचय मिला हो और इसकी भयानकता को देखते हुए इसे अन्धेरे में रहने को छोड़ दिया गया हो। वास्तव में यह वृक्ष बहुत खतरनाक है। तान्त्रिकों को तथा तन्त्र में रुचि लेने वालों को इसकी प्राप्ति के लिये इच्छा जागती ही रहती है। इसे प्राप्त करने का सबसे सरल तथा सीधा सा एक ही तरीका है जो कि नीचे दिया गया है।

आप एक घोंसला तलाश करें जो कि पहाड़ी कौवे का हो। इसमें ध्यान यही रखना है कि पहाड़ी कौवे के अलावा दूसरा कौवा लाभप्रद नहीं रहता। इस घोंसले में कौवे के कम से कम दो बच्चे तो होने ही चाहिये। जब आप इस अभियान को पूर्ण कर लें, तब आप दूसरा अभियान प्रारम्भ करें।

साइकिल के पहिये में जो तारें (स्पोक) लगी होती हैं उन्हें प्राप्त करें। प्लास कटर की सहायता से इसके एक-एक इंच के टुकड़े कर लें। अब आप नोज प्लायर की सहायता से प्रत्येक टुकड़े को जंजीर की भाँति गोल करके एक दूसरे के बीच फँसाते हुए एक फुट के लगभग लम्बी चेन बना लें। इस भाँति आपका दूसरा अभियान पूर्ण हो जाता है।

अब तीसरे अभियान के लिये कोयले दहका कर लाल कर लें। जब यह कोयले अच्छी भाँति दहकने लगें तो आप बनायी गई जन्जीर को इन पर डाल दें। कुछ ही क्षणों में जंजीर लाल हो जायेगी। जब आपकी जन्जीर लाल हो जाय तब किसी सन्डासी या प्लास की सहायता से जन्जीर को उठा करके मोबिल ऑयल में डुबा दें। ठण्डी होने पर जन्जीर निकाल करके सम्भाल लें।

अब आपका चौथा अभियान प्रारम्भ होता है। इस जंजीर को तथा थोड़ी-सी मोटी तार लेकर मुख्य कार्य के लिये प्रस्थान करें। अब आपको उसी घोंसले तक आना है। यदि आप वृक्ष पर चढ़ना जानते हों तो स्वयं चढ़ें अन्यथा किसी के द्वारा यह प्रयोग करावें, परन्तु स्मरण रखें कि गोपनीयता अनिवार्य है।

कौवे के घोंसले में दोनों बच्चों को एकत्र करके जन्जीर से

इस भाँति बाँधें कि बच्चे स्वयं मुक्त न हो सकें। यदि आप चाहें तो जन्जीर बड़ी भी बना सकते हैं। बच्चों को बाँधने के बाद जन्जीर से तार लपेट करके वृक्ष के तने में लपेट दें। आपके इस कार्य से बच्चे चिल्लाना शुरू कर देंगे। इस भाँति आपका यह अभियान भी पूर्ण हो जाता है और इसके साथ ही अगला अभियान कौवे के द्वारा पूर्ण होता है।

बच्चों की चिल्लाहट सुन करके या अपने समय पर बच्चों को भोजन देने के लिये कौवा वापस आता है तो अपने बच्चों की दयनीय स्थिति को देखकर जन्जीर तोड़ने का, खोलने का प्रयास करता है, जब वह जन्जीर को तोड़ या खोल नहीं पाता तब वह वायु मण्डल में उड़ जाता है। आपको इन्तजार करना होगा। यह कह पाना असम्भव है कि कौवा दस मिनट में आयेगा या दस घण्टे में परन्तु आयेगा तो अवश्य ही। यही कहा जा सकता है।

जब कौवा आयेगा तब उसकी चोंच में एक डण्डी दबी हुई होगी। सावधान हो जाइये क्योंकि यही चितावर की लकड़ी है। यह डण्डी यदि घोंसले तक चली गई तो आपको थोड़ी मुश्किल हो जायेगी अत: प्रयास करें कि पत्थर आदि मार करके कौवे को गिरा लें या कौवे के मुख से वह डण्डी गिरा लें। यह सभी कार्य सावधानी तथा तीव्रता के हैं। क्योंकि कौवे के गिरते ही या डण्डी के गिरते ही, जमीन पर गिरी पड़ी अनगिनत लकड़ियों में यह चितावर मिल जाने का खतरा है अत: यदि आप में सावधानी तथा तीव्रता न हो तब कौवे को घोंसले पर जाने दीजिये।

कौवा घोंसले पर जाकर वह डण्डी जगह-जगह जन्जीर के

ऊपर रखेगा और जन्जीर टूटती जायेगी। यह क्रिया तब तक कौवा करता ही रहेगा, तब तक कि बच्चे आजाद न हो जायें। बच्चों के आजाद होने पर यदि बच्चे उड़ सकते हों तो कौवा बच्चों को लेकर उड़ जायेगा। यदि बच्चों के पंख छोटे होंगे या पंख होंगे ही नहीं तो बच्चे वहीं रहेंगे। आप अब सावधान हो जायें। शीघ्रता आपको हानि दे सकती है क्योंकि कौवा आस-पास ही रहेगा। आप घोंसले को दृष्टि से ओझल न होने दें। कुछ समय के बाद आप आखिरी अभियान पूर्ण करके चितावर की लकड़ी प्राप्त कर सकते हैं।

आप वृक्ष पर चढ़ें। आपको जन्जीर के टुकड़े-टुकड़े हुए मिलेंगे जबकि आपने जन्जीर को टैम्पर कर दिया था। अब आप घोंसले की भीतर बिखरी हुई डण्डियों को बटोर लें। घोंसले में एक-दूसरे से उलझी हुई डण्डियाँ तो घोंसले का ही हिस्सा है घोंसले के भीतर आपको बिखरी हुई डण्डियाँ नहीं मिलेंगी। बल्कि एक-दो डण्डियाँ मिलेंगी वह उठा लें। यदि आपकी समझ में न आये तो घोंसला ही उठा लें।

यदि घोंसले में एक ही डण्डी मिलती है तो वह उठा लें। आपका कार्य आसान हो जायेगा। यदि ऐसा नहीं होता तब आप घोंसले को लेकर किसी तालाब के पास जायें। किसी नदी के पास नहीं। क्योंकि नदी के बहाव के साथ यह लकड़ी भी बह जायेगी। तालाब के पास जाकर घोंसले की एक-एक डण्डी को धैर्य के साथ पानी में डालते जायें। सारे घोंसले में से कोई एक डण्डी पानी में तेजी के साथ साँप की भाँति तैरती हुई आगे

बढ़ेगी। सावधानी से इसे उठा लें। यह चितावर की लकड़ी है। यह लकड़ी पानी में साँप की गति की भाँति दौड़ती है किन्तु साँप नहीं बनती। क्योंकि यह लकड़ी मायावी नहीं है। अभी तक इसे साँप बनते देखा ही नहीं गया। यदि कोई कहता है तो उसके ज्ञान को आप स्वयं परख सकते हैं। स्मरण रहे कि अपने को विद्वान प्रमाणित करने के लिये भाषणकर्ता तो अनेकों मिल जायेंगे परन्तु प्रयोगकर्ता यदा-कदा ही मिल पाते हैं। यही हमारे तन्त्र-शास्त्र की विडम्बना रही है। कहा बहुत, लिखा बहुत, परन्तु किया कितना? इसे भाषणकर्ता स्वयं ही जानता है।

चितावर की लकड़ी स्वयं में ही सिद्धि समेटे हुए है अतः इसे कभी भी प्राप्त किया जा सकता है। इसे प्राप्त करने की विधि उपरोक्त ही रहेगी।

यह भी देखा गया है कि लकड़ी लोहे को काट देती है अतः आप तालाब वाले कार्यक्रम के स्थान पर यह काम भी कर सकते हैं।

किसी लोहे की प्लेट पर घोंसले की एक-एक डण्डी डाल करके तीन मिनट तक प्लेट पर रखें, फिर हटाते रहें। जिस डण्डी के डालने के तीन मिनट में ही लोहे की प्लेट कट जाय तो उसी डण्डी को चितावर की लकड़ी समझ कर संग्रह कर लें। इस भाँति आपके हाथ तन्त्र जगत की एक अनमोल वस्तु आ जायेगी।

चितावर की लकड़ी का तान्त्रिक प्रयोग केवल मारण तथा विद्वेषण कार्य के लिये सफलता से किया जाता है।

किसी शनिवार के दिन लोहे की प्लेट पर बबूल के काँटे से

कौवे के रक्त की स्याही बना करके दो मित्रों का नाम लिख लें। इसके बाद उसके ऊपर खून के कुछ छींटे मारें। धूप, दीप से उस प्लेट की पूजा करें, चितावर की लकड़ी की भी पूजा करें। इसके बाद वह चितावर की लकड़ी उन दोनों लिखे नामों के मध्य में रख दें। एक लोटे में पानी लेकर उसमें बकरे का थोड़ा सा रक्त मिला दें। लगभग तीन मिनट के बाद वह लोहे की प्लेट कट जायेगी अर्थात वह लिखे हुए नाम अलग-अलग प्लेटों पर अलग-अलग हो जायेंगे। यह होते ही चितावर की लकड़ी को उठा करके उन प्लेटों के मध्य लोटे में भरा खूनी जल धीरे-धीरे गिराते हुए अर्घ्य दे दें। अब आप देखेंगे कि उस नाम वाले दोनों मित्र एक-दूसरे को खा जाना चाहते हैं। यह प्रयोग शीघ्र फलदायी तथा स्थायी है अत: जरा से क्रोध में आकर यह कर्म नहीं करना चाहिये। इसे खतरनाक विद्वेषण कर्म कहते हैं। सम्भवत: यह प्रयोग इससे पहले आपने कभी नहीं देखा होगा।

चितावर की लकड़ी से मारण कर्म भी किया जाता है। इसे काला जादू भी कह सकते हैं और इस प्रयोग को भी आप पहली बार ही देख रहे होंगे।

एक लोहे की प्लेट को पुरुषाकृति में कटवा लें। किसी सुनार से पुरुष के सभी अंग यथास्थान अंकित करवा लें। मेरी पुस्तक मन्त्र रहस्य में दिये गये प्राण प्रतिष्ठा के मन्त्र को पढ़ करके उस तस्वीर में अपने शत्रु की प्राण प्रतिष्ठा कर लें। काले उड़द लेकर बकरे के रक्त से रंग लें और उस प्रतिमा के ऊपर फैला दें। अब चितावर की लकड़ी को जिस अंग पर तीन मिनट

के लिये खड़ा करेंगे, वहीं छेद हो जायेगा, इसके प्रभाव से शत्रु के उस अंग में पीड़ा होगी और धीरे-धीरे वह अंग संज्ञा शून्य होकर मृत हो जायेगा। आप जानते हैं कि हृदय जीवन का मुख्य स्थान है अतः हृदय का छेदन करने से शत्रु मर जायेगा। मेरी राय है कि यह प्रयोग न करें।

कुल मिला करके आप समझ गये होंगे कि इस लकड़ी के प्रयोग केवल अशोभनीय कार्यों के लिये हैं। पर हाँ! एक बात और! यह लकड़ी अपने मालिक की सदा रक्षा करती है। मेरा विचार है कि यह एक ऐसा पेड़ है जिस पर मृत आत्मायें निवास करती हैं।

## हत्था जोड़ी

तन्त्र-शास्त्र तथा तन्त्र का प्रयोग करने वालों के लिये यह एक महत्वपूर्ण वनोषधि है। यह प्रायः पन्सारियों के पास, राशि के पत्थर बेचने वालों के पास तथा तान्त्रिक सामान बेचने वालों के पास मिल ही जाती है। इस महत्त्वपूर्ण वस्तु के विषय में अभी तक सही प्रयोग शायद प्रकाश में ही नहीं आया।

हत्था जोड़ी को करजोड़ी, हस्तजोड़ी और हस्ताजूड़ी के नाम से जाना जाता है। उर्दू में इसे 'बखूर-इ-मरियम' कहते हैं। ईरान में इसे 'चुबक उशनान' कहते हैं तथा लेटिन में 'सायक्लेमेन परसीकम' कहा जाता है।

इस वनोषधि की उत्पत्ति ईरान में होती है। पिछले कुछ वर्षों में भारत भी इसके पर्याय मिले हैं। इस वनोषधि के पत्ते हरे रंग के

होते हैं तो दूसरी तरफ अर्थात पत्ते के नीचे का हिस्सा सफेद होता है। इस सफेद हिस्से पर रोम होते हैं। इसके ऊपर गुलाब की भाँति पुष्प आता है। कहीं-कहीं पर पुष्प में नीलाहट भी पायी जाती है। इस वनोषधि की उत्पत्ति झाड़ की छाया में तथा आर्द्र जमीन पर होती है। इसकी जड़ गोल होती है और रंग काला होता है। इसी जड़ में हत्था जोड़ी बनती है। यह निर्माण कार्य कुदरती होता है। धूर्त तान्त्रिक लोग इसे पीस करके चूर्ण बना लेते हैं और अपने दुकानदारी चलाने के लिये किसी व्यक्ति विशेष को किसी भी भाँति यह चूर्ण खिला देते हैं। इस चूर्ण के प्रभाव से व्यक्ति को चक्कर आने लगते हैं। ठण्डा पसीना छूटता है, दौरे पड़ने लगते हैं तथा बरबस ही जम्भाइयाँ आने लगती हैं। इस स्थिति को भूत लग गया कह करके ढोंगी तान्त्रिक अपनी दूकानदारी चलाते हुए तन्त्र को तथा तान्त्रिकों को बदनाम करते हैं।

**प्रयोग**

प्रसव को सुगमता से करने के लिये हत्था जोड़ी को चन्दन की भाँति पीस करके प्रसवा की नाभि पर या पूर पेट पर ही लेप दें। इसके प्रभाव से बच्चा आराम से पैदा हो जाता है।

गर्भपात करने के लिये इसे पीस कर खाने से गर्भ का बच्चा गिर जाता है परन्तु आगे की सावधानी आप देखें कि इस दवा का बाकी लक्षण आपको हिस्टीरिया की रोगिणी न बना दे। वैसे इस भाँति के लक्षण कुछ ही दिन तक ठहर पाते हैं।

पेशाब का बन्द हो जाने पर इसे जल के साथ घिस करके वस्ति के ऊपर लगावें। पेशाब शीघ्र निष्कासित होगा।

कब्ज को दूर करने के लिये पेट के ऊपर इसका प्रलेप करना लाभदायक रहता है।

मासिक धर्म के लिये इसके चूर्ण की पोटली बना करके योनि छिद्र में रखें। इसके प्रभाव से शीघ्र ही साफ तथा शुद्ध मासिक स्राव हो जाता है।

पीलिया रोग को दूर करना विकट रहता है। इस रोग को समूल नष्ट करने के लिये हत्था जोड़ी का चूर्ण करके शहद के साथ खिला देवें। इसके बाद गर्म कपड़े औढ़ा देवें। शीघ्र ही उसे पसीना आयेगा। यह पसीना अत्यधिक होगा तथा इसका रंग भी पीला होगा। इसके बाद तौलिये से बदन साफ कर दें। इस भाँति यह जटिल रोग समूल नष्ट हो जाता है।

इस सबके अलावा तन्त्र में भी इसके बेहतरीन प्रयोग होते हैं।

पारे के शिवलिंग की बड़ी महिमा है। इसे बनाने के लिये हत्था जोड़ी प्रथम आवश्यक वस्तु है। आप शुद्ध पारा लाकर खरल में डालें तथा हत्था जोड़ी का चूर्ण भी खरल में डालें। अब इन्हें एक साथ खरल करें। इस भाँति करने से पारा मर जाता है परन्तु गीला रहता है। इस गीले पारे को मनचाही शक्ल दे दें। इसके बाद इसे गलगल में रख दें। थोड़े अन्तराल से यह पारा सूख जायेगा।

हत्था जोड़ी से वशीकरण भी किया जाता है। इसे ताबीज में भर करके दाहिनी भुजा पर धारण करें। इससे प्रबल वशीकरण होता है।

हत्था जोड़ी कहने से ही यह प्रायः प्रत्येक स्थान पर उपलब्ध हो जाती है। यह सस्ती ही होती है। सम्भवतः इसी कारण इसकी नकल नहीं बनायी गयी।

## सम्हालू

सम्हालू नामक यह भी एक वनस्पति ही है और प्रायः वनों में सर्वत्र पायी जाती है। इसे सिन्दुवार, निर्गुण्डी, सिद्धक, अर्थ सिद्धक, भूत केशी, इन्द्राणी आदि भी कहा जाता है। इसका वृक्ष झाड़ीदार होता है। इस पर तीन या पाँच पत्ते आते हैं। मुख्यतः पाँच ही पत्ते होते हैं। इसके पत्ते अरहर की भाँति सफेद रंग के रोमश होते हैं। जाड़े के अन्तिम काल में तथा वसन्त में यह वृक्ष सभी पत्ते छोड़ देता है।

**प्रयोग**

मधुर स्वर करने के लिये इस वृक्ष की जड़ का चूर्ण करके गर्म पानी से कुछ दिन तक खाने पर स्वर किन्नरों की भाँति हो जाता है।

यदि दुबला-पतला तथा कमजोर व्यक्ति इस वृक्ष की जड़ को पीस करके चूर्ण करे। इसके बाद शुद्ध घी के साथ प्रतिदिन ग्रहण करे तो व्यक्ति शीघ्र ही मोटा हो जाता है।

यदि रक्त दूषित हो गया हो तो इसकी जड़ के चूर्ण को शहद के साथ खायें। इसके प्रभाव से रक्त शुद्ध होकर खाज-खुजली आदि रोग समाप्त हो जाते हैं।

इस वृक्ष की जड़ के अनेकों प्रयोग हैं। इसकी जड़ का चूर्ण

करके यदि बकरी के मूत्र के साथ प्रतिदिन खाया जाय तो निम्नलिखित चमत्कारी प्रभाव देखने को मिलते हैं।

सात दिन खाने से नाखून, बाल तथा दाँत सभी के सभी गिर जाते हैं और पुनः उग आते हैं।

इक्कीस दिन तक खाते रहने और ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन करने पर चमत्कारी योग साधना की सिद्ध स्वयं ही प्राप्त हो जाती है। इस सिद्धि के प्रभाव से जल का तथा शस्त्र का स्तम्भन होता है अर्थात युद्ध में उसे कोई हथियार चोट नहीं पहुँचाता तथा जल में उतरने पर जल में डूबता भी नहीं है।

चालीस दिन तक निरन्तर इसका सेवन करने तथा पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करने मात्र से ही आकाश मार्ग में उड़ने की शक्ति प्राप्त हो जाती है।

इस वनोषधि की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इस वृक्ष की जड़ को धारण करने मात्र से तथा घर में रखने मात्र से ही सभी भाँति से सुख शान्ति बनी रहती है। तन्त्र के लिये सम्हालू की जड़ का यह एक विशेष योगदान है। मेरी समझ के अनुसार इसका इसका प्रयोग हानि रहित है अतः इसे प्रयोग करके लाभ उठाना ही चाहिये।

## नागदौन

यह एक सजावटी पौधा है। इसे प्रायः घरों में, सजावट के हेतु लगाया जाता है। इसके गुणों से अन्जान व्यक्ति इसके लाभ से वंचित ही रह जाता है।

नागदौन को नागदमनी, नागपुष्पी, महायोगेश्वरी, वनकुमारी तथा नागदमन भी कहते हैं। यह तलवार की भाँति हरे रंग का सीधा चलता है। इसके पत्ते पर एक इन्च की दूरी पर सफेद रेखायें होती हैं। यह एक फुट से तीन फुट तक लम्बा हो जाता है। इसकी जड़ का ही प्रयोग किया जाता है।

नागदौन की जड़ को ताबीज की भाँति कण्ठ में धारण करने से बुद्धि बढ़ती है, सभी स्थानों पर मान-सम्मान मिलता है, युद्ध में विजय मिलती है, कोई भी ग्रह हानि नहीं पहुँचाता, भूत-प्रेत की बाधा नष्ट हो जाती है, धन का लाभ होता है आदि-आदि अनेकों लाभ होते हैं।

इस बूटी के अन्य प्रयोग निम्नलिखित हैं—

## दरिद्रता नाशक

नागदौन की जड़ को विधिवत प्राप्त करके स्वर्ण के ताबीज में भरें और धन स्थान में रखें। लेन-देने का कार्य करने वाले इसकी जड़ की कलम बना कर कागजों पर इससे हस्ताक्षर किया करें। लक्ष्मी प्राप्ति का यन्त्र भी इसी कलम से लिखा जाय तो सब भाँति की दरिद्रता का अन्त हो जाता है।

## वशीकरण

नागदौन की जड़ के कुछ मनके बना करके एक-एक दाना रक्त धागे के द्वारा दोनों बाहों पर, अंगूठी की जगह पर, दोनों कानों में धारण करने पर प्रबल वशीकरण होता है। ऐसे व्यक्ति की देह से दुर्बलता उसी भाँति भाग जाती, जिस भाँति वन में सिह को देखकर अन्य जन्तु भाग जाते हैं।

### अकाल मृत्यु

नागदौन की जड़ को चन्द्र ग्रहण के शुभ अवसर पर प्राप्त करके चाँदी के ताबीज में नीले सूत्र के द्वारा कण्ठ में पहनने से असमय में होन वाली मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है। इस ताबीज के प्रभाव से कोई भी संकट उत्पन्न नहीं हो पाता।

### रोग नाश

नागदौन की जड़ को गाय के दूध के साथ सेवन करने से रोगों का अन्त होकर आयु की वृद्धि होती है।

## तगर

यह एक वृक्ष जातीय पौधा है तथा इसका प्रयोग यन्त्र लिखने की सामग्री में अष्टगन्ध बनाने के हेतु किया जाता है। यह प्रायः प्रत्येक स्थान पर तगर नाम से ही पंसारियों से मिल जाता है। यह काले रंग का होता है। इसे चूर्ण करके खाया भी जाता है।

तगर को चौकोर काट करके ताबीज की भाँति गले में पहनने से मस्तक रोग, मृगी, उन्माद, भूत-प्रेत, शकिनी, डाकिनी आदि के दोष दूर हो जाते हैं।

## मेंहदी

इसका प्रयोग प्रायः सभी मंगलमय कार्यों के समय स्त्रियों के हाथ रंगने के लिये किया जाता है। यह प्रायः प्रत्येक स्थानों पर उपलब्ध है। इसमें भीनी-भीनी खुशबू होने के कारण इसको शौकिन लोग अपनी क्यारियों में भी लगाते हैं।

### प्रयोग

इसका प्रभाव ठण्डा होने के कारण इसका प्रयोग जले में करते हैं। इसके पत्तों से बना हुआ तेल सिर को ठण्डा रखता है, सिर दर्द दूर करता तथा बालों को काला करते हुए गिरने से बचाता है। इसकी टहनी की छाल का चूर्ण रक्त का शोधन करता है तथा पथरी को समाप्त करता है।

मेंहदी की जड़ तथा बीजों की ताबीज में भर करके कण्ठ में धारण करने से दिमाग में आने वाला क्रोध समाप्त हो जाता है। सदा तबियत प्रसन्न रहती है। इसके धारण करने से ज्वर का नाश हो जाता है। समस्त ग्रहों के दोष समाप्त हो जाते हैं। भूत-प्रेतादि के दोष होते ही नहीं, यदि हो गये हों तो समाप्त होकर शरीर सुख मिलता है।

## कौड़ी

इससे प्रायः सभी लोग परिचित हैं। यह भारत में सभी जगह पायी जाती है। इसे कपर्दक, कबड़ी तथा अंग्रेजी में कोबरीज कहते हैं। यह सफेद, लाल तथा पीली अर्थात तीन रंगों में पायी जाती है जबकि इसका मुख्य रंग सफेद ही रहता है। यह भी अपने आप में अनेकों गुण रखती है।

### प्रयोग

नेत्रों में जाला पड़ गया हो या नेत्रों की कार्य क्षमता कम हो गयी हो तो कौड़ी को गुलाब जल से घिस करके नेत्रों पर लगावें।

चर्म रोग हो गये हों तो कौड़ी को नौसादर के साथ पीस

करके चर्म रोग पर लगावें।

सफेद और लाल कौड़ी का प्रभाव शीतल होने के साथ-साथ जख्म भी भरने का है अतः इसे पीस करके जख्म आदि पर भी प्रयोग करते हैं।

पीली कौड़ी का प्रयोग रसकर्म में सफलता के साथ करते हैं।

तान्त्रिक प्रयोगों में वह कौड़ी लेते हैं जिस पर काले रंग के बिन्दु हों तथा काली रेखायें पड़ी हों इस भाँति की कौड़ी थोड़ी सी तलाश करने पर सरलता से मिल जाती है। इस कौड़ी को प्राप्त करके काले धागों के द्वारा बच्चों के गले में डालने से समस्त बाल ग्रहों का तथा बालारिष्टों का नाश हो जाता है। यह कौड़ी अनेकों चमत्कार प्रस्तुत करने में सक्षम है।

जो कौड़ी डेढ़ तोले के वजन की होती है, वह अति उत्तम होने के कारण शुभता तथा लाभ शीघ्र प्रस्तुत करती है। जो कौड़ी एक तोले के वजन वाली हो, वह मध्यम मानी जाती है तथा इससे कम वजन की कौड़ी के लाभ प्रायः शुभ नहीं रहते।

## काली हल्दी

जब हम हल्दी की बात करते हैं तो स्वभावतः ही लोग इसे समझ जाते हैं क्योंकि कोई घर ऐसा नहीं होगा, जहाँ पर इसका प्रयोग न होता हो परन्तु मैं तो काली हल्दी की बात करूँगा। क्योंकि तन्त्र साधनाओं में इसी का अधिक प्रयोग किया जाता है।

प्रायः लोगों के पत्र आते हैं कि साहब काली हल्दी मिलती ही नहीं। कुछ पत्रों के अनुसार उन्हें काली हल्दी तो मिली परन्तु

कहे गये लाभ दृष्टिगोचर नहीं हुए। आखिर यह काली हल्दी है क्या?

माना जाता है कि पीली हल्दी में ही कभी-कभी काली हल्दी मिल जाती है। परन्तु यह काली हल्दी नहीं होती। हल्दी के खेत से खर-पतवार को खुरपी से काटते समय किसी-किसी हल्दी की गाँठ पर खुरपी लग जाती है। जिस कारण, उसका पोषण बन्द हो जाता है। अतः वह सूख जाती है। उसे काले रंग में प्राप्त किया जाता है। परन्तु इससे प्रभाव नहीं मिलते। जिसके कारण प्रयोगकर्ता निराश होकर तन्त्र-शास्त्र को ही दोषी मानने लगता है। इस सारी मेहनत तथा निराशा का कारण काली हल्दी को न समझ पाना है। आइये! मैं आपको बताता हूँ कि काली हल्दी क्या है?

यह क्षुप जाति की वनोषधि है। इसके पत्ते हल्दी के पत्तों की भाँति ही होते हैं। इसकी जड़ में आँबा हल्दी की भाँति गाठें लगती हैं। यह गाँठ काले रंग की तथा भीतर से हल्के पीले रंग की होती है। जिस खेत में हल्दी की खेती की जाती है, वहाँ पर यह स्वतः ही उग आती है। इसकी जड़ से कपूर की महक आती है। काली हल्दी के पौधों पर गुच्छेदार पीले रंग का फूल खिलता है। इस फूल से फली भी बनती है जो कि गोलाकार होती है, पतली होती है तथा चिकनी होती है। इसी पौधे की जड़ में लगी गाँठों को काली हल्दी कहते हैं। काली हल्दी को कचूर कहते हैं। यह प्रायः सभी पन्सारियों से मिल जाती है अतः व्यर्थ भटकन बन्द करके पन्सारी से खरीद लेनी चाहिये। प्रायः बंगाल में यह

अधिक पायी जाती है।

यह चेहरे का रंग साफ करके कील मुँहासे दूर करती है। शायद इसीलिये बंगाल में इनका उबटन बना करके प्रयोग किया जाता है। टर्की के रहने वाले भी स्नान करने के पश्चात इसका उबटन प्रयोग करते हैं। कम्बोडिया में आक्षेप से पीड़ित बालकों के शरीर पर इसका प्रलेप करके लाभ उठाया जाता है। इसके धारण करने तथा सेवन करने से मृगी रोग भी ठीक हो जाता है। इसे धारण करने से ग्रह जनित बाधा समाप्त हो जाती है। जब तक इसे पहना रहा जायेगा तब तक कोई भी ऊपरी शिकायत नहीं होती। तान्त्रिक शिकायत नहीं होती। तान्त्रिक सिद्धि प्राप्त करने के इच्छुक उपासक तथा साधक चन्दन के टीके के स्थान पर काली हल्दी का टीका लगाते हैं। इस टीके के मध्य में रक्त का सितारा लगाते हैं। यह रक्त प्रायः साधक लोग अपनी ही कनिष्ठिका से लेते हैं। यह टीका अपने तथा अपने आराध्य के माथे पर लगाते हैं। अक्सर इसके लाभ को प्रत्यक्ष देखा गया है।

## कस्तूरी

तन्त्र प्रयोगों में कस्तूरी का एक विशेष स्थान है और ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं होगा जो कि इसके विषय में जानता न हो परन्तु यह असली मिलती ही नहीं। इसी कारण तन्त्र प्रयोग करने पर इससे मिलने वाले लाभ प्रश्न ही बने रहते हैं।

कस्तूरी प्रायः सर्वत्र उपलब्ध है और कस्तूरी कहने मात्र से पन्सारी दे देता है। यह असली है या नकली? यह प्रश्न बना ही

रहता है क्योंकि इसके विषय में बहुत अधिक किसी को मालूम नहीं रहता और न ही कोई बताता है।

कस्तूरी एक विशेष प्रकार के हिरण के निश्रावववाही का सूखा हुआ रस है। यह विशेष प्रकार का हिरण लगभग आठ हजार फुट की ऊँचाई पर पाया जाता है। मुख्यत: यह मृग हिमालय, दार्जिलिंग, नेपाल, आसाम, चीन तथा सोवियत देश में अधिकता से पाया जाता है। कस्तूरी नामक कीमती औषधि केवल पुरुष जाति के हिरण में ही बनती है। इसकी महक की दीवानी होकर स्त्री जाति की हिरणी पुरुष हिरण के पास आकर दीवानेपन में उससे विषय-भोग करती है। कस्तूरी का पूर्ण निर्माण हो जाने के पश्चात हिरण के शरीर में लगभग एक महीने तक ही रहती है। इसी एक महीने में हिरण को पकड़ करके कस्तूरी प्राप्त की जाती है। इस एक महीने के पश्चात कस्तूरी प्राप्त नहीं होती। हिरण के बच्चों में कस्तूरी नहीं होती। इनके बच्चे जब दो बर्ष के हो जाते हैं तब लगभग डेढ़ से तीन तोला तक कस्तूरी बनती है। यह कस्तूरी इस हालत में होती है कि इसका प्रयोग नहीं किया जाता। जब हिरण पूरी तरह जवान हो जाता है तब इसमें लगभग डेढ़ औंस से लेकर कम-से-कम दो औंस तक कस्तूरी पायी जाती है। इस विवरण के अलावा भी प्रत्येक हिरण में एक से डेढ़ इन्च के व्यास वाली गोल या चौकोर थैली में बन्द होती है। इस थैली के ऊपर का धरातल कुछ चिकना तथा चपटा होता है। इसी पर कुछ सख्त बाल होते हैं। इस थैली का थोड़ा-सा मुख रहता है। कुछ विद्वानों का विचार है कि कस्तूरी की ही भाँति का कुछ है जो

अन्य जानवरों से भी प्राप्त किया जाता है। जैसे कि—

एक साँड होता है जिसे कि ओबीबस मस्केटस कहते हैं। इस साँड के सारे शरीर से कस्तूरी की महक आती है।

एक बत्तख होती है जिसे कि अनास मस्काटा कहते हैं। इसमें कस्तूरी की तीव्र महक पायी जाती है।

एक बकरा होता है जिसे कि कपरा आइवेक्स कहते हैं। इसके रक्त से कस्तूरी की महक आती है।

एक और हिरण होता है जिसे कि एन्टीकोप डोर्क्स के नाम से जानते हैं। इसके रक्त से कस्तूरी की तीव्र महक आती है।

एक मगरमच्छ होता है जिसे कि क्रोको डिप्लस वेल्गेरिस कहते हैं। इसके शरीर से तो कस्तूरी की शानदार महक आती है।

उपरोक्त विवरण से आप समझ रहे होंगे कि यदि इनका रक्त सुखा करके बेचा जाय तो कस्तूरी कही जा सकती है जबकि कस्तूरी के अन्य गुण इनमें नहीं होते हैं।

बाजार में मुख्यतः तीन भाँति की कस्तूरी आती है—

१. रूस की कस्तूरी,

२. आसाम की कस्तूरी (इसे कामरूप कस्तूरी भी कहते हैं),

३. चीन की कस्तूरी।

### आइये कस्तूरी पहचाने

एक गिलास में पानी भर करके कस्तूरी का एक दाना इसमें गिरा दें। यह दाना पानी में जाकर गिलास के तले पर जाकर बैठ जाये और गले या ढीला न हो तो कस्तूरी को असली समझें।

एक अंगीठी में कोयले दहकायें। कुछ अंगारे लेकर कस्तूरी

का एक दाना अंगारे के ऊपर डाल दें। यदि यह कस्तूरी का दाना जलकर राख हो जाये तो कस्तूरी नकली जानना चाहिये। यदि कस्तूरी का दाना अंगारे पर पिघल करके बुलबुले छोड़े तो कस्तूरी को असली जानें।

एक धागे को हींग से भिंगो करके तर कर लें। कस्तूरी को लेकर इसके बीच से धागा गुजार करके निकालें। यदि हींग की महक बनी रहे तो कस्तूरी को नकली समझें। मेरे विचार से इस प्रयोग को करने से असली कस्तूरी की परख नहीं होगी। क्योंकि कस्तूरी जब बाजार में बिकती है तब अपनी महक खो देती है और जब महक न होगी तो हींग की महक को मारेगा कौन? यदि आपको कोई महकती हुई कस्तूरी दे तो आप यह प्रयोग करके असल नकल का भेद जान सकते हैं।

एक पदार्थ होता है जिसका कि नाम ट्रिनीट्रोब्यूटिल टोलबल है। इस पदार्थ की महक कस्तूरी की भाँति होती है और यह महक अधिक समय तक टिकती है।

कस्तूरी भारी होती है।

कस्तूरी छूने में चिकनी होती है।

कस्तूरी कपड़े में रखने से कपड़ा पीला हो जाता है।

कस्तूरी प्राप्त करने के लिये हिरण को मार करके उसकी नाभि काट लेते हैं। इस हिस्से को कस्तूरी नाभा कहते हैं।

कस्तूरी मक्का के चून की भाँति होती है। यह तिलों की भाँति भी होती है। यह कुलथ के बीज की भाँति भी होती है। यह मटर के दाने के भाँति भी होती है। कहीं-कहीं पर यह इलायची

के दानों की भाँति पायी जाती है।

कस्तूरी को तन्त्र प्रयोगों में अनगिनत कार्यों में लिया जाता है। मन्त्र लिखने के लिये इसकी परम आवश्यकता पड़ती है।

## सियार सिंगी

प्रत्येक जंगल में सियार पाये जाते हैं और सभी लोग इससे परिचित भी हैं। प्राय: यह देखने में आया है और प्राणी विज्ञान के विद्वानों की भी यही राय है कि सियार के सींग नहीं होते। परन्तु कुछ ऐसा है जो सियार सिंगी के नाम से तन्त्र में प्रयोग किया जा रहा है। वास्तव में यह आश्चर्य का विषय है कि जब सियार के सींग ही नहीं होते तो सियार सिंगी क्या है?

हाँ! यह सत्य है कि सियार के सींग नहीं होते और यह भी सत्य है कि सियार सिंगी होती है। इसकी प्राप्ति सियार से ही होती है।

तन्त्र-शास्त्रों में अनेकों रहस्य छुपे हुए हैं। इन्हीं छुपे हुए रहस्यों में से एक रहस्य है 'सियार सिंगी'। इसे प्राप्त करने के लिये सियार की हत्या करनी पड़ती है।

आप सभी जानते हैं कि सियार मुँह ऊपर उठा करके चिल्लाता है। यद्यपि इसके सींग नहीं होते फिर भी जब यह पूरे वेग से चिल्लाता है तो इसके सिर पर एक हड्डी-सी उभर आती है और जब यह चिल्लाना बन्द करता है तब यह हड्डी नदारत हो जाती है। इसी हड्डी को सियार सिंगी कहते हैं। अब आप समझ गये होंगे कि सियार सिंगी को प्राप्त करने का अवसर कितना कम

तथा कितना खतरनाक है।

सियार सिंगी प्राप्त करने के लिये एक लम्बी तलवार लेकर वन में जाना होगा और किसी ऐसे स्थान पर जा छिपना होगा जहाँ पर कि सियार आ करके मौज-मजे करते हों। जब आप देखें कि सियार आकर चिल्लाने लगा है बस उसके चिल्लाते ही उसकी गरदन पर पूरी ताकत से तलवार चला दें। स्मरण यह रखना है कि गरदन एक ही वार में कट जाय। इस सारे कार्यक्रम में सियार को चिल्लाते हुए काटना है। यदि चिल्लाना बन्द कर दे तो अपना यह कार्यक्रम निष्फल समझ लें। गरदन कटने के बाद सिर फोड़ करके यह उभरी हुई हड्डी प्राप्त कर लें। यह हड्डी ही सियार सिंगी के नाम से मशहूर है। बाजार में पाई जाने वाली सियार सिंगी पर बाल होते हैं। इनके अनेकों प्रयोग होते हैं।

**प्रयोग**

जिस व्यक्ति के पास या जिस घर में सियार सिंगी रहती है वहाँ सदा उन्नति होती रहती है। उसके नाम की विजय पताका सदा लहराती रहती है। कोई भी संकट उसे छू नहीं सकता।

साधक लोग सियार सिंगी को कण्ठ में धारण करते हैं। जिसके कारण साधना बिना किसी बाधा के पूर्ण होकर सफलता प्राप्त होती है।

एक डिब्बी में सियार सिंगी रख करके असली सिन्दूर डाल दें, कुछ चावल डालें, कुछ उड़द के दाने डालें, कुछ छोटी इलायची डालें। प्रतिदिन धूप दीप करते रहें। सियार सिंगी के पूजन के प्रारम्भ में लाल रंग के कपड़े की झंडी बना करके

गणपति को बुधवार के दिन चढ़ा दें। अब आपके पास कुछ तान्त्रिक प्रयोग करने के लिये मसाला तैयार है।

सियार सिंगी वाला सिन्दूर जिसकी भी माँग में भर दिया जायेगा। वह जिन्दगी भर साथ नहीं छोड़ेगा।

सियार सिंगी वाले चावल क्रोधित व्यक्ति को मारे जायेंगे तो उसका क्रोध सदा-सदा के लिये समाप्त हो जायेगा।

सियार सिंगी वाले उड़द जिस दरवाजे पर मारे जायेंगे वह घर कभी भी आबाद नहीं रहेगा।

सियार सिंगी वाली छोटी इलायची जिसे खिलाओ उससे मनचाहा काम करवाओ।

## शेर सिंगी

आपने वन प्रान्त में आदिवासियों को या कुछ जंगली जातियों को देखा होगा और ध्यान दिया होगा कि यह लोग हड्डियों की मालायें धारण करते हैं। सिर में टोपी पहनते हैं तो उसमें रंगीन पंख लगे होते हैं। बहुत पहले इस टोपी में केवल दो हड्डियाँ लगाया करते थे। आजकल उस हड्डी का अभाव हो जाने के कारण रंगीन पंख प्रयोग किये जाते हैं। सिर की टोपी में लगायी जाने वाली हड्डी शेर सिंगी होती थी।

शेर शब्द से तो शेर ही स्पष्ट होता है और शेर के सींग नहीं हुआ करते। अतः शेर सिंगी शब्द बड़ा ही हास्यास्पद प्रतीत होता है। इस पर भी आपको विश्वास करके यह समझ लेना चाहिये कि भारत की प्राचीन तान्त्रिक विद्या स्वयं ही अपने आपमें आश्चर्य

समेटे हुए है तो शेर सिंगी की बात भी हास्यास्पद न होकर आश्चर्ययुक्त सत्य है।

आजकल शेरों का अभाव होने पर ऐसे शेर मिल पाने असम्भव ही हैं परन्तु इसका वर्णन करना अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि शेर सिंगी अपने आपमें एक विशेष प्रकार का तान्त्रिक प्रभाव रखती है।।

जब शेर बहुत अधिक आयु के हो जाते हैं तो उनके कन्धों पर दोनों परफ दो उभार हो जाते हैं जो कि डेढ़ इन्च से चार तक के होते हैं। यह स्थिति कभी-कभी किसी-किसी शेर में ही प्रस्तुत होती है और इसी कारण इस शेरे में विचित्रता आ जाती है। इस शेर से यदि इसका शिकार बचकर वृक्षादि पर चढ़ जाय तो यह शेर कोई भी उछल-कूद न मचाते हुए अपने शिकार को बड़े ही ध्यान से देखता है और उसका शिकार स्वतः ही भूमि पर गिर पड़ता है, जिसे खा-पीकर शेर अपनी क्षुधा की पूर्ति कर लेता है।

बहुत पहले इस भाँति के अनेकों सिंह पाये जाते थे और ऐसे सिंहों की यह विकट विशेषता देखते हुए कुछ बुद्धिजीवी जंगलियों ने इसकी इन उभरी हुई हड्डियों का प्रयोग अपने सिर में टोपी के साथ किया और इस विशेषता से परिचित हुए। यह शेर सिंगी कहलाते हैं।

## प्रयोग

यह अदर्शनीय वस्तु जिसके पास रहती है यह नगर में विशेष सम्मान प्राप्त करता है और भी जो उसकी अभिलाषा होती है वह भी क्रमशः पूर्ण हो जाती है। जिस भाँति एक लघु पारस

पत्थर टनों लोहे को स्वर्ण में परिवर्तित कर देता है उसी भाँति यह शेर सिंगी जिसके पास है उसे कोई भी कमी नहीं होती और उसके लिये कोई भी स्थिति दु:साध्य नहीं होती।

## समुद्रफल

इसके वृक्ष भी हमारे देश में प्राय: पाये जाते हैं। इसके नाम से यह न समझा जाये कि यह कोई समुद्र से मिलने वाली वस्तु है। इस वृक्ष पर जब फल आने लगता है, तब डोरे-डोरे से निकल आते हैं तथा इन्ही डोरों से बड़ी इलायची की भाँति के फल निकलते हैं। इसी फल को समुद्रफल कहा जाता है। यह प्राय: पन्सारियों से मिल जाता है। इसको खाने चरपराहट होती है। यह गरम प्रभाव वाला कड़वा फल होता है। इस फल को खाने से भ्रम की शिकायत दूर हो जाती है। इसे ताबीज की भाँति धारण करने से भूत का अन्त हो जाता है।

## भोज पत्र

तन्त्र प्रयोगों में काम आने वाली एक प्रभावी वस्तु है—भोज पत्र। इसके अभाव में तन्त्र जगत में इसके पर्याय तो बहुत से हैं परन्तु इसके जैसा लाभ किसी अन्य से प्राप्त नहीं किया जा पाता। भोजपत्र का प्रयोग अधिकतर यन्त्र लिखने में किया जाता है। इसके ऊपर लिखे यन्त्र विशेष प्रभावी होते हैं परन्तु आवश्यक समय पर इसकी उपलब्धि न होने से निम्नलिखित भाँति कार्य चलाया जाता है और यह देखने में आया है कि अन्य प्रयोग अपने

नामानुसार ही विशेष प्रभावी रहे—

पीपल के पत्ते पर पुत्र कामना का मन्त्र लिखा जाता है।

कमल के पत्ते पर राजा बनने के लिये मन्त्र लिखा जाता है।

केले के पत्ते पर अन्न भण्डार भरे रहने के लिये लिखा जाता है।

श्मशान से वस्त्र लाकर विद्वेषण मन्त्र लिखा जाता है।

मोक्ष की प्राप्ति के लिये ताड़ पत्र पर लेखन करते हैं।

पान के पत्ते पर कामिनी को मोहने के लिये लेखन करते हैं।

इस पर भी भोजपत्र की अपनी ही एक विशेष भूमिका है। इसे सभी भाषाओं में ही भोजपत्र कहते हैं। यह हिमालयादि क्षेत्रों में पैदा होता है। यह एक वृक्ष का छाल होती है। इस छाल का प्रयोग अनेकों वर्षों से सफलता के साथ किया जा रहा है।

आप समझ गये होंगे कि इस पर मन्त्र लेखन क्यों किया जाता है। भोजपत्र को खाली ही यदि धारण किया जाय तो भी भूत-प्रेतादि की बाधायें शान्त हो जाती हैं। इसके ऊपर मन्त्र लिखकर शुद्ध किये जाते हैं। इसी पर आकृति बना करके देखते रहने और मन्त्र जप करते रहने से इष्ट दर्शन होते हैं। यदि भूतादि की पीड़ा तीव्र हो तो इसका धूप भी दिया जाता है।

## व्याघ्र नख

एक जानवर होता है जिसे कि व्याघ्र कहते हैं। इसके नाखून को कण्ठ में धारण करने से भी ग्रह स्तम्भित होकर शान्त हो जाता है। इसके धारण किये रहने से कभी कोई अनिष्ट नहीं होता।

'ऊपरी' शिकायतें दूर हो जाती हैं।

## आसन

तन्त्र प्रयोगों में आसन की उपयोगिता सर्वोपरि है। यह माना जाता है कि पहले आसन शुद्धि फिर तन्त्र सिद्धि। अतः प्रयोग करने के पूर्व आसन के विषय में प्रत्येक साधक को अवश्य ही जानना चाहिये। तन्त्र साधन करने वालों के लिये विभिन्न जरूरतों के अनुसार विभिन्न आसन होते हैं।

सिद्धि करने के लिये जिस वस्तु विशेष के ऊपर बैठा जाता है उसे आसन कहते हैं। यद्यपि कुश, ऊन तथा कम्बल का आसन पवित्र तथा सिद्धिदायक माने गये हैं फिर भी कुछ आसन विशेष, अनेकों विशेष कार्यों के लिये प्रयुक्त किये जाते हैं। यहाँ पर जिस आसन का भी विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है उस आसन वाले पशु पर यदि बैठ सकते हों तो अत्यधिक लाभदायक होता है अन्यथा आप उस पशु के चर्म का आसन बना करके लाभ उठायें।

**व्याघ्रासन**

कोई साधक यदि जीवित **व्याघ्र** के ऊपर बैठ करके मन्त्र का प्रयोग करता है तो मन्त्र शीघ्र सिद्ध हो जाता है तथा वह साधक देवी के समान हो जाता है।

किसी स्वच्छ वस्त्र के ऊपर व्याघ्र का चित्र बना करके आसन के लिये प्रयोग करने से शब्द सिद्धि प्राप्त होती है।

अब आइये! व्याघ्र चर्म की बात करें।

काले व्याघ्र के चर्म पर बैठ करके साधना करने से यक्षिणी

प्रसन्न होकर वार्ता करती है।

धूसर रंग के व्याघ्र के चर्म पर बैठ करके साधना करने से तीनों लोकों का परिचय प्राप्त होता है।

व्याघ्र की रोमश त्वचा के आसन पर बैठ करके साधना करने से बहुत-सी योग सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

व्याघ्र की बिन्दु वाली त्वचा का आसन बना करके जपादि करने से शत्रुओं का नाश होता है और राजा की कृपा प्राप्त होती है।

**कूर्मासन**

कछुए की खाल का आसन बना करके उपासना करने डाकिनी की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

**गजासन**

हाथी पर या हाथी के आसन पर बैठ करके साधना करने से मनोवान्छित लाभ प्राप्त होते हैं।

**मनुष्यासन**

साधना करते समय यदि जीवित मनुष्य ही आसन के लिये प्रयोग किया जाय तो राज्याधिकार प्राप्त होता है।

**महिषासन**

भैंसे पर या भैंसे की चर्म का आसन बना करके साधना करने पर शत्रुओं का विनाश होता है।

## गणपति प्रयोग

माना जाता है कि गणेश जी विघ्नविनाशक हैं इसलिये प्रत्येक

कार्य का शुभारम्भ इन्हीं के नाम से किया जाता है। गणेश जी को गणपति कहते हैं। यहाँ पर कुछ प्रयोग बता रहा हूँ जो कि अत्यन्त लाभदायक है।

**मन्त्र—ॐ क्षां क्षीं ह्रीं ह्रूं क्रौं क्रैं फट् स्वाहा।**

इस मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। अच्छा रहे यदि यह साधन क्रम कृष्ण पक्ष में आरम्भ किया जाय। यदि अष्टमी या चतुर्दशी तिथि के दिन उपरोक्त मन्त्र को सिद्ध किया जाय तो उत्तम रहता है। इस मन्त्र को प्रतिदिन जपते रहने से साधक के शत्रु, बाधायें, क्लेश आदि स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं।

यह एक सिद्ध मन्त्र है और यह कीलन किया हुआ भी नहीं है। इसी कारण यह एक सौ आठ बार जपने से ही सिद्ध हो जाता है।

यदि किसी अधिकारी या राजा को वशीभूत करना हो तो नीम की जड़ ग्रहण करके गणेश जी की प्रतिमा बना लेवें। इस प्रतिमा को पूजन गृह में स्थापित करके जिसे वशीभूत करना हो उसका नाम लिखें। इसके बाद उपरोक्त मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करें। इसके बाद उस राजा या अधिकारी से मुलाकात करें।

आपको किसी को भी वश में हो। प्रेमिका हो, प्रेमी हो, किसी का पति हो, किसी की पत्नी हो अर्थात कोई भी हो उसे मोहित करना हो तो उपरोक्त क्रिया ही करनी होगी, लाभ स्पष्ट दृष्टिगोचर होगा। इन प्रयोगों के प्रभाव से लाभ शीघ्र प्राप्त होता है।

नीम वृक्ष की जड़ से बनी हुई गणेश जी की प्रतिमा यदि प्राण प्रतिष्ठा कर ली जाय और इस मूर्ति के बाईं तरफ बैठकर उपरोक्त मन्त्र का जप किया जाय तो सभी परेशानियों का अन्त होकर मन की इच्छा पूर्ण होती है।

## ऐय्याशों के लिए

ऐय्याश स्त्री हो या पुरुष, इन्हें प्रतिदिन ऐय्याशी के लिये विपरीत लिंगी की आवश्यकता पड़ती ही रहती है। इन कामों में झगड़े-झंझट भी बहुत होते हैं। यहाँ पर ऐय्याशों के लिये एक नित्य ही विपरीत लिंगी के प्रबन्ध के लिये एक प्रयोग बताया जा रहा है।

ऊपर बताये गये मन्त्र को सिद्ध कर लें।

नीम की जड़ प्राप्त करके गणेश जी की प्रतिमा बनावें। इस प्रतिमा में गणेश जी की प्राण प्रतिष्ठा कर दें।

किसी स्त्री के बायें पाँव के नीचे की मिट्टी उठा लावें। इस मिट्टी को गीला करके स्त्री की मूर्ति बनावें। इस मूर्ति को दाहिने हाथ में लेकर गणेश जी की प्रतिमा को बायें हाथ में ले लें। उपरोक्त मन्त्र की एक माला अर्थात एक सौ आठ बार जप करके स्त्री की मूर्ति को गणेश जी की प्रतिमा के ऊपर चढ़ा दें। इस भाँति करने से स्त्रियाँ आकर्षित होकर खिंची चली आती हैं।

यह प्रयोग स्त्री वशीकरण के लिये बताया गया है। यदि कोई ऐय्याश स्त्री-पुरुषों का प्रबन्ध करना चाहे तो प्रयोग ऊपर की भाँति किया जायेगा। केवल पुरुष के दाहिने पाँव की मिट्टी

लेकर पुरुष की आकृति बनानी होगी। यहाँ पर पुरुष की मूर्ति बायें हाथ पर रहेगी तथा गणेशजी की प्रतिमा दाहिने हाथ पर रहेगी। इसके अलावा सभी क्रियायें उपरोक्त ही रहेंगी।

## नींबू

यह वस्तु प्रायः हरेक स्थान पर प्राप्त हो जाती है। इससे सभी लोग बहुत अच्छी भाँति से परिचित हैं। गर्मी के दिनों में कोई घर ऐसा नहीं होता जो नींबू का प्रयोग न करता हो। यह नींबू कहने मात्र से ही प्रत्येक स्थान पर प्राप्त हो जाता है अतः इसका वृक्ष परिचय प्रस्तुत नहीं किया जा रहा।

नींबू कई भाँति के होते हैं—

नींबू, कागजी नींबू, जम्भीरी नींबू, लिम्पाक नींबू, कन्ना नींबू, बड़ा जम्भीरी नींबू, मीठा जम्भीरी नींबू, चकोतरा, बिहारी नींबू, विजोरा और इसकी उपजातियाँ नारंगी, संतरा आदि। इन सभी नींबूओं के अपने अलग-अलग गुण हैं। तन्त्रों में नींबू भी एक विशेष भूमिका निभाता है। नींबू के द्वारा केवल गर्मी का ही सामना नहीं करते। मुख्यतः खाद्य सामग्री होने पर भी यह मारण, पौष्टिक, शान्ति कर्म के लिये प्रयुक्त होता है।

### दृष्टि दोष

एक नींबू लेकर दृष्टि दोष से पीड़ित व्यक्ति के ऊपर से सात बार उतारा करके किसी स्वच्छ चाकू से उसके दो टुकड़े करके अन्जानी दिशा की तरफ फेंक दें। सम्भव हो तो इन टुकड़ों को किसी चौराहे पर डाल आवें। इस भाँति दृष्टि दोष समाप्त

होकर शरीर को सुख प्राप्त होता है।

### मार्ग के विघ्न

आपको कहीं अन्यत्र जाना हो और मार्ग में विघ्न आदि के खतरे लग रहे हों तो घर से निकलने पर एक नींबू लेकर उसमें चार पिनें या कील वेष्टित करके द्वार के पास रख करके प्रस्थान करें। इस प्रयोग के प्रभाव से रास्ते के विघ्न समाप्त हो जाते हैं।

### मारण

एक नींबू लेकर उसमें शत्रु की प्राण प्रतिष्ठा करें। इसके बाद अर्द्ध रात्रि को निर्वस्त्र होकर श्मशान में जाकर इस नींबू को पृथ्वी में दबा आवें। मिट्टी के भीतर जैसे-जैसे यह नींबू सड़ेगा, वैसे-वैसे ही शत्रु का प्राण सड़ेगा। इससे भी भयानक तथा शीघ्र प्रभावी कार्यक्रम भी होता है। आप जब नींबू लेकर श्मशान में जायेंगे तो यदि जलती हुई चिता मिले तो उसमें उस नींबू को डाले दें। सावधान! मन को कड़ा रखें। हो सकता है कि कोई शक्ति उपस्थित हो जाय। इस प्रयोग के प्रभाव से शीघ्र मरण होता है। इससे भी भयानक प्रयोग करने के लिये श्मशान में या किसी चौराहे पर एक मन्त्र का जाप करते रहना पड़ता है, उसी रात्रि को ही एक शक्ति उपस्थित होती है। उसे पूजा करके नींबू दे दें। यह खतरनाक प्रयोग है अतः इसे सावधानी से करें।

## कौवा

मैंने अपनी पुस्तक शकुन-अपशकुन विचार में कौवे के विषय में विस्तृत प्रस्तुतिकरण किया है जो कि शकुन से सम्बन्धित

है। इस समय तन्त्र प्रयोग में कौवे की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाल रहा हूँ।

हमारा तन्त्र-शास्त्र बड़ा ही विकट तथा पेचीदा विषय है और मैं मानता हूँ कि इस महत्त्वपूर्ण विषय पर बात करते समय केवल विद्वता ही झाड़नी उचित नहीं होती। बल्कि स्पष्टीकरण करना अत्यन्त आवश्यक होता है। मेरा प्रयास है कि मैं अधिक स्पष्टीकरण कर सकूँ फिर भी आपको कुछ समझ न आये तो जवाबी लिफाफा भेजकर विषय की विविधता को समझ सकते हैं। मैं यह वायदा तो नहीं करता कि आपको उत्तर शीघ्र मिलेगा परन्तु हाँ! उत्तर मिलेगा अवश्य।

कौवा प्रायः दो ही भाँति का होता है और यह माना जाता है कि एक और दुर्लभ कौवा होता है जिसके कि दर्शन भी सुलभ नहीं होते। यह तीसरा कौवा सुनहरा होता है। मैं इस बात के विपक्ष में नहीं रहूँगा क्योंकि यह सुनहरा कौवा वास्तव में ही होता है और मैंने इसे प्रत्यक्ष देखा है अतः प्रस्तुत विषय में इसकी भी वार्ता करूँगा।

जो कौवा जिस क्षेत्र का होता है वहाँ की पूरी खोज खबर रखता है अतः कौवे को कभी भी दुत्कारना नहीं चाहिये।

यदि कोई कौवा सिद्ध कर ले तो व्यक्ति कौवे के सहयोग से सफल भविष्य वक्ता तथा तान्त्रिक बन जाता है।

जंगली कौवा पृथ्वी में छुपे हुए रहस्यों से बखूबी परिचित होता है।

आइये! कौवे को समझें तथा उससे लाभ प्राप्त करें।

कौवा एक काले रंग का पक्षी है। इसके सभी पंख काले होते हैं। इसी कारण इसे काले रंग का कहा जाता है। इसके पंख काले ही नहीं चमकीले भी होते हैं। इसकी दो टाँगें तथा दो आँखें होती हैं। इसकी आँखें तो दो होती हैं परन्तु पुतली केवल एक ही होती है। इस एक पुतली को वह बड़ी तीव्रता से दोनों आँखों के बीच घुमाता रहता है। यह जीव बड़ा ही चतुर तथा तेज तर्रार होता है। मादा कौवा जब अण्डे देती है तब कोयल के घोंसले में देती है। यह कुदरत का करिश्मा ही कहा जायेगा कि प्राय: कौवे तथा कोयल के अण्डे समान ही होते हैं। इनमें परस्पर भेद कर पाना कौवे तथा कोयल के भी बस की बात नहीं है। बेचारी कोयल अपने अण्डों के साथ-साथ कौवे के अण्डों को भी सहेजती रहती है। अण्डों के फूटने पर जब बच्चे निकलते हैं तब भी कोयल कौवे के बच्चों को दाना खिला-खिला कर पालती है क्योंकि इन दोनों बच्चे भी प्राय: एक समान ही होते हैं। कोयल की शरण में पलते-पलते जब वह उड़ने लायक हो जाते हैं तो उड़कर अपनी बिरादीर में जा मिलते हैं। अत: कहा जा सकता है कि कौवा पैदाइशी चालाक होता है। एक और इसकी विशेषता होती है कि यह पैदा होने के बाद दुर्घटना से भले ही मर जाय परन्तु इनका जीवन हजार वर्ष से भी ऊपर का होता है।

प्रभु ने जब संसार बनाया तब कोई भी प्राणी ऐसा नहीं बनाया जो कि संसार में कोई न कोई विशेष योगदान न करता हो। मनुष्य बनाया पशु खाने के लिये। पशु बनाया हरियाली खाने के

लिये। कुत्ता बनाया, बिल्ली खाने के लिये। बिल्ली बनायी, चूहे खाने के लिये। चूहा बनाया, साँप का बिल बनाने के लिये। यह एक प्राकृतिक नियम है कि शेर कभी भी घास नहीं खा सकता और गाय कभी भी माँस नहीं खा सकती। यह एक अलग विषय है। इससे ऊपर फिर कभी चर्चा करूँगा। इस समय बात कौवे की भूमिका पर हो रही थी।

मेरा विचार है कि यह संसार एक अभिनय करने वाला मंच है और इस संसार में जीने वाला प्रत्येक प्राणी इस संसार रूपी अभिनय मंच पर अपना-अपना अभिनय कर रहा है, इसी श्रृंखला में कौवा भी अपना अभिनय प्रस्तुत कर रहा है। बहुत अभिनय बहुतों की समझ में नहीं आते। इसी भाँति कौवे का अभिनय भी बहुतों की समझ में नहीं आता।

## आइये कौवे का प्रयोग करें

कहीं से एक कौवा पकड़ कर ले आयें। छः माशा बूरा, एक माशा कीकर की गोंद तथा आधा माशा शुद्ध कपूर मिला करके अच्छी तरह खरल में पीस लें। एक तोला पानी लेकर उपरोक्त सामग्री मिला कर चम्मच से घोल दें। डबल रोटी के छोटी-छोटी टुकड़े करके इस पानी में डाल दें। यह जब भींग जाये तब कौवे को खाने के लिये दे दें। इस भोज्य सामग्री को कौवा बड़े ही चाव से खा जायेगा। खाने के बाद वह बड़ी ही मीठी बोली बोलेगा। आप उसकी बोली को तथा उसकी चेष्टा को समझने का प्रयत्न करेंगे तो आप आश्चर्य में पड़ जायेंगे क्योंकि यह कौवा बहुत से गुप्त भेद प्रकट करता है जो कि

आपके लिये लाभदायक हो सकते हैं।

**स्वप्न सिद्धि**

एक शब्द होता है—टेलीपैथी! इसका अर्थ होता है किसी दूसरे व्यक्ति के मन की बातों को पढ़ते रहना। इसी विषय में यहाँ पर किसके मन में क्या है? यह जानने का तरीका बता रहा हूँ। इस प्रयोग को करने से आप किसी भी व्यक्ति के मन की बातों को अपने स्वप्न में देख सकते हैं। इसे मैं स्वप्न सिद्धि कहता हूँ।

किसी भी मंगलवार के दिन अभिजित योग (दोपहर ११.३० बजे से १२.३० बजे तक यह योग नित्य रहता है।) में एक कौवा पकड़ करके ले आयें। इसे पानी पीने के लिये गुलाब जल के साथ शुद्ध शहद मिला करके दें। इसके अलावा इसे भोज्य सामग्री के रूप में कुछ भी दे सकते हैं। इस कौवे को कुछ दिन आपको अपने पासा रखना है अतः किसी लोहे के पिंजरे में इसे बन्द कर दें। बताया गया पेय ही उसे पीने के लिये दिया जायेगा। तेरह दिन तक उसे अपने पास रखें फिर तेरहवीं रात्रि को ग्यारह बजे कौवे की गरदन काट दें और उसका पेट फाड़ दें। पेट फाड़ करके सारी सामग्री निकाल कर कौवे का दिल अलग करके सम्भाल लें। कौवे का बाकी सारा सामान किसी एकान्त स्थान में जाकर पृथ्वी में दबा दें। अब आप एक ताँबे की डिब्बी में इस दिल को बन्द करे धूप में रख करके दिल को सुखा लें। जब यह सूख जाये तो इस दिल की पंचोपचार से पूजा करके सिन्दूर चढ़ायें। थोड़ी-सी कस्तूरी भी चढ़ा दें। इसके बाद इसे नित्य रात्रि को सोते समय धूप·

दिखा करके डिब्बी को अच्छी भाँति हिला करके तकिये के नीचे रख करके सोते रहें। इस प्रयोग की पहली रात्रि से सातवीं रात्रि तक आपको किसी भी रात्रि को स्वप्न में कौवा दीखेगा और बस आपका प्रयोग सफल हो गया। यदि कौवा न भी दीखे तो भी सात रात्रि तक यह प्रयोग करते रहें। आठवीं रात्रि से आप किसी के भी मन का रहस्य जानने की शक्ति समेट लेते हैं।

इस डिब्बी से लाभ लेने का तरीका यह है कि आप अपने सोने का कमरा एकान्त में करें तथा अकेले ही सोयें। अब आप सोते समय इस डिब्बी को हाथ में लेकर उस व्यक्ति का ध्यान करते हुए इस डिब्बी को हाथ में लेकर उस व्यक्ति का ध्यान करते हुए इस डिब्बी को एकटक देखते रहें। यह नाटक की भाँति होगा। इसके बाद तकिये के नीचे रख करके सो जायें। रात्रि को सोते समय स्वप्न में वही व्यक्ति प्रस्तुत होगा तथा अपने मन का सारा रहस्य प्रस्तुत कर देगा।

पूर्वोक्त प्रयोग स्वप्न में रहस्य जानने का था। निम्नलिखित प्रयोग के प्रभाव से किसी भी व्यक्ति से सोते समय उसके रहस्य उगलवाये जा सकते हैं।

आपने सुना होगा कि लोग सोते हुए बहुत कुछ बक देते हैं। शायद आपने देखा होगा, यदि नहीं देखा तो इस प्रयोग के द्वारा उससे सोते समय उसके रहस्य जान लें।

एक कौवा पकड़ करके उसकी जीभ काट लें। एक मेंढक पकड़ें और उसकी भी जीभ काट लें इन दोनों जीभों को एक ताँबे के ताबीज में भर लें या ताँबे की डिब्बी में भर लें। इस भाँति

आपके हाथ में रहस्य उगलवाने की डिब्बी में भर लें। इस भाँति आपके हाथ में रहस्य उगलवाने की डिब्बी या ताबीज आ जाता है। आपने जिस ताबीज या डिब्बी में यह सामग्री भरी हो, उसे साथ रखें और आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

जिस पुरुष या स्त्री के मन के भेद को जानना हो तो जब वह सो जाये तो इस ताबीज को उसके हृदय रख दें। इसके प्रभाव से कुछ ही क्षणों में यह व्यक्ति बुदबुदाना प्रारम्भ कर देगा और अपने मन के सारे रहस्य खोल देगा। जब आपका मतलब पूर्ण हो जाये तो उस ताबीज को उठा लें। ताबीज के हटाते ही वह बुदबुदाना बन्द कर देगा।

इस प्रयोग के प्रभाव से यह जो कुछ बोला है, इसका इसे स्वयं को भी अनुभव न होगा। आपने यह प्रयोग किया था, ऐसा कभी कहें भी नहीं।

## पादुका साधन

कौवे का हृदय, कौवे के नेत्र, कौवे की जीभ लेकर मैनसिल, गेरु, सिन्दूर, कौंच मालती (पुष्प), रुद्रजटा और बिदारीकन्द एकत्र करके सारी सामग्री को पीस कर चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को अपने पाँव की तलहटी में लगाने से एक पल में सहस्र योजन जा सकेंगे।

## जेब भरी रहें

प्रायः लोग अपनी जेब में पड़ा सारा धन व्यय कर डालते हैं और फिर धन के लिये परेशान रहते हैं। ऐसा कई कारणों से होता है। आवश्यक सामग्री को खरीदने के लिये किया गया व्यय व्यर्थ

नहीं कहलाता परन्तु कुछ लोग आदत से लाचार होने के कारण व्यर्थ ही व्यय करते रहते हैं।

जब रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो तब एक कौवा पकड़ करके उसके दाहिने पाँव का एक नाखून उखाड़ करके कौवे को छोड़ दें। इस नाखून को ताबीज में बन्द करके जेब में रख लें। जब तक यह ताबीज जेब में रहेगा, कभी भी जेब खाली नहीं होगी।

## कुश्ती जीतें

यदि कभी अखाड़ें में उतरना हो या कुश्ती करनी हो और कार्यक्रम में जीत पाने की आशा कम हो या आशा ही न हो तब किसी कौवे को मार करके उसकी चर्बी निकाल लें और उसे अपनी दोनों हथेलियों तथा दोनों पाँव के तलुओं में मल लें। उसके बाद अखाड़े में जायें या कुश्ती करें तब अवश्य जीत होती है।

## बच्चे के कम बोलने पर

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बच्चा जन्म के बाद जब बोलना सीखता है तो कम बोलता है या बोलता ही नहीं। यह स्थिति बड़े लोगों में भी पायी जाती है। यदि कौवे की जूठन इन्हें खिला दी जाये तो यह लोग धारा-प्रवाह बोलने लग जाते हैं।

## नौकरी के लिये

नौकरी के लिये आवेदन करने पर भी कोई सुनवायी नहीं होती। इस बात से प्रायः हमारे नवयुवक क्षुब्ध रहते हैं। परमात्मा ने जब कोई परेशानी बनायी तो उसके हल भी बनाये। जब कोई

रोग बनाया तो उसकी दवा भी बनायी। अतः क्षुब्ध न होकर लाभ उठायें। मन को मजबूत करें। एक कौवा पकड़ें और उसका रक्त प्राप्त करें। जब आवेदन पत्र लिखकर अपने हस्ताक्षर वाली जगह पर कौवे का रक्त लगाकर ऊपर अपने हस्ताक्षर करें। सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

## प्रेमिका आकर्षण

किसी शनिवार के दिन एक कौवा पकड़ और घर-लाकर किसी पिंजरे में बन्द कर दें। इसे मीठा भोजन खिलायें। मंगलवार की अद्धरात्रि को कौवे को काट करके हृदय निकाल लें। इसके हृदय के अलावा बाकी कौवा व्यर्थ समझकर कहीं पर दबा दें। अब इस दिलको धूपादि करें और अपनी प्रेमिका के दरवाजे में या उसके रास्तें में गाड़ दें। जब आपकी प्रेमिका उस पाँव रखेगी तो वह आपकी तरफ आकर्षित हो जायेगी। आप उसका जैसे चाहें प्रयोग करें। यह प्रयोग स्त्री पुरुष कोई भी कर सकता है।

## स्त्री वशीकरण तिलक

एक नर कौवा शनिवार को पकड़ लें और उसकी पीठ के सारे पंख नोच लें। इन पंखों की विधिवत पूजा करें और फिर इनकी भस्म बना लें। इस भस्म का तिलक लगाकर जिससे पहले मिलेंगे, वही प्यार करने लगेगा।

## पुरुष वशीकरण तिलक

शनिवार के ही दिन मादा कौवा पकड़ करके उसकी पूँछ के नीचे वाले पंख नोच करके भस्म बना लें। इस भस्म का जो स्त्री अपने माथे पर टीका करेगी उससे पुरुष वशीभूत होंगे।

## शत्रु नाशक तिलक

काले कौवे का रक्त, काले बकरे का रक्त, काले घोड़े का रक्त तथा काले मुर्गे का रक्त मिला करके माथे पर तिलक लगायें तथा शत्रु के सामने जायें। इसके प्रभाव से शत्रु भाग जायेगा और जीवन भर आपसे भय खाता रहेगा।

## सफलतादायक रस्सी

जीवन में प्रत्येक क्षेत्र की सफलता करने के लिये आप को यह प्रयोग करना होगा। एक ऐसा स्थान चुनें जहाँ पर आपको काफी सारे कौवे मिल सकें। अब आप मीठे चावल बनाकर उस स्थान पर जायें और आस-पास घना फैला दें। इसे खाने के लिये कौवे आ जायेंगे। स्थान कम तथा कौवे अधिक होने के कारण एक दूसरे से लड़ेंगे और भीड़ में जबरदस्ती घुस कर खाने का प्रयास करेंगे। आप खड़े होकर देखते रहें। जब चावल समाप्त हो जायेंग तो यह सारे कौवे उड़ जायेंगे। और वहाँ पर रह जायेंगे कुछ पंख जो कौवों होंगे। उन्हें समेट कर ले आयें। अगले दिन पुनः इसी क्रिया दोहरायें और फिर बचे हुए पंख उठा लायें। इस भाँति सात दिन तक लगातार एक ही निश्चित समय पर यह प्रयोग करना होगा।

आठवें दिन फिर मीठे चावल ले जायें और छितरा दें परन्तु यह विस्तृत फैलायें ताकि कौवे आराम से खा सकें। जब कौवे खाने लगें तो हाथ जोड़ कर उन्हें प्रणाम करें और कहें, 'मेरा अन्न तुम्हारे लिये तब तक हराम रहेगा, जब तक मैं असफल रहूँगा।' यह कह कर आप अपने घर वापस आ जायें।

अब घर आकर सातों दिनों के समेटे हुए पंख हाथों से मसल-मसल करके मुलायम करें और फिर एक काला धागा लेकर उसके साथ पंख लपेटते हुए मोम लगा-लगा कर एक रस्सी बना लें। यह सारे पंख इस रस्सी में आ जाने चाहिये। जब रस्सी बन जाये तो उत्तर दिशा की तरफ रख करके उसे धूप दीप करें, एक नारियल लेकर अपने ऊपर से सात बार घुमायें और फिर इस रस्सी के सामने उसे फोड़ दें। इस नारियल की गिरी के छोटे-छोटे कतरे करके दसवें दिन फिर वहीं कौवों को डाल आयें। अब आप इस रस्सी का प्रयोग करें और इसके प्रभाव से चमत्कृत हो जायेंगे।

जब आप किसी अधिकारी से मिलने जायें तो इस रस्सी को दाहिनी भुजा पर धारण कर लें। आप जो कहेंगे, वह अधिकारी वही करेगा।

किसी भी लाभ के हेतु प्रार्थना पत्र लिखते समय दाहिनी भुजा पर पुनः इसे धारण कर लें इसके प्रभाव से आपके आवेदन पत्र पर अवश्य ध्यान दिया जायेगा।

यह रस्सी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सफलता दिलायेगी। इस रस्सी को सदा शुद्ध रखना ही लाभकारी होगा।

## अज्ञात निधि

काले कौवे की जीभ लेकर आक की रुई में लपेट करके घी में डाल करके दिया जलायें और उसका काजल काँसे के पात्र पर बनायें। इस काजल को नेत्रों में लगाने से पृथ्वी में छुपी अज्ञात निधि का दर्शन होता है।

# कन्या की शीघ्र शादी

किसी कन्या की शादी के प्रयासों में सफलता न मिल रही हो तो कन्या अपनी शादी के लिये यह प्रयोग करे।

अपनी किसी ऐसी सहेली के घर मेहमान बन कर जायें, जिसकी शादी अभी-अभी हुई हो। वहाँ पर जाते हुए अपने वस्त्र ले जाना भूल जायें। उसके घर जाकर रात्रि को भी ठहरें। प्रातः काल जब सहेली रसोई में चाय पानी के लिये जाय तो शीघ्र उठ कर सहेली के सोने वाले कमरे में जायें। वहाँ जाकर वह वस्त्र तलाश करें जिसे कि सहेली ने रात्रि में विषय भोग करने बाद प्रयोग किया था। वह वस्त्र गन्दा होगा। उससे घिन न करें बल्कि उस वस्त्र को चुरा लें। सहेली के दिये वस्त्र पहने हुए तथा वह गंदा वस्त्र लेकर घर आ जायें। घर आकर रात्रि को एकान्त में कमरा भली भाँति बन्द करके अपना श्रृंगार करें तथा सारे वस्त्र पहनकर अपने बिस्तर पर बैठ जायें। वह वीर्य वाला कपड़ा लेकर गोल-गोल पलेट लें। इसे पुरुष की इन्द्री की भाँति बना करके एक पीढ़े पर रखें। इसकी पूजा करें और भावना करें कि यह कामदेव ही है। नीचे दिये गये मन्त्र का जप करें तथा सारे वस्त्र उतार करके इस इन्द्री बने वस्त्र को उठाकर अपनी योनि के समीप रखें। योनि तथा वस्त्र में थोड़ी दूरी रहनी चाहिये। इस दूरी को देखते हुए जप करती रहें तथा इस इन्द्री बने वस्त्र को धीरे-धीरे अपनी योनि की तरफ सरकाती जायें। इस समय आप बेहद कामुक हो जायें। जब आपकी कामुकता बढ़ जाये तब इसे उठाकर

चूमें चाटें तथा इसे देखकर कहें—'हे पुरुषेन्द्रिय! मेरा पुरुष मुझसे मिला नहीं तो तू भी योनि से दूर हो जा।' ऐसा कहकर इसे तकिये के नीचे रखकर सो जायें। रात्रि को स्वप्न में कामदेव आकर आपको सन्देश देंगे। प्राप्त हुए संदेश के अनुसार करके लाभ उठायें।

**मन्त्र—"ॐ कामदेवाय नमः मम मैथुनार्थे पूर्ण पुरुष देही देही स्वाहा।"**

## घोड़े की नाल

यह बड़े काम ही वस्तु है। किसी शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल प्राप्त करें। इसे घर के द्वार पर लटकाने से ऊपरी शिकायत दूर हो जाती है। दृष्टिदोष नहीं होता।

## लोहे का छल्ला

यदि काले घोड़े की नाल मिले तो लुहार से इसी नाल का एक छल्ला बनवायें। उसे मध्यमा अंगुली में पहन लें। इसके अनेकों लाभ होते हैं। इसके पहनने से शनि ग्रह की शान्ति होती है, कोई भी ऊपरी अलाबला हमला नहीं करती। गुर्दे की पथरी समाप्त हो जाती है। एक गिलास पानी में इस छल्ले को डाल कर पानी पीने से वायु प्रकोप शान्त होता है।

## वीर्य स्तम्भन

यहाँ पर वीर्य स्तम्भन के कुछ प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूँ।

हमारे तन्त्रों में यह प्रयोग मनुष्य के लाभ के लिये कहे गये हैं।

कोई पुरुष किसी का शुभाकांक्षी हो या न हो परन्तु सम्भोग करते हुए संसार का प्रत्येक पुरुष अपनी सहयोगिनी को सन्तुष्ट रखना चाहता है। अतः इस विषय में प्रत्येक पुरुष प्रत्येक स्त्री का शुभाकांक्षी कहा जायेगा। विषयभोग में स्त्री को आनन्द तभी आयेगा जब पुरुष सबसे पहले स्त्री को स्खलित करे। होना तो यही चाहिये। परन्तु बहुत कम ही ऐसा हो पाता है। यदि आपको लगे कि आपने वीर्य स्तम्भन करना है अर्थात पहले स्त्री को स्खलित करना है तो निम्नलिखित उपायों में से कोई भी प्रयोग करें।

**ऊँट की हड्डी**

कहीं से ऊँट की हड्डी प्राप्त करें और उसमें छेद कर लें। इस छेद में काला धागा डालकर सिर पर बाँधने से वीर्य स्तम्भित होता है।

**सर्प**

काले रंग वाले दुन्दुभी सर्प की हड्डी को कमर में धारण करने से वीर्य स्तम्भित होता है।

**छछून्दर**

एक नर छछून्दर की हत्या करें और उसका पेट फाड़ करके उसके अण्डकोश निकाल लें। इन्हें ताँबे के ताबीज में भर करके स्त्री से सम्भोग करने पर वीर्य स्तम्भित होता है और स्त्री स्खलित होकर पति पर न्योछावर रहती है।

### कौड़ी

रविवार के दिन घोड़े तथा खच्चर की पूँछ के बाल तोड़ कर ले आयें। एक कौड़ी में छेद करके इन बालों में पिरा इस कौड़ी को भुजा में धारण करके स्त्री सेवन करने से स्त्री को असीम सुख प्राप्त होता है।

### खरगोश

एक खरगोश पकड़कर उसका पेट काट करके उसके अण्डकोश निकाल लें। इन्हें ताँबे के ताबीज में भर करके कमर में बाँधने से वीर्य स्तम्भित होता है।

### छिपकली

यदि छिपकली की पूँछ का अगला हिस्सा काट करके सफेद धागे में लपेट करके कनिष्ठिका पर बाँधा जाये तो वीर्य क्षरित नहीं होता।

## पुरुष वशीकरण

**यह** प्यार मोहब्बत की बातें हैं। प्रायः प्रेमी अपनी प्रेमिका को केवल यौन सुख के लिये प्रयुक्त करते हैं और फिर छोड़ देते हैं। यह स्थिति बड़ी ही विकट होती है। प्रेमिकाओं को चाहिये कि कुछ भी करने से पहले प्रेमी का निश्चय करें। यदि उसी युवक को प्रेमी बनाना ही लक्ष्य हो तो यह प्रयोग करें।

उस युवक के पाँव (दाहिने) के नीचे की धूल लेकर अपने घर आ जायें। घर आकर घर से मकड़ी का जाला किसी रूमाल

में उतार लें। वह पाँव की मिट्टी इस जाले के ऊपर रख कर जाला उस पर फैला दें। इस रूमाल को काले धागे से लपेट कर अपने पास रखें। इसके प्रभाव वह युवक आपसे बच कर कहीं नहीं जायेगा। आप समझ सकते हैं कि इस प्रयोग का अर्थ क्या हुआ?

## जल स्तम्भन

यदि आपका दिल करे कि जल पर चला जाय या जल में डूबने के खतरे से मुक्ति मिले तो साँप का रक्त लें और साँप का नेत्र तथा मुख लें। इन्हें एकत्र करके सुखा लें और ताबीज में धारण कर लें। जब-जब नदी में स्नान करने जायें तब-तब इस ताबीज को धारण कर लें। इस ताबीज के प्रभाव के कारण आप जल में नहीं डूबेंगे।

## अंगारा स्तम्भन

मैं किसी के ऊपर आक्षेप नहीं करता फिर भी आपने जलते हुए अंगारों पर चलना हो या लोट लगानी हो तो इस क्रिया के पूर्व आप उटंगण का रस निकाल कर अपने सारे बदन पर तेल की भाँति लगा लें। जब यह रस सूख जाये तो कहीं पर भी जाकर जलते हुए लाल अंगारों पर कुछ भी करिये, कैसे भी करिये। आपको अंगारों से कोई हानि नहीं होगी। यह क्रिया वस्त्र-विहीन होकर करें क्योंकि वस्त्रों के लिये अंगारा स्तम्भन नहीं किया गया है। यह ध्यान रखना जरूरी है।

# बिल्ली की आँवर

जब कोई मादा जीव बच्चा उत्पन्न करता है तो वह बच्चे को जन्म देने के बाद आँवर भी त्यागता है। यह नियम मनुष्य पर भी लागू होता है। इस आँवर को जेर भी भी कहते हैं। यह अत्यन्त जहरीली होती है। यदि इसका निष्कासन न हो पाये तो जीव के प्राण जाने का भय बन जाता है।

आप समझ गये होंगे कि आँवर कितनी खतरनाक होती है और यह कुदरत का करिश्मा ही कहा जायेगा कि इस आँवर को बिल्ली खा जाती है। तन्त्र प्रयोग में केवल बिल्ली की आँवर ही प्रयुक्त होती है और इसे ही बिल्ली खा जाती है। यह आँवर भी कुदरत का एक प्रसाद है। यदि किसी को बिल्ली की आँवर मिल जाय तो उसके दुर्दिन समाप्त हो जाते हैं। इसका लाभ तभी होता है, जब ताजा ही और स्वयं ही प्राप्त किया जाय। यूँ तो यह बाजार में भी बिकती है। परन्तु मेरी समझ से वह हमारे लिये व्यर्थ ही है।

एक उदाहरण के द्वारा इस बात को समझें—

एक बार मैं एक दुकान पर गया और उससे कुछ बातें करते हुए मैंने देखा कि वहाँ पर कुश का बाँदा पड़ा है। पूछा कि इसका क्या करोगे? उसने बताया कि चार महीने से रखा है और अब बेचेंगे। मैंने कहा कि जब से यह पड़ा है तब से आपको क्या अनुभूतियाँ हुईं? उन्होंने नकारात्मक उत्तर दिया।

आप जानते होंगे कि कुश का बाँदा धन प्राप्ति में सहायक

होता है परन्तु उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ। क्योंकि वह यथाविधि प्राप्त नहीं किया गया था। मान लिया जाय कि वह यथाविधि प्राप्त भी किया गया तो भी उसकी गोपनीयता समाप्त होने से उसका प्रभाव समाप्त हो गया। अब आप सोचेंगे कि गोपनीयता कैसे समाप्त हुई? इसे आप स्वयं ही समझ सकते हैं कि उसने कितने ग्राहकों को, शुद्ध-अशुद्ध हाथों से खरीदने के लिये दिया होगा। अतः सदा स्मरण रखें कि तन्त्र में सफलता की पहली शर्त ही गोपनीयता है। यह शर्त केवल मार्गदर्शक पर लागू नहीं होती।

## पतंग

जी हाँ, यह वही पतंग है जिसे बच्चे उड़ाते हैं। इस पतंग के जन्म की कहानी भी बड़ी अजीब है। हर बात का कोई-न-कोई अर्थ होता है अतः पतंग उड़ाने का भी एक अर्थ है। जो व्यक्ति पतंग उड़ाता है वह अपने दुर्दिन उड़ाता है। इसे उड़ा करके छोड़ देना चाहिये परन्तु लोग इसे लूटने और बचाने के चक्कर में रहते हैं। इसी कारण इसका पूर्ण लाभ नहीं मिल पाता।

पतंग उड़ाता हुआ व्यक्ति यदि पतंग उड़ा कर धागा तोड़ कर छोड़ दें, यह पतंग हवा के सहारे उड़ती हुई अन्यत्र चली जाती है। मान्यता है कि इस पतंग के साथ व्यक्ति का दुर्भाग्य उड़ता है और धागा तोड़कर छोड़ देने का अर्थ है कि पतंग के साथ उसका दुर्भाग्य उड़ जाय। यह पतंग अपने साथ सदा ही दुर्भाग्य लेकर उड़ जाती हैं अतः इसे लूटने का प्रयास नहीं करना

चाहिये। पतंग लूटना भविष्य के लिये अनिष्टकारी होता है।

## मोर का पंख

माना जाता है कि यही एक ऐसा पक्षी है जो मैथुन नहीं करता। अतः पवित्रता का तथा शुद्धता का प्रतीक है। इसी कारण इस पक्षी के पंखों से झाड़ा आदि करने का काम लिया जाता है। इसके पंख की एक और विशेषता होती है कि जहाँ पर इसके पंख होते हैं वहाँ पर सर्प प्रवेश नहीं करता। हमारे तन्त्र में मोर का पंख महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाकर शान्त नहीं होता, बल्कि संसार सृष्टि में सहायक होता है। मोर पंख में दीख रहे सितारे को काट करके खरल में पीस लें और इसे गर्भवती स्त्री पहले दो मास में तीन तीन दिन खाये तो उसे पुत्र पैदा होता है।

## मारण प्रयोग

१. यदि किसी के ऊपर सर्प की हड्डी का चूर्ण करके डाल दिया जायेगा तो वह व्यक्ति मर जायेगा।
२. यदि मनुष्य की हड्डी का चूर्ण करे पान में रखकर जिसे खिला देंगे, वह शीघ्र मरेगा।
३. यदि काले धतूरे का चूर्ण तथा चिता की भस्म मिलाकर मंगलवार के दिन जिसके ऊपर डाल दिया जायेगा। वह शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होगा।
४. यदि विष का चूर्ण तथा उल्लू की विष्ठा मिला कर जिस पर डाल दी जायेगी वह अति शीघ्र काल का ग्रास बनेगा।

# रजस्वला वस्त्र

आजकल रजस्वला वस्त्र की कोई भी गोपनीयता नहीं रही। जो जहाँ चाहता है वहीं पर इस वस्त्र को फेंक देता है। इस वस्त्र का अर्थ होता है स्त्री जवानी से लेकर चालीस वर्ष तक की है अतः इस स्त्री का प्रयोग करने के लिये यह वस्त्र बहुत सहयोग करता है। एक गुप्त अनुष्ठान करने पर जिस स्त्री का वह वस्त्र होता है उस वस्त्र के द्वारा वह स्त्री न चाह कर भी खिंची चली आती है। मैं इस भाँति का प्रयोग जानबूझ कर नहीं दे रहा। बल्कि स्त्रियों से कहना चाहता हूँ कि वह इस कपड़े को व्यर्थ समझ कर इधर-उधर न फेंक दिया करें, क्योंकि इस वस्त्र के द्वारा आपको कहीं भी कोई भी तान्त्रिक प्रयोग करके खींच सकता है।

# दिल का डर

कभी-कभी व्यक्ति को अकारण ही डर लगता है। वह आस-पास अनजानी आकृतियों का भ्रम देखता है। उसे लगता है कि उसे कोई मार न डाले या कोई दुःखद घटना होने वाली है। उसके शत्रु बहुत अधिक हैं जो कि उसे हानि पहुँचा रहे हैं तो शनिवार के दिन सवा पाव काले तिल, काले कपड़े में बाँधकर अपने ऊपर से सात बार घुमाकर नदी में फेंक आयें। एक ताँबे के लोटे में शुद्ध एवं स्वच्छ जल भरके, रात्रि को सोते समय अपनी चारपायी के सिर के तरफ नीचे रख दें। इस जल में गुड़हल का पुष्प, थोड़ा-गुड़ डालकर ढक करके रखें, प्रातः स्नान करके वह

लोटा उठा कर उसमें रखें, जल एवं सामग्री को सूर्य देवता की तरफ मुख करके अर्पण करें अर्थात धीरे-धीरे जल गिरा दें। सोमवार को सुनार के पास जाकर एक तोला चाँदी का चन्द्रमा बनवाकर लायें। इसे दूध से धोयें और वह दूध कुत्ते को जो कि काला हो, पिला दें। सफेद धागे की सात तारें मिलाकर धागा बटें एवं उस धागे में चन्द्रमा डाल कर गले में पहन लें तो भगवद् कृपा से दिल को मजबूती प्राप्त होती है तथा बहुत से अनिष्ट स्वयं ही समाप्त हो जाते हैं।

## भूतादिक का भय

आजकल भूत आदि का लगना एक सामान्य-सी बात हो गयी है। इस परेशानी के कारण सर्वसामान्य को भी ओझा आदि के चक्कर में पड़ जाना पड़ता है। जाते हैं लाभ के लिये और उसके चक्कर में फँस जाना पड़ता है और इसी कारण धन एवं शरीर की हानि होने लग जाती है। यह एक गम्भीर विषय है। आज आधुनिक युग में आदमी बहुत व्यस्त हो गया है और इसी कारण कभी-कभी वहम का भूत भी हो जाता है। आश्चर्य है कि ओझा लोग मुँह माँगे पैसे लेकर भी रोग ठीक नहीं कर पाते। अस्तु भूत असली हो या नकली निम्न उपाय करें।

रविवार को स्नान करके तुलसी के आठ पत्ते, काली मिर्च आठ दाने तथा सहदेवी बूटी को जड़ को काले कपड़े की एक थैली बनाकर, उसमें भर लें तथा इसी को ताबीज की तरह काले धागे के द्वारा गले में धारण कर लें तो लाभ हो जाता है।

# समस्या समाधान

आजकल विज्ञान का युग है तो यह समस्याओं का भी युग है। लोग इसे कलयुग कहते हैं। आप इसे समस्या युग भी कह सकते हैं और समस्या का निपटारा हो जाय अर्थात अन्धे के हाथ बटेर लग जाय तो कहना ही क्या? सभी समस्याओं की बात तो मैं कर नहीं रहा परन्तु कुछ ऐसी समस्या भी होती हैं जिसका कोई हल नहीं निकल पाता तो दुखी होने से तो लाभ होगा नहीं। हाँ, यह प्रयोग करके देखें—बरगद के वृक्ष से शनिवार की सन्ध्या को एक स्वच्छ पत्ता तोड़ लायें और उस पत्ते पर अपनी समस्या लिख दें। लाल धागा लेकर पाँव से सिर का नाप कर तोड़ लें और नापे धागे को को पत्ते पर लपेट कर जल में प्रवाहित कर दें।

यह अति उत्तम प्रयोग है। देखने में तो आया है कि एक बार ही में लाभ हुआ परन्तु आको कोई कमी लगे तो यह प्रयोग सात बार अर्थात सात शनिवारों को करें।

# प्रेम बाधा

आज जबकि विज्ञान बहुत उन्नति कर चुका है और स्थिति यह है कि मनुष्य के कदम चाँद की धरा को भी स्पर्श कर आये हैं। शिक्षा का चारों तरफ बोलबाला है। फिर भी प्रेतादिक की बाधा से त्रस्त लोग बहुत बड़ी संख्या में देखने को मिलते हैं। कभी-कभी इस बाधा के कारण सन्तान आदि का न हो पाना भी दृष्टिगोचर होता है। इसके समाधान के लिये एक लाल कपड़ा लेकर उसमें थोड़ा-सा गुड़, सिन्दूर, ताँबे का पैसा तथा काले

तिल रखकर वस्त्र की पोटली-सी बना करके बाधा ग्रस्त रोगी के ऊपर से सात बार वार करके किसी रेलवे लाईन के पार फेंक कर बिना पीछे मुड़े ही वापस चले आओ। प्रयास यही करें कि पोटली से सामान बाहर न गिरे तथा जाते समय किसी से वार्ता न करें। यह प्रयोग मंगलवार या शनिवार की सन्ध्या को करें जब दोनों समय एक हो रहे होते हैं। सामग्री में सिन्दूर का ही प्रयोग करें, कुमकुम का नहीं।

## निरन्तर धन हानि होने पर

कड़ी मेहनत और पूर्ण योग्यता होते हुए भी कभी-कभी कारोबार में धन हानि होने लग जाती है। ऐसी स्थिति में कारणों पर ध्यान देकर कारण दूर करना चाहिये और यह करना चाहिये।

रविवार को रात्रि में सोते समय एक लोटे में जल भरें तथा उसी में थोड़ा-सा दूध मिलाकर ढक लें। अपने सिरहाने की तरफ नीचे रखकर सो जायें। प्रातः स्नान आदि करके वह लोटा उठाकर किसी कीकर के वृक्ष के पास आकर लोटे का जल वृक्ष को चढ़ा दें। इस भाँति सात सोमवार करें। प्रायः इस प्रयोग से अनेकों दुःखित जनों को लाभ हुआ है।

## गर्भ निरोध हेतु

आज बढ़ती मँहगायी का युग है। परिवार को सीमित रखकर ही भविष्य की जनता को सुखद बनाया जा सकेगा। इस कार्य में कई तरह के प्रयोग किये जा रहे हैं। आगे या अभी सन्तान न हो

इसके लिये सरसों की जड़ को स्त्री अपने सिर पर या चुटिया आदि में छुपा कर धारण करे। इसके बाद पति से विषय भोग करे तो गर्भ न ठहरेगा। जब गर्भ ठहराना हो तो सरसों की जड़ खोलकर नदी में प्रवाहित कर देनी चाहिये।

## शत्रु का बुद्धि स्तम्भन

आज का युग ही नहीं बल्कि प्राचीनतम समय से ही मनुष्य, मनुष्य से बैर रखता आया है। यह शायद विधाता का ही कोई प्रकोप होगा कि प्रत्येक मनुष्य स्वयं को चतुर समझ कर दूसरों को कुछ भी नहीं समझता। इस समस्या को हल करने के लिये निम्न प्रयोग करें—

१. जब शत्रु अत्यन्त दुःखी कर रहा हो तो उसकी बुद्धि का स्तम्भन कर देना चाहिये। इसके लिये चमार और धोबी की नाद का मैल लेकर चाण्डाली स्त्री के मासिक का रक्त लगा वस्त्र लेकर एक पोटली में बाँध लें और जब शत्रु को राह पर आता या जाता हुआ देखें तो वह पोटली शत्रु के पाँव की तरफ फेंक दें तो शत्रु की बुद्धि स्तम्भित हो जायेगी।

२. उपरोक्त क्रिया न कर पाने की स्थिति में या शत्रु के सामने न आना चाहें तो मासिक के रक्त के वस्त्र पर गोरोचन से शत्रु का ना लिखें। किसी घड़े में वह वस्त्र डालकर घड़े का मुख बन्द करके एकान्त में धरती में गाड़ दें तो भी शत्रु की बुद्धि स्तम्भित हो जायेगी।

## पति वश में करें

यह माना जाता है कि पुरुष को अपनी सन्तान तथा दूसरे की स्त्री अत्यन्त सुन्दर तथा प्यारी लगती है। इसी कारण पुरुष वर्ग परायी स्त्रियों के प्रति आसक्त रहता है। घर में कितनी भी सुन्दर पढ़ी-लिखी, सुशील पत्नी क्यों न हो, कभी-कभी पुरुष उसकी अवहेलना करके इधर-उधर के चक्कर में रहता है। इस कारण पत्नी की मान-हानि होती है और घर की शान्ति भंग हो जाती है। ऐसी स्थिति में पत्नी अपने मासिक के रक्त की तीन बूँदें पीन की सामग्री में डालकर पति को पिला दे तो पति उसका गुलाम हो जाता है परन्तु कई बार इसका प्रभाव चिरस्थायी नहीं होता अतः कई बार यह क्रिया करनी पड़ती है।

मासिक के प्रारम्भ से अन्त तक योनि में एक लौंग रखा जाय और मासिक की समाप्ति पर वह लौंग पान में रखकर पति को खिला दिया जाय तो सारी उम्र के लिये पति गुलाम हो जाता है। इसका प्रभाव शीघ्र होता है तथा सारी उम्र तक रहता है।

## बवासीर

यह एक तकलीफदेह रोग है और गुदा द्वार पर प्रकट होता है। यह दो तरह का होता है—१. बादी, जिसमें केवल तकलीफ होती है, २. खूनी, इसमें तकलीफ भी होती है और रक्त भी गिरता है। गुदा द्वार पर कुछ मस्सों के रूप में यह दिखायी देता है। इसके कारण रोगी का उठना-बैठना तक असम्भव हो जाता है।

पाखाना जाने के नाम से तो रोगी की हालत और भी बिगड़ती है क्योंकि पाखाना करने से तकलीफ बहुत बढ़ जाती है। इस रोग में रोगी को रसेदार भोजन खाना चाहिये तथा पेट का साफ होना जरुरी है।

इस तकलीफदेह बीमारी को भगाने के लिये सफेद तथा लाल धागे को मिला कर बट लें। मंगल के दिन पाँव के दोनों अंगूठों पर यह धागे लपेट कर बाँध दें। इस प्रयोग को करने से प्राय: यह रोग शनै:-शनै: समाप्त हो जाता है।

## बीमारी

किसी व्यक्ति को बहुत समय से कोई बीमारी चली आ रही हो और दवा आदि से लाभ न हो रहा हो तो शनिवार की रात्रि को बेसन की एक रोटी बनावें और उस पर सरसों का तेल चुपड़ कर रोगी के ऊपर से सात बार घुमा कर उतारें। इसके बाद काले कुत्ते को यह रोटी खिला दें। सावधानी यह रखें कि कुत्ता काला ही हो तथा केवल कुत्ता ही हो, कुत्तिया नहीं।

## जुलपित्ती

यह एक ऐसा रोग है जो अचानक पैदा होता है और अचानक लुप्त भी हो जाता है। कोई निश्चित समय रोग वृद्धि का नहीं होता। इस रोग के कारण शरीर खुजलाता है और खुजलाने पर चकत्ते आदि पड़ जाते हैं। इसे अंग्रेजी में आर्टिकेरिया कहा जाता है। गाँव-देहात में इस रोग को शान्त रखने के लिये गेरु खाया

जाता है। डॉक्टरी चिकित्सा में मल्हम से मालिश की जाती है। जो भी हो यह रोग एक अदृश्य शत्रु की तरह दुःखी करता रहता है। कुछ स्थानों पर देखने में आया कि जब रोग आक्रमण करता है तो लोग सगी भाभी के पेटीकोट (साये) को जिसे कि धोकर सूखने के लिये डाला जाता है को उठाकर अपने शरीर को उससे रगड़-रगड़ कर साफ करते हैं और फिर पेटीकोट को वहीं फेंक कर हट जाते हैं। इस क्रिया पर किसी की दृष्टि नहीं पड़नी चाहिये। एक और महत्त्वपूर्ण प्रयोग है जिसे कि ध्यान से करना चाहिये। जब यह रोग आक्रमण करे तो उस समय युवा भंगिन जब गन्दा आदि उठा रही हो तो जाकर उससे लिपट कर अपनी छाती से लगा कस कर भींच लें तो भी रोग से छुटकारा मिलता है। यहाँ पर अलग-अलग प्रयोग कहे हैं, जैसी सुविधा हो उनका प्रयोग करें। स्मरण यह रखें कि जिसके साथ या जिसके वस्त्र से क्रिया की जाती है उसे चिढ़ना चाहिये। यह प्रसन्न न हो। जितना तेजी से वह चिढ़ेगा, क्रोध करेगा उतनी ही शीघ्रता से यह दुष्ट रोग शान्त होगा। भंगिन का युवा होना आवश्यक है। भाभी सगी ही होनी चाहिये। इस सब बातों का सावधानी से विचार करें।

## गर्भपात

जब किसी गर्भवती स्त्री को गर्भ के गिर जाने का खतरा लगे तो वह कुम्हार के हाथों में लगी मिट्टी मँगवाये। उस मिट्टी को शहद में घोल कर जीभ पर रख कर सवा पाव बकरी का दूध पी ले तो गिरता हुआ गर्भ भी ठहर जाता है।

## निद्रा स्तम्भन

जब किसी को, किसी भी कार्य के कारण रात्रि को जागना पड़े तो कटहली की जड़ को शहद में घिस कर केवल सूँघ लेवे तो उस रात्रि को लाख प्रयत्न करने पर भी निद्रा नहीं आयेगी।

## मेघ स्तम्भन

वर्षा तो जीवन है और इसका स्तम्भन क्यों? परन्तु बहुत अधिक वर्षा जब प्राणलेवा बन जाय तो दो हांडियों को लेकर, उनमें श्मशान का अंगारा या कोयला भर दें। इसके बाद दोनों हांडियों का मुख एक दूसरे से जोड़कर एकान्त में गाड़ दें तो वर्षा रुक जाती है।

## नजर

कहते हैं नजर तो पत्थर को भी फोड़ देती है इसलिये यह एक खतरनाक बात हुई। नजर का लगना भी एक आम बात है। इसके उपचार हेतु हर जगह सात मिर्चें (डंडी वाली) लेकर रोगी के ऊपर से सात बार घुमा कर जला दी जाती है। इसके ज़लने से नजर हो तो उतर जाती है। इसी भाँति अन्य भाँति-भाँति के तरीके प्रयोग में लाये जाते हैं। सम्भव हो तो मंगल या शनिवार को हनुमान जी का दर्शन करें। प्रणाम करके उनके दाहिने कन्धे से सिन्दूर लेकर माथे पर टीका लगायें तो पत्थर फोड़ दृष्टि भी समाप्त हो जातीं है। इस प्रयोग के लिंये प्रतिमा सिन्दूर चढ़ी होनी चाहिये। तभी ये प्रयोग किया जा सकता है।

# सफेद आक

यह एक प्रसिद्ध पौधा है। इसे हमारे यहाँ का बच्चा-बच्चा जानता है। शायद ही कोई ऐसी जगह हो जहाँ पर यह न मिलता हो। प्रायः प्रत्येक स्थान पर पाया जाता है। इसे तोड़ने पर काफी दूध निकलता है। यह दूध जहरीला होता है। माना जाता है कि यदि यह दूध नेत्रों की पुतली पर लग जाय तो नेत्र खराब हो जाते हैं। इसके फूल सफेद होते हैं परन्तु सफेद पर कत्थई रंग के दाग दिखायी पड़ते हैं। जिस सफेद फूल पर किसी भी अन्य रंग का दाग हों तो उसे सफेद आक नहीं कहते।

इसे मदार भी कहते हैं। इस पर केवल सफेद पुष्प होने पर सफेद मदार या सफेद आक कहते हैं। यह पुष्प शिवार्चन करने पर शिवलिंग पर चढ़ाने से शिव जी अत्यधिक हर्षित होते हैं। अतः इसे शिवाह्वय भी कहते हैं। इस पर सफेद फूल होते हैं इसलिये इसे श्वेत आर्क भी कहते हैं। यह पौधा जिस द्वार पर रहता है वह द्वार अभेद्य हो जाता है। अर्थात किसी भी भाँति से शत्रुगण उस द्वार के भीतर रहने वालों को हानि नहीं पहुँचा पाते अतः इसे राजार्क भी कहते हैं। यह पौधा गणपति का स्वरूप है शायद इसलिये इस पौधे की जड़ में स्वतः ही गणेश जी की प्रतिमा बन जाती है। अतः इसे गणरूपक भी कहते हैं। गणरूपक को कोई-कोई कणरूपी भी कहते हैं। इसे सदापुष्प भी कहते हैं क्योंकि इसके ऊपर सदा पुष्पों की बहार छाई रहती है, इसी भाँति इस पौधे को इसके गुणों के अनुसार विभिन्न नामों से जाना जाता

है परन्तु प्रचलित नाम सफेद आक ही है।

यह पौधा जहाँ रहता है, वहाँ लक्ष्मी का अटूट भण्डार रहता है। कभी सर्प भी देखे जाते हैं। यह एक दुर्लभ-जाति का पौधा है, जिसकी तलाश में कीमियागिरी का कार्य करने वाले लगे रहते हैं। क्योंकि इस पौधे की सहायता से पारे का सोना बना लिया जाता है। यह सत्य है कि यह दुर्लभ है परन्तु मैंने इसे प्रायः हर नगर में ही कहीं न कहीं देखा। प्रस्तुत विषय पर बात करते हुए मैं इस पौधे के तान्त्रिक प्रयोग बता रहा हूँ।

### तरुण रसायन

जिससे शरीर की पुष्टि हो उसे रसायन कहते हैं। रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र के संयोग में सफेद आक की जड़ प्राप्त करें। घर लाकर इसे दूध से धोयें। सूर्य उपासना करके प्रतिदिन प्रातःकाल के समय खाली पेट ही इस जड़ का चर्ण करके गाय के दूध के साथ सेवन करें। यह प्रयोग सात दिन ही करना है। इतने ही प्रयोग से वृद्ध भी तरुण हो जाता है।

### रक्षा

रविवार को जब पुष्य नक्षत्र हो तब इस वृक्ष की जड़ को खोद करके ले आयें और धूप दीप करके धारण कर लें। अब आपकी रक्षा आक की यही जड़ करेगी। आप कहीं पर भी रहें कहीं पर भी जायें। आपकों कोई भी ऊपरी अलाबला छू भी नहीं सकेगी। माना तो यहाँ तक जाता है कि जड़ के दर्शन मात्र से ही भूत, प्रेत, शाकिनी, डाकिनी, पिशाचादि पलायन कर जाते हैं।

## तिलक वशीकरण

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र का संयोग होने पर इस पौधे की जड़ ले आयें। गाय का घी, गोरोचन के साथ इस जड़ को मिला करके लेप बनायें तथा माथे पर तिलक लगायें। इस तिलक को लगाने वाले के प्रभाव में लोग तो क्या त्रिलोक भी आ जाता है।

## सफेद आक की कलम

यथाविधि इस पौधे की टहनी तोड़ करके सुखा लें तथा उसकी कलम बना करके 'यन्त्र विधान' में दिया गया यन्त्र लिख कर सिर में धारण करें तो देवता भी मोहित होते हैं।

## इच्छा पूर्ति

किसी भी रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब विधिवत सफेद आक की जड़ उखाड़ लाइये। यह जड़ कुछ मोटी होनी चाहिये। यह जड़ उखाड़ते समय निम्नलिखित तथ्य स्मरण रखें।

उत्तर दिशा की तरफ वाली जड़ के प्रयोग से वशीकरण, धन प्राप्ति तथा लक्ष्मी साधना होती है।

पूर्व दिशा की तरफ वाली जड़ के प्रयोग से मान सम्मान की वृद्धि, राजा की कृपा, उन्नति तथा सफलतायें प्राप्त होती है।

दक्षिण दिशा की तरफ वाली जड़ के प्रयोग से रोग, शोक का नाश होता है शत्रु की मृत्यु होती है।

पश्चिम दिशा की तरफ वाली जड़ के प्रयोग से सभी विपक्षियों का सौभाग्य समाप्त हो जाता है।

अब आप जड़ की लकड़ी में गणेश जी की तस्वीर बनायें।

प्रतिमा बना सकें तो अति उत्तम रहेगा।

प्रतिमा एक अंगूठे से बड़ी नहीं होनी चाहिये। क्योंकि घरों में एक अंगुष्ठ प्रमाण से बड़ी प्रतिमा का पूजन नहीं किया जाता। पूजन काल में लाल कनेर के फूल गणेश जी को अर्पित करें, इस पूजन को महीना भर करना होागा। इस काल में हल्के भोजन करें तथा स्त्री सेवन न करें। इस पूजन काल में ॐ गणेशाय नमः का जाप करें।

**'ॐ पंचातकं ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा'** बोल करके गणेश जी का पूजन करें।

**'ॐ ह्लीं पूर्वदयां ॐ ह्लीं फट स्वाहा'** बोल करके गणेश जी की पूजा करने के बाद हवन करते हुए आहुति दें। इसके प्रभाव से मन की इच्छा पूर्ण होती है। हवन करते हुए लाल कनेर के पुष्प, शहद तथा शुद्ध घी की आहुति देनी चाहिये।

**'ॐ ह्रीं श्रीं मानसे सिद्धि करि ह्लीं नमः'** का जप करते हुए लाल कनेर का पुष्प बहती हुई नदी में डाल दें।

### वीय स्तम्भन

यदि किसी व्यक्ति के पास एक से अधिक स्त्रियाँ हों तो सफेद आक की जड़ को कमर में बाँध करके उनसे सम्भोग करें तो उसे दस स्त्रियाँ भी कम रहती हैं अर्थात वह एक ही बार में दस स्त्रियों को सन्तुष्ट कर सकता है। इस प्रयोग के प्रभाव से वह समस्त स्त्रियाँ जिनसे कि मैथुन किया था आजीवन वशीभूत रहती हैं।

यदि किसी को अनेकों स्त्रियों ने उसके पुरुषत्व को चुनौती

दी हो तो वह व्यक्ति सफेद आक की जड़ तथा कमल का पत्ता कमर में धारण करके उनसे मैथुन करे तो सभी को सन्तुष्ट करके स्वयं सौ स्त्रियों से भी पराजित नहीं होगा।

## तिलक

१. सफेद आक की जड़ को बकरी के मूत्र में घिस करके माथे पर तिलक करें तो देखने वाले वशीभूत होते हैं।

२. सफेद आक की जड़ को पीस करके उसमें अपना मिला करके माथे पर तिलक करें तो देखने वाले विपरीतलिंगी उससे सम्भोग की कामना करते हुए बेचैन होकर प्रस्तुत होते हैं।

## सौभाग्यशाली

यदि कोई व्यक्ति अपनी नाभि पर कमल का पत्ता तथा दाहिनी भुजा पर सफेद आक की जड़ धारण करे तो उसके सौभाग्यशाली बन जाने के विषय में कोई सन्देह नहीं रहता।

## दीपक

यदि कोई व्यक्ति सफेद आक का पत्ता तोड़ करके दूध संग्रह करे और उसमें शहद मिला दे। सफेद आक का फल तोड़ कर उसमें से रुई निकाले। इस रुई को एकत्र की गई सामग्री में मिला करके रुई की बत्ती बना के दीया जला दे। इसके बाद स्त्री सम्भोगरत हो तो जब तक दीपक जलता रहेगा तब तक उसे अन्य स्त्री की जरूरत रहेगी। यदि एक ही स्त्री हो तो उसके सन्तुष्ट होने पर दीपक बुझा देना चाहिये क्योंकि दीपक के जलते रहने तक इन्द्री शिथिल नहीं होगी।

### व्याधि और अरिष्ट

सफेद आक की जड़ को भुजा में धारण किये रहने से सभी व्याधि और अरिष्ट समाप्त हो जाते हैं।

### अभेद्य द्वार

यदि सफेद आक के पौधे के किसी घर के द्वार पर लगा दिया जाय और यह पौधा जीवित रहे तो वह द्वार अभेद्य हो जाता अर्थात वह घर सभी टोने-टोटकों से सुरक्षित रहता है।

### श्वेतार्क गणपति

लगभग पच्चीस वर्ष पुराने सफेद आक के पौधे की जड़ के अन्तिम हिस्से से अर्थात नीचे से सातवीं आँख पर गणेश जी की प्रतिमा बन जाती है। अतः धैर्य तथा सावधानी के साथ मिट्टी खोदनी चाहिये।

## गोरोचन

तन्त्र-शास्त्रों में कस्तूरी की ही भाँति एक और कीमती वस्तु होती है जिसे कि गोरोचन कहते हैं। एक तो इसको घिस करके चन्दन की भाँति माथे पर लगाते हैं तो दूसरी तरफ इसकी स्याही बना करके यन्त्र का लेखन करते हैं। यह एक ऐसी वस्तु है जिसके बिना अष्टगन्ध ही नहीं बनती।

कस्तूरी की ही भाँति यह भी असली कम ही मिल पाती है। जिस भाँति कस्तूरी पशु के शरीर में बनती है, इसी भाँति गोरोचन भी बनता है।

गाय के सिर में एक पित्त होता है जिसका रंग भी पीला

होता है। इस पित्त की बनावट गोल, चपटी, तिकोन और लम्बी अलग-अलग भाँति की होती है। जब इसे ताजा-ताजा प्राप्त किया जाता है तो यह मोम की भाँति मुलायम होता है। बाहरी वातावरण में आते ही यह ठोस हो जाता है। प्रत्येक स्थिति में यह पीला ही होता है। कभी-कभी गुलाबीपन की झलक भी मिलती है। कभी-कभी गोरोचन पर काले रंग के छींटे भी दृष्टिगोचर हुए हैं।

गोरोचन को मंगला भी कहते हैं क्योंकि इसके होते अमंगल होता ही नहीं। इसे शिवा भी कहते हैं क्योंकि यह सदा शुभ करता है, रक्षा करता है। इसे बन्दनीया भी कहते हैं। क्योंकि इसे आराध्य को भी चढ़ाते हैं। इसे भूत विद्रावणी भी कहते हैं क्योंकि जहाँ यह रहे वहाँ भूत न रहे। इसे मेध्या भी कहते हैं, क्योंकि इसके सेवन से देह शीघ्र पुष्ट हो जाती है। इसे गोपित्त भी कहते हैं। क्योंकि यह गाय का पित्त है। इसी भाँति इसके अनेकों नाम हैं और इसे अपने गुणों के कारण उसी गुण वाले नाम से परिचय प्राप्त है। इसे सभी जगहों पर गोरोचन कहने से यह प्राप्त हो ही जाती है।

गोरोचन एक सर्वश्रेष्ठ वस्तु है और शायद ही कोई ऐसा कार्य हो जिसमें इसका प्रयोग न किया जाता हो। यहाँ पर मैं आपको कुछ प्रयोग बता रहा हूँ।

## वशीकरण

गोरोचन को घिस करके माथे में टीका लगाने से देखने वाले वशीभूत हो जाते हैं।

**आराध्य की प्रसन्नता**

गोरोचन को घिस करके आराध्य के मस्तिष्क पर टीका लगाने से आराध्य की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

**धन वृद्धि**

गोरोचन को धन स्थान पर रखने से धन की दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती है।

**सौंदर्य वृद्धि**

गोरोचन को उबटन की भाँति प्रयोग करने से देह की सुन्दरता अत्यधिक बढ़ जाती है।

**मंगलदायक**

गोरोचन की ताबीज में भर करके कण्ठ में धारण किये रहने पर मंगल होता है।

गोरोचन को ताबीज में भर करके घर में स्थापन करने से कभी भी घर में अमंगल नहीं होता।

**भूतादि की शान्ति**

गोरोचन को या गोरोचन के लिखे यन्त्र को कण्ठ में धारण करने से भूतादि पलायन कर जाते हैं।

**ग्रह दोष**

गोरोचन को नित्य धारण किये रहने से ग्रहों का दोष समाप्त हो जाता है।

**मोटापे के लिए**

चार जौ के बराबर की मात्रा में गोरोचन लेकर बादाम के साथ खायें। लगभग बीस दिनों में देह मोटी हो जाती है।

**मिर्गी का अन्त**

गोरोचन को दो माशे की मात्रा लेकर गुलाब जल के साथ घिस करके दिन में तीन बार करके तीन दिन तक पिलाने से सारी जिन्दगी मिर्गी नहीं होगी।

## राल

राल नामक एक वृक्ष होता है। इस वृक्ष के तने को गोद करके छोड़ देते हैं। कुछ दिनों में यहाँ पर गोंद सी जम जाती है। इसे उखाड़ करके संग्रह कर लेते हैं। इस गोंद के विविध प्रयोग किये जाते हैं। तन्त्र में राल की जड़ ग्रहण की जाती है। इसके धारण करने से ग्रह बाधा तथा भूतादि की बाधा समाप्त हो जाती है। जड़ के अभाव में राल को ही ताबीज में भर लें।

## कुन्दरु

यह भी शल्लकी नामक वृक्ष की गोंद है। इस गोंद को ही ताबीज में भर करके प्रयोग किया जाता है।

इस ताबीज को खजाने में रखने से धन बढ़ता है।

इस ताबीज को कण्ठ में धारण करने से समस्त ग्रह शान्त हो जाते हैं। धारक को कभी धन सम्बन्धी परेशानी नहीं होती।

## गंध विरोजा

यह अपने नाम से ही सर्वत्र पहचाना जाता है। तथा सर्वत्र उपलब्ध भी है। इसे भी ताबीज में भर करके प्रयोग किया जाता

है। इस ताबीज को कण्ठ में धारण करने से भूत, प्रेत, राक्षसादि की बाधा समाप्त हो जाती है। इसे धारण किये रहने से ग्रह पीड़ा नहीं देते तथा ज्वर भी नहीं होता।

## खोपड़ी

यहाँ पर मृत पुरुष या स्त्री की खोपड़ी के विषय में अनेकों बातें प्रस्तुत कर रहा हूँ।

तन्त्र प्रयोगों में पूर्ण सफलता के लिये एक खोपड़ी की आवश्यकता होती है। अब विचार यह करना है कि कैसी खोपड़ी? इस विषय में सर्वसाधारण की भी मान्यता है कि खोपड़ी तेली की हो तो उत्तम रहता है। आपको मालूम होगा कि अधिकतर तेली मृत देह को पृथ्वी में दबा देते हैं। तान्त्रिक प्रयोगों के लिये किसी भी जली हुई देह की खोपड़ी प्रयुक्त नहीं होती। क्योंकि संस्कार करते समय इसकी कपाल क्रिया कर दी जाती है। यदि आप को कोई ऐसी खोपड़ी मिले, जिसकी कि कपाल क्रिया न हुई हो तो भी प्रयोग कर सकते हैं।

सर्वसाधारण का विचार तथा विद्वानों का विचार है कि यह विषय कापालिक या अघोरी का है अतः वह इसकी उपयोगिता पर ध्यान नहीं देते।

तन्त्र प्रयोगों में आसन की व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। उसके बाद भी दो मुख्य आसन बचते हैं जिन्हें श्री पंचमुण्डी आसन तथा श्री नवमुण्डी आसन कहते हैं।

यह माना जाता है कि श्री पंचमुण्डी आसन पर साधना करने

से दुर्लभ प्राप्तियाँ हो जाती हैं परन्तु शिव तो सोया ही रहता है। वह नहीं जागता, जबकि श्री नवमुण्डी आसन पर साधना करने से शिव भी जग जाते हैं। यह एक विस्तृत विषय है तथा तान्त्रिक साधनाओं में सबसे ऊँचा है। सम्भवतः इसलिये शब्दों के द्वारा प्रस्तुत नहीं किया गया। इन आसनों पर गुरु किसी को भी बैठने ही नहीं देता। यह विषय बहुत आगे का विषय है अतः इस पर फिर कभी बात करेंगे। इस समय हम खोपड़ी के साधारण प्रयोगों की बात करेंगे। साधारण इसलिये कहा है क्योंकि खोपड़ी से ही मनुष्य भयभीत होते हैं और इसे ही वह ले आये तो आगे के कार्यों का भय प्रायः समाप्त ही हो जाता है। अब मैं तन्त्र प्रयोगों में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका का संक्षेप में प्रकाश डालूँगा।

**मुण्ड माला**

कुछ खोपड़ियाँ एकत्र करके मजबूत धागे में पिरो करके माला की भाँति गले में धारण करके श्मशान साधना करने से शीघ्र प्रभाव होता है। यह प्रयोग उपनिषदों के सन्देश 'अहं ब्रह्मऽस्मि' के अनुसार ही है। भगवती काली, भगवती तारा तथा भगवती छिन्नमस्ता की साधना में यह माला शीघ्र फलीभूत होती है।

**जप माला**

खोपड़ियाँ एकत्र करके उनका कपाल तोड़ करके हड्डी एकत्र करके किसी सूत्र में पिरो लें। यह एक सौ आठ हो तो अच्छा रहेगा। इस माला को सदा पर्दे में रखें। इसके द्वारा काली कुल साधक देवी से साक्षात्कार कर पाते हैं। इस जप-माला से श्मशान साधन भी किया जाता है। आगामी पृष्ठों में दिये महाशंख

का विशेष अध्ययन करें।

**मुण्डासन**

एक खोपड़ी लेकर उसके ऊपर बैठ सके तो उत्तम अन्यथा पृथ्वी पर गड्ढा खोद कर दबा दें। इसके ऊपर बैठकर शक्ति उपासना करने से अत्यन्त लाभ प्राप्त होता है। यह आसन साधक के लिए ही नहीं है बल्कि इसके ऊपर देवी की प्रतिमा स्थापित करने से अनेकों चमत्कारों का दर्शन होता है।

## सूर्य दर्शन

आपने सुना होगा तथा सूर्य की तस्वीरों में भी देखा होगा कि सूर्य देव एक रथ पर सवार हैं और उस रथ को कई घोड़े खींच रहे हैं। आपको यह सब काल्पनिक लगता होगा। आज कल इन सब बातों पर सहसा कोई विश्वास नहीं करता। मैं आपको सूर्य का रथ देखने की विधि बताता हूँ।

एक नींबू होता है जिसे कि बिरोजा नींबू कहते हैं इस नींबू के बीज एकत्र करके उनका तेल निकाले या निकलवा लें। इसके बाद ताँबे की एक पतली सी पत्ती लेकर उसके ऊपर यह तेल लगावें। इसके बाद मध्याह्न काल में इस पत्ती के द्वारा सूर्य को देखें। आप आश्चर्य मान जायेंगे। क्योंकि आपको सूर्य देव अपने रथ पर सवार दृष्टिगोचर होंगे।

**मारण**

जिस शत्रु पर मारण प्रयोग करना हो उसकी ताजा विष्ठा लेकर खोपड़ी में रखकर खोपड़ी के ऊपर श्मशान से लायें कोयले

के द्वारा शत्रु का नाम लिखें। इसके बाद पृथ्वी में इस खोपड़ी को दबा देना चाहिये। जैसे-जैसे इसकी विष्ठा सूखेगी वैसे-वैसे वह शत्रु सूखेगा और जब विष्ठा पूरी तरह सुख जायेगी तो शत्रु मर जायेगा।

## पुरुष वशीकरण

जब कभी कोई स्त्री किसी पुरुष से साथ करना चाहे और उसकी इच्छा यह भी हो कि वह पुरुष किसी अन्य स्त्री का साथ न करे तब वह इस प्रयोग को करे।

आप किसी गाय को गिरा हुआ सींग प्राप्त कर लें। यह आसानी से प्राप्त हो जाता है। इसे प्राप्त करके चन्दन की भाँति सिल पर घिसें। इसके बाद घिसे हुए पदार्थ को अपनी योनि पर लेप करके उस पुरुष के साथ सम्भोग करें। बस यही प्रयोग काफी है। इसके बाद वह पुरुष किसी भी स्त्री से सम्भोग नहीं कर जायेगा। क्योंकि दूसरी स्त्री के पास जाने पर उसी ध्वजा सुप्त ही रहेगी।

यह प्रयोग उस स्त्री के लिये सर्वश्रेष्ठ है जिसका पति बिगड़ा हुआ एय्याश हो। यदि कोई अन्य स्त्री इस प्रयोग को करती है तो उससे आनन्द उठाने के पश्चात जब उसे छोड़ना भी चाहेगी तब वह बड़ा सींग ढूँढ करके लायें। उसे भी चन्दन की भाँति घिस करके योनि पर लेप करके उसी पुरुष के संग मैथुन करे तो इसके बाद से वह पुरुष दूसरी स्त्रियों की तरफ आकर्षित हो जायेगा और उसकी ध्वजा भी कार्यरत हो जायेगी।

## पुरुष नपुंसक हो

यदि आप किसी को परेशान करना चाहें तो एक बिच्छू मार करके रख लें। जहाँ पर आपका केन्द्रित व्यक्ति मूत्र त्याग करे वह स्थान स्मरण कर ले। उस व्यक्ति के जाने के बाद उस जगह जहाँ पर कि मूत्र त्याग किया था मरा हुआ बिच्छू गाड़ दें। इस प्रयोग के पूर्ण होते ही उस व्यक्ति की इन्द्री की कार्यक्षमता समाप्त हो करके पुरुष नपुंसक हो जायेगा। पुनः उसे ठीक करने के लिये बिच्छू उखाड़ने पर उसकी नपुंसकता समाप्त हो जायेगी।

## मार्ग विघ्न विनाशक

यदि आपने कहीं पर यात्रा करने जाना हो और आपको यह लगता हो कि मार्ग तमाम विघ्न बाधाओं से पूरित है अर्थात आप को यह लगे कि यात्रा उचित नहीं रहेगी तब भयभीत होकर यात्रा स्थगित न करें, बल्कि यह प्रयोग करें।

समान मात्रा में गन्धक, हरताल तथा विष को पीस करके चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को गाय का मूत्र मिला करके राह में बिखेर दें और यात्रा का शुभारम्भ करें।

इस प्रयोग को करने से मार्ग के सभी विघ्न इस भाँति हट जाते हैं, जिस भाँति सिंह को देख करके जंगल के अन्य प्राणी हट जाते हैं।

## जन्म पर्यन्त शुभता

जब आप अपने जीवन में बार-बार विघ्नों तथा अनिष्टों का

सामना करते-करते थक जायें और कोई भी उपाय कारगर न हो तो इस प्रयोग को अवश्य करके देखें—

लाल गुड़हल की फूलों की माला बना करके नीचे दिये मन्त्र से सौ बार अभिमन्त्रित करें और देवी को चढ़ा दें।

**मन्त्र—'ॐ ख्रीं द्रीं छ्रीं ह्रीं थ्रीं फ्रीं ह्रीं॥'**

इस प्रयोग को करने से क्षण प्रतिक्षण विघ्नों का अन्त होते-होते अनिष्ट का नाश हो जाता है। इस प्रयोग के प्रभाव से जन्म पर्यन्त शुभता रहती है।

## अपना बने

यदि कोई मित्र आपकी तरफ से उदासीन हो जाय और आप उसकी विरह बरदाश्त न कर पायें।

यदि किसी और को भी मित्र बनाना हो तो रविवार के दिन जब पुष्प नक्षत्र हो तब प्रातःकाल घर से प्रस्थान करें। रास्ते में किसी ब्राह्मण के पाँव के नीचे की मिट्टी उठा लें। आगे जाकर किसी गाय की तलाश करें और उसके पाँव की भी मिट्टी उठा लें। अब आप कोई गदहा तलाशें। गदहा मिल मिल जाने पर उसके पाँव के नीचे की मिट्टी भी उठा लें। इस सारी मिट्टी को एक दूसरे में मिला करके धूप दीप करें। इसके बाद स्मरण करें मोहिनी देवी का। प्रयोग करते समय **'ॐ शारदायै नमः'** कह कर उस मिट्टी को जिसके सिर के ऊपर एक चुटसी भी डाल देंगे, वह सदा के लिये वश में हो जायेगा। जैसा चाहें वैसा प्रयोग करें।

# काम विजय

यदि कोई व्यक्ति अपनी शक्ति के साथ विषय भोग करते समय देवी का ध्यान करता है तथा यह भी ध्यान करता है कि पाँच त्रिकोणों वाले मन्त्र की पीठ पर शव बने शिव के ऊपर देवी भैरव जी के साथ आनन्द मग्न होकर विषय भोग में लिप्त हैं और अत्यधिक प्रसन्न हैं। ऐसा करने से अपनी शक्ति के साथ विषय भोग करने वाला व्यक्ति साक्षात कामदेव के समान हो जाता है। ऐसा ध्यान करते हुए वह जो भी इच्छा करता है, वह पूरी तरह सफल होती है परन्तु इस कार्य का समय केवल रात्रि दस बजे से दो बजे तक ही है।

# पृथ्वी पति

यदि कोई व्यक्ति अपने ही घर में अपने इष्ट (कुल देवता) का मन्त्र जपते हुए शवरूपी शिव के ऊपर के ऊपर कंकाल मालिनी का प्रसन्न मुद्रा में ध्यान करता है। इसके साथ ही समूलोत्पाटित केश लेकर अपने वीर्य के साथ श्मशान में जाकर अर्द्ध रात्रि को निर्वस्त्र होकर प्रदान करता है तो वह व्यक्ति निश्चय ही पृथ्वी-पति हो करके हाथी की सवारी करता रहता है।

# रजस्वला योनि

जिस स्त्री का मासिक स्राव हो रहा हो उसे पूर्ण नग्न करके अपने सामने खड़ा करें। योनि से गिरते हुए रक्त को देखते रहें और योनि की पूजा करें। इसके बाद रजस्वला योनि को देखते

हुए मूल मन्त्र का जप करते रहें। जप के समापन पर योनि को जल समर्पण करें। ऐसा प्रयोग करने वाला साधक अवश्य ही देवी के लोक में श्रेष्ठपद पाता है।

## भाग्यशाली प्रयोग

यह प्रयोग स्त्री के लिये है। यदि किसी स्त्री का भाग्य साथ न दे रहा हो। अनेकों प्रयास करने पर भी यदि सफलता न मिल रही हो तो आप अपनी ऐसी सहेली का प्रयोग करें जिस पर भाग्य की कृपा हो। जो सुखी हो, जो सफल हो, जो स्वस्थ हो।

आप उसके घर जायें और किसी भी भाँति जलपान करते समय अपने कपड़े खराब कर लें जिससे कि आप की सहेली आप को पहनने के लिए अपने वस्त्र दे दे। वह वस्त्र जैसे भी हों चलेंगे। इन वस्त्रों को पहन करके घर आ जायें। घर आकर शृंगार आदि करके देवी का पूजन करें। पूजन के पश्चात उन कपड़ों को उतार दें यह भावना करते हुए कि माँ ने आपके क्लेश को इन वस्त्रों में भर दिया है। इसके बाद अपने पति से विषयानन्द में संलग्न हों। आप अपने पति से विषयभोग करते हुए यही विचार करें कि हम नहीं बल्कि भैरव और भैरवी सम्भोग कर रहे हैं। ऐसा करने से आपको अत्यधिक आनन्द भी आयेगा तथा जीवन में सफलता भी प्राप्त करेंगे। यदि आप विषयभोग करते समय अपने पति को भैरव कह कर सम्बोधित करें और आपका पति आपको भैरवी कह कर सम्बोधित करे तो लाभ शीघ्र होता है। इस प्रयोग में आपको एतराज भी नहीं होना चाहिये। क्योंकि आपका

शरीर तो क्षण भंगुर है। वास्तव में संसार का प्रत्येक पुरुष भैरव तथा संसार की प्रत्येक स्त्री भैरवी है।

इस प्रयोग को करने से आपका काम चल जायेगा। अगले दिन सहेली के वस्त्र वापस कर दें और वहाँ से मिलने वाले अपने वस्त्र किसी को दे दें।

इस प्रकार से यह प्रयोग सम्पन्न होगा और आपका भाग्य भी आपका साथ देने लगेगा।

## तिरस्कृत स्त्री

अनादि काल से ही हो रहा है कि पुरुष स्त्री को अपनी दासी के समान मानता चला आ रहा है। इसी कारण आज भी पुरुष-स्त्री का त्याग कर देते हैं। इस त्याग किये जाने में कारण विशेष तो अवश्य ही होते हैं। संसार का उत्पादन करके पालन पोषण करने वाली स्त्री अपनी शक्ति से अनभिज्ञ पति के प्रत्येक अत्याचार को सहती रहती है। यहाँ तक कि वह त्यागी जाने पर भी सिवाय आँसू बहाने के और कुछ नहीं करती। संसार को नवीन भविष्य प्रदान करने वाली इस शक्ति के साथ पुरुषों का बहुत बड़ा अन्याय है। मैं कहता हूँ कि संसार की समस्त स्त्रियाँ अपने भीतर सो रही आध्यात्मिक शक्ति को जगा करके इच्छानुकूल फल प्राप्त करें।

यदि आपके पास एक एकान्त वाला कमरा हो तब यह प्रयोग करें। प्रयोग करने का समय रात्रि दस बजे से दो बजे तक का है। अपने एकान्त कमरे में आकर दरवाजों को भीतर से

भली-भाँति मजबूती से बन्द कर लें। खिड़की पर रंगीन पर्दे लगा दें ताकि कोई देख न सके। अब आप कमरे में धूप जला दें। यदि इसकी गंध से औरों को पता चले तो धूप भी रहने दो। लाल रंग के कम्बल का आसन पृथ्वी पर बिछा दें और अपना भरपूर श्रृंगार करें। इसके बाद समस्त वस्त्र उतार करके चाहें तो बैठ जायें। अन्यथा कमरे में टहलती रहिये। टहलते हुए भावना करें कि आप आप नहीं हैं बल्कि देवी हैं। आप में देवी की शक्ति है। आप देवी की भाँति पुष्ट, सुन्दर तथा सशक्त हैं। ऐसा करने से कुछ ही दिनों में आप अपने भीतर बदलाव पायेंगी। मन प्रसन्न रहा करेगा। जब आप टहलते-टहलते थक जायें या वैसे ही बैठना चाहें तो बैठना चाहें तो बैठकर निम्नलिखित मन्त्र का जप करें।

**मन्त्र—'क्षाँ क्षीं क्षूँ क्षें क्षों क्षँ क्षः ॥'**

## मूत्र बन्दी

आपने यदि किसी शत्रु को परेशान करना हो तो उस शत्रु को अपने निगाह से ओझल न होने दें। ध्यान रखें कि कब वह मिट्टी पर पेशाब करे। जब आप देखें कि शत्रु ने जमीन पर मूत्र त्याग किया है तब आप उसका पीछा छोड़ करके उस पेशाब की हुई जगह से मिट्टी उठा लें और संग्रह कर लें। अब आप एक छछून्दर पकड़ें और रविवार या शनिवार के दिन उस छछून्दर को मार डालें। इसके बाद उसका पेट चीर कर आँतों को फेंक दें और उसमें वह मिट्टी भर दें जो कि शत्रु के मूत्र वाली है। इसके बाद सूई तागे से उसका पेट सिल दें। अब इस छछून्दर को किसी ऊँचे

वृक्ष पर लटका कर बाँध देवें। बहुत ही अच्छा होगा यदि किसी श्मशान भूमि के वृक्ष का प्रयोग किया जाय।

इस प्रयोग के पूर्ण होते ही आपके उस शत्रु का मूत्र बन्द हो जायेगा। इसके कारण उसे बहुत ही कठिन यातना होगी परन्तु इसका हल किसी दवा-दारु से न होगा बल्कि जब तक आप उस छछून्दर को उतार कर उसका पेट फाड़ करके मिट्टी को फेंक न देंगे तब तक वह ठीक नहीं होगा।

## शत्रु नपुंसक हो

उपरोक्त तन्त्र में शत्रु के मूत्र की बात की जा रही थी। इस तन्त्र में भी यही बात की जायेगी। बस, थोड़ा सा अन्तर है। आपको सर्वप्रथम एक बिच्छू मारना है। इस मरे हुए बिच्छू को लिये रहिये और शत्रु का पीछा करें। जब आपका शत्रु पृथ्वी पर मूत्र त्याग करके चला जाये तब उस मूत्र त्यागी जगह पर जाकर एक गड्ढा खोदें। जब गड्ढा खोद चुकें तब मरे हुए बिच्छू को उसमें डाल कर पुनः गड्ढा भर दें और अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त हो जायें।

इस प्रयोग के करने से शत्रु की इन्द्री सुप्त हो जायेगी अर्थात आपका शत्रु नपुंसक हो जायेगा। अर्थात आपका शत्रु किसी भी स्त्री के लायक न रहेगा। वह इस समस्या से बौखला जायेगा परन्तु इसका हल कोई नहीं। इसका हल है तो केवल आपके पास। आप जब उस गड्ढे से बिच्छू निकाल देंगे। आपका शत्रु पुनः ठीक हो जायेगा।

## पति को वश में करने हेतु मूत्र का प्रयोग

जिस स्त्री का पति लम्पट हो और कई स्थानों पर उसके यौन सम्बन्ध हों तो पत्नी के लिये यह स्थिति बड़ी बिडम्बना वाली होती है। ऐसी स्त्री स्वयं तथा समाज का हित करने के लिये यह प्रयोग करें।

स्त्री अपने पति का ध्यान रखे और जब उसका पति भूमि पर पेशाब करके जाये तो वह स्त्री उस मूत्र की हुई जगह से थोड़ी सी मिट्टी अपने पाँचों नाखूनों की चुटकी बना करके उठा ले। इसके बाद किसी कुम्हार का स्थान देख करके वहाँ जाय तथा चोरी से चाक के ऊपर से थोड़ी-सी मिट्टी अपने पाँचों नाखूनों की चुटकी बना करके उठा ले और घर आ जायें। अब दोनों तरह की मिट्टी मिला करके एक गोली बनावें तथा इस गोली में एक छिद्र भी कर दें जो कि आर-पार हो। इस छेद में एक काला धागा डाल करके घर के दरवाजे के ऊपर लटका दें, जब उसका पति द्वार के भीतर चला जाय तो उस धागे तथा गोली को उतार करके पृथ्वी में गड्ढा खोद करके गाड़ दें और उसके बाद यदि अपने पति में व्यस्त होना चाहें तो हो सकती हैं।

इस प्रयोग के करने से पति जीवन भर पत्नी के वश में रहता है तथा कहीं और जाने पर उसकी इन्द्री शिथिल ही रहेगी।

## प्रेमिका मोहिनी बटी

किसी भी रविवार के दिन चौराहे से मिट्टी उठा कर ले आवें। एक मोर का पंख तथा एक पंख हुदहुद पक्षी का भी ले

आवें। इन दोनों पंखों को खरल में अच्छी भाँति पीस करके चौराहे की मिट्टी भी मिला दें और पुनः पीसें। कुछ समय के बाद जब सभी वस्तुयें मिश्रित हो जायें तो अपना वीर्य ले करके इसमें मिला दें। जितनी सामग्री इस वीर्य से भींग सके उतनी ही मिलायें तथा इसकी गोलियाँ बना लें। अब आपके पास किसी भी स्त्री को मोहित कर लेने का रहस्य सुरक्षित हो गया है। आपको जिसे मोहित करना हो उसे यह गोली किसी भी भाँति से खिला दें। बस, बटी को खाने के बाद खाने वाली जीवन भर की गुलामी भी स्वीकार करती है।

## पेड़ा मोहन

अब आप पेड़े के द्वारा मोहन कार्य करें। एक पेड़ा लेकर फोड़ दें। इसे एक प्लेट में रखें। अब अपना वीर्य निकाल कर इस पेड़े में मिला दें। पुनः इसे फूटे पेड़े को एकत्र करके पेड़ा बना लें। यह सारा प्रयोग अमावस की रात्रि में ही करें।

इस पेड़े को लेकर कुम्हार के क्षेत्र में जाकर उसके चाक के पास जा करके बैठें। चाक के ऊपर एक तरफ (बीच में नहीं) पेड़ा रखकर चाक को उल्टा घुमायें। इसे सात बार घुमायें। इसके बाद पेड़ा लेकर घर आ जायें। इस भाँति यह पेड़ा मोहन करने की शक्ति प्राप्त कर लेता है।

अब आपको जिसे भी मोहित करना हो उसे यह पेड़ा खिला दें। इसके प्रभाव से वह स्त्री आपके हुक्म की गुलाम बन जायेगी।

# समाज मोहनी

इस प्रयोग के प्रभाव से पूरा का पूरा समाज ही मोहित हो जाता है, यदि आपको कभी समाज मोहित करने की आवश्यकता हो तब चैत्र मास के कृष्ण पक्ष में अष्टमी तिथि को सन्ध्या के समय चीते का पौधा न्योत करके नवमी की प्रातः को शीघ्र ही जाकर वह पौधा जड़ समेत उखाड़ लें। घर में ला करके इसे धूप दीप करके सहेज लें। इसका एक हिस्सा तोड़ करके जेब में रख लें और प्रस्थान करें। यह हिस्सा जब तक आपकी जेब में सुरक्षित रहेगा तब तक आपको देखने वाले सभी लोग आपको समर्पित रहेंगे।

# स्त्री वशीकरण

१. रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब धोबी घाट पर जा कर किसी धोबी के पैरों के नीचे की धूल ले आयें। इस धूल को रविवार की सन्ध्या के समय जिस स्त्री के सिर पर डाल दिया जायेगा वह मन, वचन और कर्म से आपकी हो जायेगी।

२. मैंने एक यन्त्र 'यन्त्र विधान' नामक पुस्तक में दिया है। उसे अपनी इन्द्री पर लिख करके स्त्री से सम्भोग करें। इसके बाद से वह किसी भी अन्य पुरुष से सम्भोग न कर पायेगी।

# पुरुष वशीकरण

इस प्रयोग के द्वारा किसी भी पुरुष को अपना गुलाम बनाया जा सकता है। इस कार्य के हेतु किसी भी रविवार या मंगलवार

को प्रयोग करने वाली स्त्री अपने बायें पाँव की जूती के वजन के बराबर आटा लेकर चार रोटियाँ पकाये। इन रोटियों पर वही जूती सात-सात बार पटके। इसके बाद इन रोटियों को क्रमश: अपनी योनि से स्पर्श करावे। इस भाँति यह रोटियाँ प्रबल वशीकरण का हेतु बन जाती है। अब आप इन रोटियों को आवश्यक पुरुष को खिला दें।

## माहवारी का रक्त

आज भी यह प्रयोग प्राय: कई स्थानों पर करके गृहणियाँ अपना परिवार सुख से चला रही हैं। इस प्रयोग का प्रभाव केवल एक महीने तक रहता है। अत: प्रत्येक मास में इसका नवीनीकरण करना होता है। इस प्रयोग के प्रभाव से पति क्रोध नहीं करता तथा आराम से घर की फिक्र करता रहता है। कुल मिला करके इस प्रयोग के प्रभाव से घर में सुख शान्ति बनी रहती है। यह प्रयोग भी बहुत आसान है।

जब माहवारी आ रही हो तब एक गिलास पानी में माहवारी के रक्त की सात बूँदें डाल कर पति को पिला दें। इतना करना काफी है।

## माहवारी की सुपारी

यह एक खतरनाक प्रयोग है और इसका प्रभाव जीवन भर रहता है। इस प्रयोग से प्रभावी व्यक्ति को सिवा अपने माशूक के और कुछ भी नहीं सूझता। माना जाता है कि ऐसा व्यक्ति समाज

के लिये व्यर्थ हो जाता है क्योंकि उस आशिक के लिये संसार की हर जरूरत उसका महबूब होती है और वह सदा उससे चिपका-चिपका सा रहता है। इसी कारण मैंने इसे खतरनाक प्रयोग कहा है। इस प्रयोग को करने की विधि निम्नलिखित है—

जब स्त्री को मासिक स्राव प्रारम्भ हो और वह अपनी योनि पर वस्त्र बाँधने लगे तब एक सुपाड़ी अपने योनि के प्रवेश द्वार के पास भीतर की तरफ रख ले। इसके बाद अपनी नित्य क्रिया करती रहे। जब-जब वह रुधिर वाला वस्त्र बदले तब-तब सुपाड़ी का ध्यान रखे। यह सुपाड़ी बाहर न आये तथा नीचे न गिरे। इसी भाँति की सावधानी रखती रहे। जब मासिक स्राव बन्द हो जाय तो यह सुपाड़ी निकाल करके रख लें। यही वह सुपाड़ी है, जो जीवन भर के लिये पागलों जैसी दीवानगी पैदा करती है। यदि कोई स्त्री राँझे, महीवाल जैसे प्रेमी को देखना चाहे तो स्वयं को भी हीर तथा सोहनी की भाँति तैयार करे और यह सुपाड़ी उस व्यक्ति को खिला दे। इसका प्रयोग मजाक के हेतु कभी नहीं करना चाहिये।

## शत्रु वशीकरण

१. मेनसिल, हरताल तथा नीलदूर्वा को लाक्षा के रस में मिला करके स्त्री के दूध में घोंट करके माथे में तिलक लगा कर शत्रु के समक्ष जाने से शत्रु वशीभूत हो जाता है।
२. अपराजिता, महिषकन्द, सहदेवी, गोरोचन को एक साथ पीस करके बकरी के दूध में घिस करके माथे पर टीका

लगाने से शत्रु तो क्या सभी देखने वाले वशीभूत हो जाते हैं।

३. नागकेसर, कुकुम, चमेली, कुष्ठ तथा तगर को पीस करके शुद्ध घी में मिला करके माथे पर तिलक लगाने से वशीकरण होता है।

## शत्रु अन्धा हो

मंगल या शनिवार की रात्रि को श्मशान में जाकर सभी वस्त्र उतार कर आदमजात नंगा हो जायें। यदि शिखा बन्धी हो तो खोल दें। प्रयोगकर्ता के बाल होने के कारण जूड़ा किया गया हो तो सारे बाल खोल करके बिखेर लें। अब वहाँ कोई मुर्दा तलाश करें, यह मुर्दा अधजला भी हो तो भी चलेगा। प्राप्त किये मुर्दे के टुकड़े-टुकड़े करें और यदि मनुष्य का खून मिल सके तो अत्यन्त लाभदायक रहेगा। विष, भूसी तथा हड्डी के टुकड़े का पहले से ही प्रबन्ध कर लेना चाहिये। अब आप जलती हुई चिता तलाशें। नीचे दिये गये मन्त्र को पढ़-पढ़ करके उस चिता में सारी सामग्री एकत्र करके एक सौ आठ बार आहुति दें। इस प्रयोग के करने से शत्रु अन्धा हो जाता है। मन्त्र में अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम बोलें।

**मन्त्र—"ॐ नमो भगवती कोमारी लल लल लालय लालय घण्टादेवी! अमुक मारय मारय सहसा नमोऽस्तुते भगवती विद्ये स्वाहा।"**

## नजर टोक

अक्सर बच्चों को नजर आदि की शिकायत हो जाती है, इस कारण बच्चा बहुत बेचैन रहता है। कहावत है कि नजर तो पत्थर को फोड़ देती है। यदि बच्चे के गले में एक काले धागे में रीठा पिरो करके डाल दें तो नजर का दोष समाप्त हो जाता है और पुनः नहीं होता।

## बच्चों की खाँसी

यह माना जाता है कि खाँसी स्वयं एक रोग न हो करके किसी अन्य रोग का उपद्रव मात्र होता है परन्तु यह खाँसी कभी-कभी बहुत तकलीफ कारक हो जाती है। दवा देने से भी काम नहीं चलता। ऐस समय में निम्नलिखित प्रयोग करने से बहुत ही आश्चर्यजनक ढंग से खाँसी ऐसे गायब होती है कि अपने सारे लक्षण भी साथ ले जाती है।

किसी भी शनिवार के दिन कौवे का बीट उठा लावें। एक काले कपड़े की थैली सी बना करके उसमें बीट डाल कर पुनः मुख बन्द करके सी दें। अब इस थैली को किसी काले धागे की सहायता से रोगी के गले में लटका दें।

## हिस्टीरिया

यह रोग प्रायः स्त्रीयों को हुआ करता है। जब यह रोग किसी भी भाँति से दामन न छोड़े तो किसी भेड़ के शरीर से एक

जूँ पकड़ लायें। इसके बाद कम्बल के रोयें उखाड़ करके इनमें जूँ को छोड़ दें और इस सारी सामाग्री को एक ताँबे के ताबीज में भर करके ताबीज को अच्छी भाँति बन्द कर दें। जिससे कि जूँ बाहर न निकल जाये। अब ताबीज को हिस्टीरिया रोग से ग्रसित रोगिणी के गले में पहना दें।

## अन्न धन भरपूर रहे

प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा होती है कि उसके घर में कभी भी अन्न धन की कमी न हो और वह सदा इसे भरे रखने का प्रयास करता रहता है। इस विषय में यहाँ पर दिया गया यह तन्त्र प्रयोग विशेष प्रभावी है और इस विषय में आपकी भरपूर मदद करेगा। यदि आप चाहते हैं कि आपके घर में सदा अन्न तथा धन का भण्डार भरा रहे तो यह प्रयोग करें—

आप एक ऐसे बरगद का वृक्ष ढूँढें जिसके नीचे एक छोटा-सा बरगद उगा हो तो आप किसी विद्वान से सर्वसिद्ध योग का पता करके यह प्रयोग करें।

जिस दिन सर्वसिद्ध योग हो उससे एक दिन पहले वहाँ पर जाकर छोटे बरगद के वृक्ष को न्यौत आयें। दूसरे दिन जब कि सिद्धयोग बताया गया हो आधी रात को नंगा होकर वहाँ जायें तथा इस छोटे वृक्ष को जड़ समेत उखाड़ लायें। घर लाकर उसकी धूप दीप से पूजा करें और किसी शुद्ध स्थान पर उसे रख दें। वह वृक्ष जब तक आपके घर में रहेगा, तब तक आपके घर में अन्न तथा धन की कमी नहीं आयेगी।

# दिन में तारे दिखायी दें

यदि आप सूर्य की तेज रोशनी होने पर भी तारे देखना चाहें तो अगस्त वृक्षा के फूलों का रस निकालें। इस रस में श्वेतांजन (सफेद सुरमा) को सात दिन तक खरल करें। इसके बाद इसे शीशी में बन्द करके रख लें। आप दोपहर के समय इसे आँखों में काजल की भाँति लगायें और आकाश की तरफ देखें तो आप को दिन में भी आकाश पर सितारे टिमटिमाते हुए दिखायी देंगे।

माना जाता है कि सफेद रंग के फूलों वाली टहनी पर भी यदि दिन में पाँव रख करके आसमान को देखा जाय तो सूर्य की तेज रोशनी के बावजूद भी तारे दिखायी देते हैं।

माना जाता है कि सफेद फूलों वाले ढाक के वृक्ष पर चढ़ करके भरी दोपहरी में भी आकाश को देखने से सितारे दिखायी देते हैं।

# पृथ्वी में छुपा धन दिखे

काले धतूरे की जड़ व छितवन की जड़ प्राप्त करें। यह जड़ें प्राप्त करते समय सिर के सभी बाल बिखेर लें। घर में आ कर इन जड़ों की छाल को उखाड़ लें। इसे किसी ताबीज में भर लें। या ऐसे ही प्रयोग करें। इन छालों को एक साथ मुख में रख लें या धारण कर लें। ऐसा करने से पृथ्वी के अन्दर छुपी हुई धन-सामग्री यदि हो तो दिखायी पड़ती है।

## अदृश्यकरण

अशोक तथा चित्रक की जड़, खन्जन की बीठ, घोड़े के मुख वाला फेन, सेहजनें के बीज तथा नीलकण्ठ पक्षी की दोनों पुतलियों को प्राप्त करके धूप दीप करें और ताँबे की ताबीज में भर लें। इस ताबीज को जब भी मुख डाला जायेगा तब ही वह व्यक्ति अदृश्य हो जायेगा।

## मारण

यदि गिरगिट की चर्बी का तेल निकाल करके जिसके शरीर पर डाल दिया जायेगा वह अवश्य मर जायेगा।

## रोगनाशक

काँसे के एक पात्र में भर करके '**क्रीं**' से सात बार अभिमन्त्रित करके रोगी को पिलाने से रोग समाप्त होता है।

## संसार वशीकरण

चन्दन को शिला पर घिस करके '**क्रीं स्वाहा**' से अभिमन्त्रित करके माथे पर तिलक लगायें तो संसार का वशीकरण होता है।

## भय नाशक

थोड़े से चावल लेकर '**क्रीं ह्रू ह्रीं**' से सात बार अभिमन्त्रित करके स्थान पर या रोगी को मारने से उसके सभी भय समाप्त हो कर भय के कारण का निवारण हो जाता है।

## शत्रु नाशक

किसी श्मशान में जाकर सारे वस्त्र उतार कर नंगा हों तथा सिर के बाल खोल कर बिखेर लें। अब जलती हुई चिता के पास आकर '**क्रीं ह्रीं हूँ स्वाहा**' से चिता को अभिमन्त्रित करे। इसके बाद जब यह चिता शीतल हो जाये तो उसकी राख लेकर शत्रु के घर में डाल दें। ऐसा करने से शत्रु की मृत्यु हो जाती है।

## आकर्षण

यदि कोई व्यक्ति आपका काम बिगड़ने पर तुला हो या किसी के पास आपका कोई काम फँसा हो तो '**त्रीं त्रीं त्रीं**' का जाप करते हुए उसके पास जायें। वह आप के काम से मना नहीं करेगा।

यदि किसी को वशीभूत करना हो तब इसका जप करते हुए आवश्यक व्यक्ति के पास जायें। आप जैसा कहेंगे, वैसा ही वह करेगा।

## पृथ्वीपति

काली कुल में दीक्षित व्यक्ति श्मशान में जाकर निर्वस्त्र होकर केश खोल करके अपने इष्ट का ध्यान करते हुए अपने मन्त्र का जप करता रहे। जप के समापन पर सफेद आक के फूल के साथ अपना वीर्य मिला करके एक हजार बार अर्घ्य की भाँति श्मशान में चढ़ायें तो वह व्यक्ति अचानक पृथ्वीपति अर्थात राजा बन जाता है।

## परम पद

जो व्यक्ति लाल गुड़हल के पुष्पों के किसी स्त्री की योनि को निर्वस्त्र करके देखते हुए उसकी योनि के सम्मुख अपने मन्त्र का जप करते हुए योनि का पूजा करता है तो वह गन्धर्वों का पति होकर कवियों में श्रेष्ठ स्थान पाकर नाम कमाता तथा अन्त में निश्चय ही परमपद में लीन हो जाता है।

## वशीकरण

बट की जड़ तथा विदारी कन्द को एक साथ कूट करके रख लें। आवश्यकतानुसार इसे चन्दन की भाँति घिस करके तिलक करें। इस तिलक को जो भी देखे वशीभूत हो।

## स्त्री वशीकरण

आप किसी स्त्री को वशीभूत करना चाहते हों और उस पर कोई प्रयोग न चलता हो या वह हठी मन वाली हो या अपने स्त्रीत्व को पूरे जी-जान से बचा रही हो। आप को प्रथम तो ऐसी स्त्री को त्याग देना चाहिये क्योंकि किसी का व्रत खण्डित नहीं करना चाहिये। इस पर भी यदि आप उस पर अत्यधिक मुग्ध हो चुके हों और कोई चारा न रहे तो यह प्रयोग करें। काले चने के तीस बीज (चने) लें। इन्द जौ को पन्सारी से प्राप्त करें। गोदन्त का स्वयं प्रबन्ध करें। किसी दाँतों के डाक्टर के यहाँ से नर का दाँत चुरा लें इस प्रकार आप चार वस्तुओं का संग्रह करेंगे। इन्हें एकत्र करके अच्छी भाँति पीस लें। जब यह पिस जावे तो तेल में

मिला करके माथे पर टीका लगा करके उस स्त्री से मिलें। उसे सम्बोधित करें ताकि वह आपका टीका देख सके। जैसे ही वह आपका टीका देखेगी वह आपके लिये व्याकुल हो जायेगी।

## विघ्न

प्राय: घरों में जाने या अन्जाने कई भाँति के विघ्न प्रस्तुत होते रहते हैं। इन विघ्नों का कारण यदि दिखायी दे तो व्यक्ति उसे दूर कर लेता है परन्तु अदृश्य विघ्नों का कारण प्राय: परेशान करता ही रहता है। ऐसी स्थिति का अन्त करने के लिये निर्गुण्डी का जड़ लाकर घर में स्थापित कर दें। आपके द्वारा इस जड़ को लाते ही घर के समस्त विघ्न समाप्त हो जायेंगे।

## बारहसींगा

बारहसींगे के सींग का एक ताबीज सा बना लें। आपको जितनी भी इच्छा हो उतने ही बना सकते हैं। इन ताबीजों को जिसके गले में डाल दिया जायेगा और वह जब तक पहने रहेगा तब तक उसे सर्प काटने का खतरा नहीं होगा अर्थात उसे साँप नहीं काटेगा।

## प्रेमोन्माद

यदि किसी पुरुष में तथा स्त्री में प्रेम परस्पर बहुत बढ़ जाय और सामाजिक नियमों का उल्लंघन होने की स्थिति आ जाय तथा किसी कारणवश उनकी शादी भी सम्भव न हो। हो सकता है

कि वह शादी-शुदा होकर दूसरे घरों से हो अर्थात पुरुष की पत्नी भी हो तथा स्त्री का पति भी हो। चाहे कारण जो भी हो यह प्रेमोन्माद जब असह्य हो जाय तो एक व्यक्ति यह प्रयोग करे।

एक ऐसी कब्र तलाश करें जिसके ऊपर एक संगमरमर का पत्थर लगा हो। इस पत्थर के ऊपर कब्र में सो रहे व्यक्ति का विवरण होगा। इस पत्थर को फोड़ लायें। इसे चन्दन की भाँति जल में घिसें। इस जल को किसी अन्य पेय पदार्थ में मिला करके उस स्त्री तथा पुरुष को अलग-अलग पिला दें। इस प्रयोग के करते ही अर्थात उस जल हो पीते ही उनका प्रेमोन्माद समाप्त हो जायेगा।

## पपीते के बीज

यदि आपके पास अपनी रक्षा को कोई प्रबन्ध न हो और आपको लग रहा हो कि कोई मन्त्र प्रयोग करके आपके जीवन को समाप्त करना चाहता है। ऐसी स्थिति में आप पपीते के बीज लेकर ताँबे के ताबीज में भर लें और इसे कण्ठ में धारण कर लें उसके प्रभाव से आप पूरी तरह सुरक्षित रहेंगे और दृष्टि दोष भी नहीं होगा।

## नजर बट्टू

एक रुद्राक्ष, चाँदी का चन्द्रमा, ताँबे का सूर्य, सफेद घुघंची (रत्ती), शेर का नाखून तथा रावटी को एक-एक धागे में पिरो करके बच्चे के गले में डाल देने से यह नजर बट्टू का कार्य

करता है। इसके पहनते ही किसी की नजर नहीं लगती तथा भूत-प्रेत की बाधा से भी बचाव होता है।

## स्तम्भन

श्मशान में जाकर एक कोयला उठा लायें। एक लोहे की कलम से उस कोयले के ऊपर **'ह्रीं'** को तीन बार गोदें। इसके मध्य उसका नाम लिखें, जिसका कि स्तम्भन करना हो। अब आप बायें हाथ से एक गड्ढा खोदें और उस गड्ढे में उस कोयले का मुख नीचे की तरफ करके रख दें और गड्ढ़ा भर दें।

इसके प्रभाव से यह व्यक्ति तब तक स्तम्भित रहता है, जब तक यह कोयला दबा रहता है।

## बुद्धि स्तम्भन

यदि कोई व्यक्ति आपको बार-बार हानि पहुँचा रहा हो और आपका तिरस्कार भी कर रहा हो तो उल्लू की विष्ठा लेकर सुखा लें। इस सूखी हुई विष्ठा से थोड़ी सी विष्ठा लेकर अपने शत्रु को पान में रख करके खिला दें। ऐसा करने से वह हत्प्रभ हो जायेगा। उसकी बुद्धि का सदा के लिये स्तम्भन हो जायेगा।

## पूर्ण सफलतायें

यह प्रयोग अत्यन्त आसान भी है तथा अत्यधिक खतरनाक भी, क्योंकि इस प्रयोग में साँपों की आवश्यकता पड़ती है। आप अपनी जेब में लाल रंग का वस्त्र लेकर वन की सैर करें तथा ऐसे

अवसर की ताक में रहें जबकि आपको सर्प विषयभोग करता हुआ मिले। जब दीखे तो स्वयं को सुरक्षित करके वह लाल कपड़ा उनके ऊपर फेंक दें। यह प्रयोग आसान इसलिये है क्योंकि केवल वस्त्र फेंकना है और यह खतरनाक इसलिये है कि यदि साँपों ने आपको देख लिया तो आपकी खैर नहीं हो सकती। इसी कारण स्वयं को बचाते हुए, छुपाते हुए वह वस्त्र उनके ऊपर फेंकना है। जब सर्प वहाँ से चले जायें तब उस वस्त्र को उठा करके सहेज लें। इसे अपने जेब में रखें। जहाँ पर भी जायेंगे, आपको पूर्ण सफलता मिलेगी।

## सर्व सिद्धियाँ

आप जब स्नान करने लगें तब जल में ही अपनी अंगुली से एक त्रिभुज बनायें। इस त्रिभुज में **'ह्रीं'** बीज लिखें (यदि शक्ति प्राप्त करनी हो।) इसमें **'क्लीं'** बीज लिखें (यदि वशीकरण करना हो।) यदि मोक्ष प्राप्त करना हो तो **'ॐ'** बीज लिखें। इस त्रिभुज में डुबकी लगा-लगा करके स्नान करें। इसे तान्त्रिक स्नान कहते हैं।

इस प्रयोग को करने से सारे दिन की रक्षा प्राप्त होती है। मन प्रसन्न रहता है तथा सभी विघ्नों का अन्त होकर सर्व सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

## स्त्री सम्मोहन

जब रविवार को पुष्य नक्षत्र हो तब विधिवत ब्रह्मदण्डी को

उखाड़ लायें तथा इसे सुखा करके चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को जिस स्त्री के सिर पर डाला जायेगा वही पीछे लग जायेगी।

ब्रह्मदण्डी पन्सारी से मिल जाती है परन्तु इसे यदि स्वयं ही उखाड़ करके लाया जाय तो अधिक उत्तम रहता है। ब्रह्मदण्डी का पौधा दो या तीन फीट तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते भाले की नोक के सदृश्य होते हैं। इन पत्तों पर काले छोटे चकत्ते पड़े होते हैं। इसके फूल नारंगी रंग के होते हैं। इसके फल काँटेदार होते हैं। यह पौधा मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, कोंकण तथा आबू पर्वत शृंखला में पाया जाता है।

## औदुम्बर

गूलर के वृक्ष को औदुम्बर या उदुम्बर कहते हैं। यह वृक्ष होता है और प्रायः प्रत्येक स्थान पर पाया जाता है। सभी लोग इसे पहचानते भी हैं। इस वृक्ष के अनेकों प्रयोग हैं परन्तु यहाँ पर दो विशेष प्रयोग बता रहा हूँ।

जब रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो तब इसकी जड़ प्राप्त करके घर लायें। इसे धूप दीप करके धन स्थान में रख दें। यदि इसे धारण करना चाहें तो स्वर्ण के ताबीज में भर करके धारण कर लें। जब तक ये ताबीज आपके पास रहेगा या जब तक यह जड़ आपके धन स्थान में रहेगी तब तक आपको कोई कोई कमी न आयेगी। घर में सन्तान सुख उत्तम रहेगा। यश की प्राप्ति होती रहेगी। धन सम्पदा भरपूर रहेगी। सुख शान्ति से सन्तुष्ट रहेंगे।

यदि आप इस जड़ का प्रयोग चन्दन की भाँति चन्दन के

स्थान पर करेंगे तो जो भी आपको देखेगा वह आपसे प्रेम करने लगेगा।

## वशीकरण गुटिका

आप सरसों तथा देवदार को पीस करके किसी भी पदार्थ से भींगो करके गोली बना लें। इस गोली को सुखा करके अपने पास रखें। जिसको वशीभूत करना हो तो अपने मुख में यह गोली रख करके उससे बातें करें। इस प्रयोग से सामने वाला व्यक्ति अवश्य ही वशीभूत हो जाता है।

## योनी बन्धन

यह दुष्ट प्रयोग है क्योंकि इससे अकारण ही दूसरों को कष्ट पहुँचता है। किसी को यूँ ही कष्ट न पहुँचायें। यह करना आवश्यक ही हो तो निम्नलिखित प्रयोग करें।

पूर्व दिशा में उगी हुई लाँगली की जड़ ले आयें। जिस स्त्री की योनी बाँधनी हो उसके बायें पाँव के नीचे की धूल लेकर लाँगली की जड़ के साथ मिलाकर किसी सीप में बन्द कर दें। इस सीप के ऊपर किसी वस्तु से लेप कर दें। इसके प्रभाव से स्त्री की योनी बन्ध जायेगी।

## मोहिनी धूप

काकड़ासींगी, वच, उशीर, राल, छोटी इलायची तथा मलयगिरी चन्दन मिला करके कूट-छानकर रख लें। इसे कुद

अँगारों पर डाल कर गूगल की भाँति धूप करें। स्त्री इसे अपने सारे शरीर पर, वस्त्रों पर तथा घर में करें। इसके प्रभाव से मिलने-जुलने वाले सभी लोग मोहित होते हैं।

## वीर्य स्तम्भन

छुई मुई की जड़ तथा भटिका को पीसें। इन्हें ताँबे के किसी पात्र में घिसें और सन्ध्या के समय नेत्रों में अंजन की भाँति लगायें। इसके प्रभाव से पाँच घण्टे तक वीर्य रुका रहता है।

## गृह शान्ति

प्रायः घरों में कलह होती है और कहावत है कि जिस घर में कलह बसे, वहाँ से अन्न, धन भागे। ऐसा देखने में आया है कि जिस घर में कलह होती है वहाँ की स्थिति बड़ी ही विकट हो जाती है। प्रायः घरों को बरबाद होते ही देखा गया है। यह एक बड़ा ही चिन्ता करने का विषय है। इस समस्या से सबसे अधिक प्रभावी घर की गृहणी तथा बच्चे होते हैं। यह कलह यदि भयानक हो तो घर के बच्चे भयभीत होकर मानसिक तथा शरीरिक रूप से रोगी हो जाते हैं। इस समस्या को सुलझाने के लिये घर की स्त्री यह प्रयोग करे।

किसी पूर्णिमा के दिन प्रातःकाल शय्या त्याग कर उठें और नहा-धोकर गूलर के वृक्ष के पास जायें। यह प्रयोग तभी सम्भव होगा, जब गूलर लगे हुए हों। आपके घर में जितने प्राणी हों उतने ही गूलर तोड़ लें। इन्हें लेकर घर आ जायें। वापस आते हुए

जितने गूलर लिये थे, उतने ही पत्ते भी तोड़ लायें।

घर में आकर घर की सफाई करें। सभी द्वार अच्छी भाँति बन्द करें। यह प्रयोग अकेले ही करना होगा। पुनः स्नान करें। अपने केश बिखरा लें। उत्तर दिशा की तरफ एक पटरा रखें। यह पटरा आम का हो। अब आप अपने सारे वस्त्र उतार दें। पटरे के सामने बैठ जायें। इस पटरे पर सभी पत्ते अलग-अलग रखें। इन पत्तों के आगे गूलर का प्रत्येक फल रखें। अब आप एक लोटे में जल लेकर उन पर छिड़कावा करें। प्रत्येक फल को धूप प्रदान करें। सिन्दूर, कुमकुम, चढ़ायें तथा दीप प्रदर्शित करें। आप समझ लें कि आपने प्रत्येक फल का पंचोपचार से पूजन करना है। इसके बाद यदि चाहें तो निम्नलिखित मन्त्र का जाप करें—

**मन्त्र—'क्रीं क्रीं क्रीं हुँ फट्।'**

मन्त्र का जाप करते हुए आप इन फलों को ध्यान से देखें। आप कल्पना करें वह सब कारण जिनसे कलह होती थी इन फलों में आ गये हैं। देख सकने से पश्चात पत्तों के ऊपर दही तथा चावल एक-एक चम्मच डालती जायें। यह सामग्री फल को चढ़ायें। इसके बाद आप यहाँ पर किसी को न आने दें। अब आप वस्त्र पहन करके अपने घर का काम-काज कर सकती हैं।

शाम को जब सूर्यास्त हो जाये तो एक काला कपड़ा लेकर इस पटरी के पास आयें और समस्त वस्त्र उतार करके पटरी पर पड़ी सारी सामग्री इस पोटली में रख कर पोटली को उठा लें। पोटली उठाने से पहले अपने वस्त्र को पहने लें। अब पोटली को लेकर मुख्य द्वार पर आयें। मुख्य द्वार पर इस पोटली से सात बार

आघात करें और द्वार से बाहर निकल जायें। आराम से चलते हुए किसी भी चौराहे या पीपल के नीचे इस पोटली को डाल करके बिना वापस मुड़े आगे बढ़ते हुए दूसरे मार्ग से घर आ जायें।

इस रात्रि को विषयभोग न करें। श्रृंगार न करें। हल्का भोजन करें। गोश्त, मदिरा का सेवन न करें। आशा है कि आपको इससे लाभ अवश्य होगा और आप प्रसन्न होंगी।

## प्रबल स्त्री वशीकरण

पहले मैंने सुपारी प्रयोग कहा जिससे कि पुरुषों को दीवाना किया जाता है। अब स्त्री वशीकरण कहता हूँ जिसके द्वारा खतरनाक वशीकरण होता है अर्थात वशीभूत हुई स्त्री सदा साधक के पास रहना चाहती है।

इस प्रयोग के लिये दो स्वच्छ फूलदार लौंग ले जायें। शुक्ल पक्ष के रविवार को या कृष्ण पक्ष के मंगलवार को इन लौंगों को लेकर एक कटोरी में रख दें। लौंगों को वीर्य में तर करें और किसी ऊँची जगह पर रख दें। जब वीर्य सूख जाय तो इन लौंगों को प्राप्त करके किस ब्लेड या चाकू से प्रत्येक लौंग के दो टुकड़े कर लें। इस भाँति चार टुकड़े हो जायेंगे। इन्हें अलग-अलग ही रखें। प्रयोग करते समय एक लौंग फूल वाला किसी वस्तु में मिलाकर खिला दें। अब आप इसके प्रभाव का आनन्द उठायें।

इस प्रयोग के प्रभाव से स्त्री कभी भी आप से अलग नहीं होगी। सदा सर्वदा आपके ही साथ, आपको समर्पित रहेगी। इन

प्रयोगों को करने से स्त्री प्रायः घर परिवार के लिये व्यर्थ ही हो जाती है। अतः ऐसे प्रयोग किसी विशेष स्थिति में ही करना चाहिये।

## लौंग वशीकरण

आप देख रहे होंगे कि तन्त्र प्रयोग के सभी प्रयोग कितने आसान तथा शीघ्र प्रभावी हैं परन्तु इसके छिपे हुए प्रभावों से आप अपरिचित नहीं हैं। एक बात सदा याद रखें कि जो वस्तु तान्त्रिक प्रयोग करके खिलायी लाती है, वह सदा सर्वदा शरीर में सुरक्षित रहती है जबकि रात्रि का खाया भोजन पचके मल के रूप में निष्कासित हो जाता है।

इससे पहले लौंग का वीर्य के साथ प्रयोग कहा गया। यदि आप वीर्य न निकालना चाहें तो मंगलवार की रात्रि को एक फूल वाला लौंग लेकर अपनी जननेन्द्रिय के मुख में रख लें। रात भर उसे पड़ा रहने दें। बुधवार की प्रातः इसे निकाल लें।

इस लौंग को जिस स्त्री को खिलाया जायेगा, वही तीनों वचनों से सांसारिक नियमों की अवहेलना करते हुए आपको प्राप्त होगी।

यह एक प्रबल वशीकरण प्रयोग है अतः इसे सावधानी के साथ करना चाहिये।

## अशोक

इस वृक्ष को पार्कों में, स्कूलों में व बंगलों में तथा घर की

क्यारियों में शोभा के हेतु लगाते हैं। इससे प्रायः सभी परिचित भी हैं। यह वृक्ष प्रायः दो प्रकार का होता है। एक वृक्ष के पत्ते रामफल सदृश होते हैं। इसके ऊपर नारंगी रंग के फूल आते हैं। इस वृक्ष पर माघ तथा फाल्गुन में पुष्प खिलते हैं। इस वृक्ष की दूसरी जाति के पत्ते आम के पत्तों की भाँति होते हैं। इसके फूल सफेद रंग के होते हैं। इस सफेदी पर पीले रंग की झाँईं होती है। इसके ऊपर चौमासे में फल लगते हैं जो कि कच्चा होने पर नीले रंग का तथा पक जाने पर लाल रंग का हो जाता है। यह वृक्ष जिस द्वार पर लगते हैं वहाँ पर धन-धान्य की कमी नहीं रहती। इस वृक्ष के नीचे बैठ करके शक्ति साधना करने से शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

अशोक को शोकनाश भी कहते हैं, क्योंकि इसे घर में लगाने से तथा धारण करने से व्यक्ति को शोक नहीं होता। इसे अंगना प्रिय भी कहते हैं, क्योंकि इससे आँगन की शोभा बढ़ती है। इसे स्त्रीनिरीक्षणदोहद भी कहते हैं क्योंकि इसे खाने से स्त्री के रोग समाप्त होकर सौन्दर्य वृद्धि होती है।

### सफलता हेतु

अशोक वृक्ष का एक पत्ता तोड़ करके सिर में धारण करने से जहाँ पर भी जाओ सफलता प्राप्त होती है।

### धन सम्बन्धी

अशोक वृक्ष की जड़ को विधिवत् ग्रहण करके धारण करने से कभी भी धन की कमी महसूस नहीं होती। इस जड़ को धन स्थान में रखने से सदा बरकत बनी रहती है।

## दारिद्रय नाशक

यदि भाग्य में हो दरिद्रता लिखा करके जन्म लिया है तो निराश न हों। अशोक वृक्ष के फूल को प्रतिदिन सिल पर पीस करके शहद के साथ मिला करके खायें। कुछ दिन निरन्तर खाते रहने से दरिद्रता का अन्त हो जाता है। इस प्रयोग काल में धनदा देवी का पूजन करते रहें।

## रोग नाशक

यदि अशोक वृक्ष की छाल को उबाल करके पिया जाय तो स्त्री के सारे रोग नष्ट हो जाते हैं। इसे निरन्तर प्रयोग करने से स्वास्थ्य सुधर करके सौन्दर्य वृद्धि होती है।

## चिन्ता नाशक

यह माना जाता है कि चिन्ता चिता की खान है। अतः चिन्ता नहीं करनी चाहिये। प्रयास करने पर भी यदि चिन्ता न हटे तो आप अशोक के तीन पत्ते लेकर प्रातःकाल ही निराहार मुख से चबायें। ऐसा कुछ दिन करने से चिन्ता समाप्त होकर शरीर स्वस्थ हो जाता है।

## समस्त लाभ

यदि अशोक वृक्ष के बीजों को ताँबे में भर करके ताबीज बना लें और कण्ठ में धारण कर लें तो सभी भाँति के लाभ प्राप्त होने प्रारम्भ हो जाते हैं।

## देवी साधक

अशोक वृक्ष काकुल वृक्ष माना जाता है अतः देवी के उपासक इस वृक्ष को जल द्वारा सींचते रहें। प्रतिदिन जल अर्पण करें। जल

चढ़ाते समय अपना इष्ट मन्त्र जपते रहें। ऐसा करने से देवी की प्रसन्नता शीघ्र प्राप्त होती है।

## बाँदा (विभिन्न प्रकार के)

तन्त्र प्रयोगों में बाँदा अत्यधिक प्रयोजनीय है। इसे जानते तो सभी हैं परन्तु सही ढंग से परिचित नहीं हैं। इसे बन्दा समझते हुए लोग मानव आकृति को ही ढूँढ़ते रहते हैं जबकि बाँदा अक्सर देखने में आता है, यह माना जाता है कि यह वृक्ष का रोग है। अब यह रोग हो या शोक हो, हमारे तो काम की वस्तु है अतः इस पर विशेष ध्यान दें।

आपने देखा होगा कि किसी-किसी वृक्ष के ऊपर दूसरा वृक्ष उग जाता है या बेल (लता) ही उग जाती है। यह प्रायः वृक्ष के सन्धिस्थल पर उगता है। माना जाता है कि यह कौवे के द्वारा विष्ठा करने पर हो जाता है क्योंकि वह जो बीज खाता है वही विष्ठा के साथ निकल कर बाँदे का रूप ग्रहरण करता है। यह स्थिति अपवाद भी है क्योंकि कुछ ऐसे भी बाँदे देखे गये हैं जो कि कौवे की विष्ठा से नहीं हुए थे। यदि आपने कभी बाँदे पर ध्यान नहीं दिया तो पीपल का वृक्ष देखें। आशा है कि उस पीपल के वृक्ष पर दूसरा विभिन्न पौधा उगा हुआ मिलेगा। यदि न दिखे तो कोई पुराना वृक्ष तलाश करें और उसमें बाँदा देखें। आपको अवश्य ही बाँदे का दर्शन होगा।

मुख्यतः एक वृक्ष के ऊपर दूसरी जाति का वृक्ष या लता होना ही बाँदा कहलाता है। कहीं-कहीं पर वृक्षों के सन्धि स्थल

की गाँठों को ही बाँदा माना जाता है जो कि अपने लाभ प्रस्तुत करने में असमर्थ रहता है। इसमें कुश का बाँदा अपवाद है क्योंकि यह गाँठ युक्त ही पाया गया है।

इन बाँदों का हमारे तन्त्र प्रयोग में बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। आइये! अब विभिन्न वृक्षों के बाँदों के नाम पर वार्ता करें।

## शिरस का बाँदा

यदि आपको शिरस वृक्ष पर बाँदा मिले तो पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में प्राप्त करें। यथाविधि उसे सिर पर धारण करने से धारक अभय हो जाते हैं। इसे दुग्ध के साथ सेवन करने से वीर्य वृद्धि होकर आत्मबल बढ़ जाता है।

## बेर का बाँदा

यदि आपको बेर के वृक्ष पर बाँदा मिले तो उसे स्वाती नक्षत्र में यथाविधि ग्रहण करके हाथ में धारण करें। इस बाँदे को धारण करके आपे जिसे हाथ जोड़कर जो काम करने के लिये कहेंगे, उसे वह अवश्य करेगा। देव उपासना में भी इस बाँदे को हाथ में धारण करके देवता से निवेदन करेंगे तो वह निवेदन भी पूर्ण होता है।

## बाँदे का तिलक

आम का बाँदा तथा शाखोट वृक्ष का बाँदा ग्रहण करके गोखरु लें। इनसे चौथा हिस्सा नमक लेकर सारी सामग्री को घिस करके बकरी के दूध से माथे पर तिलक करें। इस तिलक के लगाने से पृथ्वी, वायु तथा आकाश में गुप्त हुए रहस्य प्रकट हो जाते हैं।

## बहुवार का बाँदा

यदि आपको बहुवार वृक्ष पर बाँदा मिले तो उसे मघा नक्षत्र में यथाविधि प्राप्त कर लें। इसे धारण करने से या धन स्थान में रखने से कभी भी धन की कमी नहीं होती।

## अनार का बाँदा

यदि आपको कभी अनार के वृक्ष पर बाँदा मिले तो उसे पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में यथाविधि ग्रहण करें। इसे धारण करने से धन भरपूर रहता है।

## बिदारी कन्द का बाँदा

यदि बिदारी कन्द का बाँदा मिले तो पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में प्राप्त करें। इसके रखने से धन की किल्लत नहीं रहेगी।

## कुश का बाँदा

यदि कभी कुश में बाँदा दिखे तो उसकी रक्षा करें और जब भरणी नक्षत्र हो तब इसे प्राप्त कर लें। इस बाँदे को जहाँ भी रखा जायेगा, वहीं पर धन सम्पदा भरपूर रहेगी।

## गूलर का बाँदा

यह बाँदा प्रायः आराम से ही प्राप्त हो जाता है। आप गूलर के वृक्ष पर बाँदा देख करके उसका ध्यान रखें। जब रोहिणी नक्षत्र हो तब उस बाँदे को प्राप्त कर लें। यह बाँदा जहाँ भी रहेगा वहीं पर धन-अन्न भरपूर रहेगा। इस बाँदे को खाने व धारण करने से खाने वाला शक्तिशाली हो जाता है।

## थूहर का बाँदा

यदि कभी आपको थूहर के ऊपर कभी बाँदा दृष्टिगोचर हो

तब कृत्तिका नक्षत्र तक उसका ध्यान रखें, उसकी रक्षा करें। जब कृत्तिका नक्षत्र हो तब इस बाँदे को प्राप्त कर लें। इसे भुजा में धारण करने से शब्द सिद्धि प्राप्त होती है।

## वट वृक्ष का बाँदा

जब आद्रा नक्षत्र हो तब वट वृक्ष का बाँदा प्राप्त करें। इस बाँदे को हाथ में धारण करने से कभी भी युद्ध में हार नहीं होती।

## आम का बाँदा

आम के बाँदे को भी शुभ संयोग पर प्राप्त करके हाथ में धारण करें। इसे बाँधने से विजय प्राप्त होती है।

## निर्गुण्डी का बाँदा

१. हस्त नक्षत्र वाले दिन निर्गुण्डी का बाँदा ग्रहण करके धारण करने से कभी भी धन की कमी नहीं रहती।
२. भरणी नक्षत्र में यह बाँदा लेकर धारण करने से धारक विद्वान बन जाता है।

## अनार का बाँदा

जयेष्ठा नक्षत्र वाले दिन अनार का बाँदा प्राप्त करके घर के दरवाजे के ऊपर स्थापित कर दें। ऐसा करने से घर में कोई भी अला-बला प्रवेश नहीं करती। यदि कोई प्रवेश कर चुकी हो तो पलायन कर जाती है। इसके प्रभाव से घर के बालक हृष्ट-पुष्ट रहते हैं। उन्हें कोई भी ग्रह बाधा नहीं सताती।

## हार सिंगार का बाँदा

हस्त नक्षत्र में हार सिंगार का बाँदा प्राप्त करके धारण करने से पैसे की तंगी नहीं आती।

## कैथे का बाँदा

यदि आपको कभी कैथे के वृक्ष पर बाँदा मिले तो उसे कृत्तिका में प्राप्त करके धारण कर लें। इस बाँदे के प्रभाव से तलवार का स्तम्भन होता है अर्थात धार वाला कोई भी औजार देह को हानि नहीं पहुँचा पाता।

## बड़ का बाँदा

जब अश्विनी नक्षत्र हो तब बड़ का बाँदा ग्रहण करें। इसे घर लाकर दूध के साथ घिस करके पीने से वृद्ध भी तरुण हो जाता है। इस बाँदे को कमर में धारण किये रहने से मैथुन शक्ति अश्व की भाँति हो जाती है।

## नीम का बाँदा

यदि आपको कभी नीम के वृक्ष पर बाँदा मिले तो उसे आद्रा नक्षत्र में प्राप्त करें। इसके बाद इस बाँदे को शत्रु के सोने वाले कमरे में दबा दें। इसके प्रभाव से शत्रु मर जाता है।

## शिरस का बाँदा

आद्रा नक्षत्र में ही शत्रु का नाश करने के लिये शिरस वृक्ष का बाँदा ग्रहण करें। इस बाँदे को शत्रु के निवास स्थान में दबा देने से निश्चय ही शत्रु नष्ट हो जाता है। इसके सेवन करने से आयु की बढ़ोत्तरी हो जाती है तथा ज्ञान-विज्ञान विचित्र हो जाते हैं।

## वच का बाँदा

किसी भी ग्रहण काल में वच का बाँदा ग्रहण करके सुखा लें। इसे शुद्ध घी के साथ सात दिन खाने से व्यक्ति वाक्यपति

अर्थात् वाक्पटु हो जाता है।

## शाखौट का बाँदा

१. मृगशिरा नक्षत्र में शाखौट का बाँदा विधिवत् प्राप्त करें। एक पान में इस बाँदे को रखकर मुख में धारण करने से व्यक्ति अदृश्य हो जाता है।

२. यदि अनुराधा नक्षत्र में शाखौट वृक्ष का बाँदा ग्रहण करके गोरोचन के साथ पीस करके काजल की भाँति नेत्रों में लगाया जाय तो पृथ्वी में छुपे खजानों का पता चलता है।

## रोहित का बाँदा

यदि अनुराधा नक्षत्र में रोहित का बाँदा प्राप्त करके मुख में रख लिया जाय तो मनुष्य तत्काल ही अदृश्य हो जाता है।

## कपास का बाँदा

भरणी नक्षत्र में कपास का बाँदा प्राप्त करके भुजा में धारण करने से व्यक्ति तत्काल ही दृष्टि से ओझल हो जाता है।

## बेल का बाँदा

अश्विनी नक्षत्र में बेल का बाँदा प्राप्त करके हाथों में धारण करने से व्यक्ति तत्काल दृष्टि से ओझल हो जाता है।

## अशोक का बाँदा

आश्लेषा नक्षत्र में आँवले का बाँदा प्राप्त करके भुजा में धारण करने से व्याघ्र का, राजा का तथा चोर का भय नहीं होता अर्थात इनसे कोई खतरा नहीं होता है।

## मुलैहठी का बाँदा

रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब मुलैहठी का बाँदा

लाकर जब भी किसी सभा में फेंक देंगे तभी सभा के लोग हत्प्रभ होकर खामोश हो जायेंगे।

### पीपल का बाँदा

यदि किसी गृहणी को अपने गर्भाशय में गर्भ धारण करना हो तो अश्विनी नक्षत्र में पीपल का बाँदा प्राप्त करके गाय के दूध के साथ सेवन करें तो उसे अवश्य ही गर्भ ठहर जाता है। इस प्रयोग से बाँझ स्त्री भी माँ बन सकती है। इस बाँदे को गृह में स्थापित करने से जीव हानि नहीं हुआ करती।

### बाँदा

कोई भी बाँदा गृह में स्थापित करने से अग्नि भय नहीं होता। स्वर्ण के ताबीज में भरकर धारण करने से रोग शान्त हो जाते हैं।

### नीम का बाँदा

जब ज्येष्ठा नक्षत्र हो तब नीम का बाँदा लेकर जिस भी व्यक्ति के शरीर पर डाला जायेगा। उसके भाग्य का उसी समय से नाश होकर दुर्भाग्य का प्रारम्भ हो जायेगा।

## आसन स्तम्भन

इस प्रयोग को करने से जल के ऊपर आसन बिछाकर उसके ऊपर स्वयं बैठ जाने से आसन या बैठने वाला जल में डूबता नहीं है बल्कि जल के ऊपर ही आसन तैरता रहता है। यदि आप यह कार्य करना चाहें तो मनुष्य की खोपड़ी लाकर कूट-पीसकर चूर्ण कर लें। इसके बाद श्लेष्मान्तक नामक वृक्ष का

लटक रहा फल लाकर पीसें और खोपड़ी वाले चूर्ण में मिला दें। इस चूर्ण का आसन पर दो अंगुल का पुट लगा दें और आसन को सुखा करके समेट लें। जब आपकी इच्छा करतब दिखाने की हो तो इस आसन को लेकर किसी नदी पर जायें और आसन खोल कर जल की धारा पर बिछा कर उसके ऊपर स्वयं भी बैठ जायें। आपको देखने वाले आश्चर्य में पड़ जायेंगे क्योंकि आप जल में डूबेंगे नहीं।

## शत्रु मुख स्तम्भन

रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब सफेद फूल वाली चमेली की जड़ प्राप्त करें। इस जड़ को कण्ठ में धारण करने से सभी भाँति की सुरक्षा होती है तथा शत्रु कुछ भी विघ्न प्रस्तुत नहीं कर पाता। इसी जड़ को यदि मुख में धारण किया जाय तो सभी शत्रुओं का मुख बन्द हो जाता है।

## गज स्तम्भन

यदि आप कौंच की जड़ को भुजा अथवा सिर पर धारण करेंगे और यदि आपको हाथी मिलेगा तो स्तम्भित होकर खड़ा रह जायेगा।

## व्याघ्र स्तम्भन

कंटकारी की ही जाति की एक वनौषधि होती है जिसे कि बृहती कहते हैं। इस पर सफेद पुष्प आते हैं। यह मनुष्य की भाँति

ऊँची होती है। इसके पत्ते पर तथा टहनी पर काँटे भी होते हैं। इसके फूल बैगन के फूलों की भाँति तथा पत्ते भी बैगन के पत्तों के सदृश होते हैं। इसकी जड़ को यदि धारण किये रहेंगे तो व्याघ्र जब भी सामने आयेगा तब ही स्तम्भित हो जाया करेगा।

इसकी जड़ को एक रंग वाली गाय जिसके नीचे बछड़ा हो के दूध में पीस कर ऋतु स्नाता स्नान करके पीये तो उसे पुत्र गर्भ की प्राप्ति होती है।

गर्भवती स्त्री यदि दूसरे मास में इसकी जड़ को ऊपर कही विधि से तीन दिन तक प्रयोग करें और नमकीन और रोटी न खा कर चावल की खीर को खायें तो निश्चय ही गर्भ में स्थिर हुई सन्तान सुन्दर पुत्र के रूप में बदल जाती है।

## शस्त्र सिद्धि

जब किसी मंगलवार के दिन कृतिका का विशाखा नक्षत्र हो तब कैसा भी शस्त्र बनावें। वह युद्ध में विजय प्राप्त करता है।

## बन्धन

बन्धन का अर्थ प्राय: किसी कैदखाने में कैद होने से लगाया जाता है। सम्भवत: यही कारण है कि बन्धन विषय पर कोई भी ध्यान नहीं देता। यहाँ पर मैं स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हूँ कि कैदखाने की कैद को तो बन्धन कहते ही हैं। इसके अलावा जब कोई तान्त्रिक प्रयोग करके शरीर को बाँध देता है तो उसे भी बन्धन कहा जाता है। जन्मकुण्डली में भी एक बन्धन योग होता

है। अपने आप ही कोई अदृश्य शक्ति बन्धन कर देती है। दृष्टि बन्धन भी होता है। तात्पर्य यही है कि किसी भी भाँति व्यक्ति विशेष उन्नति न कर सके। इन सभी बन्धनों से छुटकारा प्राप्त करने के लिये दिसम्बर मास के अन्तिम दिनों में चलने वाले मार्गशीर्ष मास में जब पूर्णिमा पड़े तो चित्रक वृक्ष की जड़ को प्राप्त कर लें। इस जड़ को सिर में धारण करने से बन्धन के सारे बाँध टूट कर सर्व सुख प्राप्त होते हैं।

यदि किसी का बन्ध करना हो तो उसके दोनों पैरों के नीचे की धूल लेकर एक मिट्टी के शकोरे में डाल करके काले धागे से लपेटें और श्मशान में दबा दें।

## विद्वेषण

साही का काँटा लेकर शत्रु के घर में गाड़ देने से उसके घर में परस्पर वैर भाव उत्पन्न हो जाता है। इस काँटे को यदि 'ॐ नमो नारायणाय अमकामुकेन सह विद्वेष कुरु-कुरु स्वाहा' से अभिमन्त्रित किया जाय तो दो व्यक्तियों में परस्पर वैर भाव हो जाते हैं।

भैंस और घोड़े का गोबर लेकर उसमें गाय का मूत्र मिला दें। यह लेप सा बन जायेगा। इस लेप से दो घनिष्ठ मित्रों का नाम लिख दें। इसके प्रभाव से शीघ्र ही उनमें शत्रुता हो जायेगी।

## वशीकरण

यह बहुत ही सरल प्रयोग है यदि आपने किसी स्त्री या

कन्या को मोहित करना हो तो आकाश बेल के पत्ते तथा फूल लेकर कूटें और इसका रस निकाल लें। इस रस में कुछ भी भींगो करके अपनी केन्द्रित स्त्री को भेंट में दें। यह भेंट लेते ही स्त्री डाली से टूटे फूल की भाँति आप की शरण में आयेगी।

इस वशीकरण प्रयोग को स्त्रियाँ भी पुरुष को मोहित करने के लिये कर सकती हैं। विधि इसी भाँति ही रहेगी।

## पहाड़ी सिन्दूर

इसे ताबीज में भर करके कण्ठ में धारण करने से जटिल से भी जटिल पीलिया रोग समाप्त हो जायेगा।

## भालू का नाखून

इसे कण्ठ में धारण करने से ऊपरी शिकायतें दूर होती हैं। मन का भय समाप्त होता है।

## समुद्र झाग

यदि किसी का कान बहता हो और कोई उपाय लाभ न करता हो तो समुद्र झाग को ताबीज की भाँति कण्ठ में धारण करा दें।

## शेर का नाखून

यदि शेर के नाखून को ताबीज की भाँति कण्ठ में धारण कराया जाय तो व्यक्ति में नया जीवन, नई शक्ति तथा नई स्फूर्ति

पैदा होता है। सभी स्थानों पर विजय मिलती है। किसी भी तरह की ऊपरी शिकायत नहीं होती।

## उल्लू का माँस

यदि उल्लू का माँस ताबीज में भरके कण्ठ में धारण किया जाय तो समस्त भय पलायन कर जाते हैं। किसी भी तरह की अदृश्य हवा की शिकायत नहीं होती।

## भालू का बाल

यदि रात को डर हो, बुरे-बुरे स्वप्न आते हों, सदा मन डरा-डरा सा रहे, दृष्टि दोष शीघ्र हो जाता हो, आपके पास कोई टोना-टोटका करता हो, बहुत मेहनत करने पर भी पढ़ायी याद न रहे तो रीछ के पाँच बाल लेकर ताबीज की भाँति कण्ठ में धारण करें। इसे पहने रहने से उपरोक्त बातें समाप्त होकर सुख मिलता है और किसी का किया कराया व्यर्थ हो जाता है।

## इन्द्रजाल

यह किसी ग्रन्थ का नाम नहीं बल्कि एक वनौषधि है। जिस भाँति पत्ते की नसें होती हैं उसी भाँति का यह पत्ते की नसों की भाँति होता है। इसमें पत्ते की भाँति पूरी पर्त नहीं होती। बल्कि केवल नसें ही दिखायी पड़ती हैं। पर्त वाला हिस्सा खाली होता है। इसका प्रयोग बड़ा महत्त्व रखता है। इसका प्रयोग बड़ा महत्त्व रखता है। इसकी थोड़ी सी टहनी तोड़ ताबीज में भरने से ताबीज

तिलस्म शक्ति प्राप्त कर लेता हैं।

## गैंडे की खाल

यदि गैंडे की खाल को ताबीज की भाँति रखी जाय तो शरीर स्वस्थ होता है। डरावने स्वप्न नहीं आते। ऊपरी शिकायतों की क्या हिम्मत जब ग्रह भी स्तम्भित हो जाय।

## उल्लू के नाखून

यदि उल्लू के नाखूनों को कण्ठ में धारण किया जाय तो नजर लगनी बन्द हो जाती है। किये कराये का प्रभाव समाप्त हो जाता है। ऊपरी शिकायतें नहीं होतीं।

## मोर का मुकुट

यदि कोई व्यक्ति मोर के सिर पर उगा हुआ मुकुट प्राप्त करके अपने कण्ठ में धारण करता है तो उससे संसार मोहित होता है।

## सूअर का दाँत

इसका प्रयोग स्तम्भन के लिये किया जाता है।

जो व्यक्ति सूअर का दाँत कण्ठ में धारण करता है वह सदा विजयी रहता है। उसे भूत-प्रेत आदि से कोई भय नहीं रहता। उसे कभी नजर नहीं लगती। उसे कभी स्वप्न दोष नहीं होता। यदि सूअर का दाँत कमर में बाँध कर सम्भोग किया जाय तो वीर्य

स्तम्भित होता है।

## रुद्राक्ष

यह नाम सर्व परिचित है और प्रायः हर स्थान पर यह प्राप्त होता है। पाँच मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से भूत-प्रेत, अला-बला भाग जाती है।

रुद्राक्ष का तन्त्रों में बड़ा योगदान है। विद्वानों ने इसे कण्ठ में धारण करने तक या मन्त्र सिद्धि तक ही सीमित रखा है। आजकल रोगों की शान्ति हेतु भी इसे धारण किया जाता है।

यहाँ मैं रुद्राक्ष के तान्त्रिक प्रयोग बता रहा हूँ।

इसे चन्दन की भाँति घिस कर माथे में टीका लगाने से शिव कृपा प्राप्त होती है। मोहन होता है। सिर का दर्द शान्त होता है।

इसे चन्दन की भाँति घिस कर ऊपरी शिकायतों वाले रोगी के पूरे शरीर पर मल देने से ऊपरी शिकायतें तत्काल समाप्त हो जाती हैं।

इसे हृदय के पास धारण करने से हृदय सशक्त होता है।

रुद्राक्ष के तान्त्रिक विधि से प्रयोग करने पर भूत, प्रेत, पिशाच, चुड़ैल, डायन, नदी, जंगल तथा पहाड़ के देवता का बाधा, पितृ प्रकोप, मानसिक विकार समाप्त होता है। इस विषय की विस्तृत चर्चा 'चमत्कारी रुद्राक्ष की महिमा व प्रयोग' नामक पुस्तक में अलग से की गई है। यह रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार से मँगा लें।

रात को सोते समय जो बच्चे चौंकते हैं उन्हें रुद्राक्ष घिस कर

पिलाने तथा छाती पर लेप करने से इनका चौंकना बन्द हो जाता है।

एक रुद्राक्ष को तथा एक कर्ष सुगन्धरास्ना को कूट पीसकर गाय के दूध के साथ मासिक स्राव के दिनों से प्रारम्भ करके सात दिन तक खाने से बाँझ को भी पुत्र प्राप्त होता है।

## शत्रु दमन

यदि आपके शत्रु बढ़ जायें या आपको अपने शत्रु से झगड़े या युद्ध का खतरा लगे तो आद्रा नक्षत्र में बाँस की जड़ ग्रहण करके शत्रु के समक्ष जायें। ऐसा करने से युद्ध में श्त्रु की पराजय होती है। यूँ भी उसे धारण करने शत्रु की शत्रुता की भावना रखने वाले मित्रों की स्वतः पराजय हो जाती है क्योंकि उनके जीवन के अपने सभी काम विपरीत फल प्रदान करने लगते हैं। जिस कारण वह अपने आप में ही सिमट जाते हैं।

## एक पल में सौ योजन

इस प्रयोग को सिद्ध करने से आप अपनी इच्छानुसार एक ही पल में सौ योजन तक घूम कर आ सकते हैं। प्रस्तुत प्रयोग को करने में धैर्य की अत्यधिक आवश्यकता है।

एक चील का घोंसला देखें और उसका मानसिक पूजन करें। यह पूजन नित्य ही करना होगा। पूजन के लिये जाते समय थोड़ा सा कच्चा माँस भी ले जाया करें और पूजन करके घोंसले में डाल दिया करें। जब तक चील अण्डे न रख दे तब तक इस

प्रयोग को धैर्य के साथ करना होगा। जब चील अण्डे रख दे तब आप दो महीन पाइप लें। यह पाइप पाँच इंच के होंगे तो ठीक रहेगा। इन पाइपों का एक तरफ से मोम लगाकर मुख बन्द कर दें। एक महीन लम्बी सूई लें तथा दोनों पाइपों को लेकर चील के घोंसले पर आयें। एक अण्डे के ऊपर एक पाइप रख कर महीन सुई को पाईप में डालकर धीरे-धीरे दबाते हुए सावधानी से अण्डे में छेद कर दें। यह छेद सावधानी से हल्के हाथ से करें जिससे कि अण्डा न टूटे। छेद होते ही सूई वापिस खींच ले। इस क्रिया को करने से पाईप का सारा पारा अण्डे में घुस जाय तो पाईप को हटा कर चील की बीठ से छेद बन्द कर दें। इसी भाँति दूसरे अण्डे के साथ भी करें। यह कार्य पूर्ण करके पुनः घोंसले की मानसिक पूजा करें और वृक्ष से उतर जायें। अब आपको नित्य ही वृक्ष के नीचे आकर गोश्त आदि चढ़ा करके मानसिक पूजन तब तक करना होगा, जब तक कि अण्डे फूट नहीं जाते।

जब आप देखें कि अण्डे फूट गये हैं तब घोंसले को तथा अण्डों को देखें। आपको दो गुटिकायें मिलेंगी। उन्हें उठा लें। इन दोनों गुटिकाओं में से एक गुटिका किसी भी अन्जान व्यक्ति को दे दें तथा दूसरी गुटिका अपने पास रख लें। जब आपको एक ही पल में सौ योजन जाना हो या कहीं पर भी जाना हो, तब इस गुटिका को मुख में रख लें। इसके प्रभाव से आप कहीं भी कुछ ही छणों में पहुँच जायेंगे। जहाँ पर रुकना अभीष्ट हो, वहाँ पर गुटिका मुख से निकाल लें। वापस आने की अभिलाषा होने पर पुनः गुटिका मुख में धारण करके सौ योजन दूर होने पर भी एक

ही पल में वापस आ जायेंगे।

## भूत पिशाच नाशक

यदि कोई व्यक्ति भूत पिशाचादि से परेशान हो तो वह किसी भी ग्रहणकाल में गन्धमांसी की उत्तर दिशा की ओर अग्रसित हो रही जड़ को प्राप्त करके अंगूठी की भाँति अपनी अंगुली में धारण कर ले इसके प्रभाव से समस्त भूत प्रेतादि दूर भाग जाते हैं। और पुनः वापस नहीं आते।

## विकट स्तम्भन

यदि किसी शत्रु से परेशान होकर उसका स्तम्भन करना अभीष्ट हो तो इस विधि के अनुसार करें। आप आश्चर्य मान जायेंगे क्योंकि यह प्रयोग जिन्दगी भर के लिये विकट स्तम्भन करता है तथा शीघ्र प्रभावी होता है। आश्चर्य आपको इस बात का भी होगा कि यह प्रयोग अत्यन्त आसान है।

आप कहीं दो वृक्ष देखें जो कि आमने-सामने हों। यह वृक्ष विषैले होने चाहिये। यदि आपको आक, कनेर, मेंथा, कुचले का वृक्ष मिले तो भी प्रयोग का शुभारम्भ करें क्योंकि यह भी विष के वृक्ष हैं। जब आपको आमने-सामने दो वृक्ष मिलें तो किसी क्रूर दिवस में इसकी जड़ को प्राप्त कर लें। यह जड़ें दक्षिणमुखी हों तो अच्छा रहेगा। इस जड़ को लाकर किसी चाकू की सहायता से पुरुष की प्रतिमा गोंदें यदि शत्रु पुरुष हो और यदि स्त्री शत्रु हो तो स्त्री की प्रतिमा गोंदें। यह प्रतिमा कैसी भी बने, विचार न करें।

इस प्रतिमा पर केवल शत्रु के अंग सही होने चाहिये। शत्रु की जीभ बनायें। नेत्र बनायें। हृदय, कान, ठोड़ी, पाँव, हाथ तथा इन्द्री आदि का उभार अवश्य रखें। अब इन प्रतिमाओं में शत्रु की प्राण प्रतिष्ठा भी करें। 'लं' बीज मन्त्र का एक हजार बार जप करें। इसके बाद इन प्रतिमाओं को किसी मन्दिर के पास, किसी श्मशान में या शत्रु के द्वार के पास पृथ्वी में गाड़ दें। इस प्रयोग के पूर्ण होते ही महाभयानक स्तम्भन होगा, जिस कारण आपका शत्रु जीवन भर के लिये स्तम्भित हो जायेगा।

## तेलिया कन्द

यह बहुत चमत्कारिक वनौषधि है और भाग्यशाली लोगों को ही प्राप्त होती है। इसकी उत्पत्ति गिरनार, हिमालय तथा आबू आदि पर्वतीय क्षेत्रों में होती है। इसके पत्ते कनेर के पत्तों की भाँति चिकने तथा पृथ्वी की ओर झुके रहते हैं। इन पत्तों के ऊपर काले तिलों की भाँति छींटे-से पड़े होते हैं। यह एक बड़ी महत्त्वपूर्ण वनस्पति है और इसी के विषय में सभी शास्त्र मौन हैं। इसे प्रत्येक भाषा में तेलिया कन्द ही कहा जाता है क्योंकि इसके पत्ते पर जैसे तेल चुपड़ा गया हो, इस भाँति चिकनापन तथा चमक होती है। इसके तने के पास पृथ्वी लगभग एक मीटर के व्यास तक इस भाँति की होती है जैसे कई लीटर तेल गिरा दिया गया हो। यह पौधा बड़ा चमत्कारिक, प्राप्त करने में खतरनाक तथा देखने में दुर्लभ है।

तन्त्र में गोपनीयता अत्यन्त आवश्यक होती है शायद इसी

कारण इसके विषय में सभी मौन हैं। इस पौधे की जड़ का प्रयोग किया जाता है। जब यह पौधा आपको मिले तो स्वयं उखाड़ने के बदले एक बकरी, खरगोश या लोमड़ी का प्रयोग करें। मेरी समझ से बकरी ही उचित रहेगी। यदि बरसात के दिन हों तो इसके तने में पतली तथा मजबूत रस्सी बाँध कर बकरी के गले में बाँध कर उसे हाँक दें। बकरी भागेगी तो यह पौधा भी साथ ही खिंच जायेगा। चूँकि इसकी जमीन मुलायम होती है अतः यह जड़ समेत निकल आता है। इस वृक्ष की जड़ में एक सर्प होता है जो कि जड़ के निकलते ही जड़ की तरफ भागता है और क्रोधित होकर जिसे भी पाता है, उसे लगातार काटता ही रहता है। यही कारण है कि यह वनस्पति प्राप्त करना खतरनाक है। दुर्लभ इसलिये है कि यह बड़े भाग्य से ही दर्शित होती है।

दक्षिण भारत तथा मध्य भारत की पर्वत श्रृंखला के दुर्गम क्षेत्रों में भी तेलिया कन्द की उत्पत्ति होती है। इस पौधे से काले रंग का कुछ तरल पदार्थ बहता है जिसमें कि बहुत चिकनायी होती है। यदि भाग्यवश यह आपको मिल जाये या दिख जाय तो सावधानी से प्राप्त करें।

**पारा**

तेलिया कन्द का रस निकाल कर पारे के साथ खरल में मर्दन करने से बीस मिनट में ही पारा ढीला होकर मर जाता है। यह ढीला रहता है अतः मनचाही शक्ल दे सकते हैं।

**गोली**

तेलिया कन्द को छोटे-छोटे टुकड़े करके गोली की भाँति

कर लें और चन्द्रमा की चाँदनी में सुखायें। जब यह सूख जाय तो एक गिलास दूध में गोली डाल कर दस मिनट रुकें। इसके बाद गोली निकाल कर दूध पी जायें। यह दूध सभी रोगों को नाश करके शरीर को हरा-भरा करता है।

**सोना**

ताँबे को गरम करके तेलिया कन्द के रस में डुबा दें। ठण्डा होने पर निकालें और ताँबे के स्थान पर शुद्ध सोना ले लें। क्योंकि यह ताँबा सोना हो जाता है। अत: जितना ताँबा होगा उतना ही सोना बनेगा।

**रसायन**

तेलिया कन्द को कूट-पीस कर गाय के दूध के साथ खाने पर वृद्ध भी तरुण होकर वृद्धता खो देता है।

**पारस**

मेरा विचार है कि जहाँ पर तेलिया कन्द होता है। इसी प्रभाव क्षेत्र में अर्थात तेलीय क्षेत्र में या इसकी जड़ के पास रहने वाला पत्थर पारस के गुण ग्रहण कर लेता है।

**ताबीज**

तेलिया कन्द को स्वर्ण के ताबीज में भर करके कण्ठ में धारण करने से भूत, पिशाचादि का भय नहीं होता। धन की कभी कमी नहीं होती। देह निरोग रहती है। मन प्रसन्न रहता है।

तेलिया कन्द के और भी बहुत से तान्त्रिक प्रयोग होते हैं परन्तु यह दुर्लभ होने के कारण इसके विषय में विस्तृत वार्ता नहीं कर रहा।

## दरियाई नारियल

मनुष्य के रंजोगम दूर करने के लिए इसका तन्त्रों में प्रयोग किया जाता है। यह इसी नाम से पंसारी से प्राप्त हो जाता है। यह एक विषैला, लम्बा और जुड़मा होता है। इसका वृक्ष भी नारियल की ही भाँति होता है।

दरियाई नारियल की ताबीज की भाँति या ताबीज में भर करके धारण करने से सभी प्रकार की रक्षा प्राप्त होती है। इसे धारण किये रहने से जीवन शक्तिशाली होता है। बुद्धि तीव्र होती है। धारक को सदा प्रसन्न रखता है और उसके सारे रंजोगम दूर कर देता है।

## चण्डी कुसुम

लाल कनेर के पुष्प चण्डी को चढ़ाने से चण्डिका अत्यधिक प्रसन्न होती है अतः लाल कनेर ही चण्डी कुसुम है।

## गणेश कुसुम

यह भी लाल कनेर है और इसे प्राप्त करके गणपति मनचाहा वरदान देते हैं।

## गौरी पुष्प

यह सफेद कनेर है। भगवती पार्वती इस फूल से बहुत प्रसन्न होती है।

## काली कनेर

इसे श्यामा पुष्प भी कहते हैं। श्यामा भगवती काली का ही एक नाम है। भगवती काली को काली कनेर के पुष्प चढ़ाने से शनि की शान्ति होती है, अशुभ ग्रह पलायन कर जाते हैं। शत्रुओं का स्तम्भन होता है। भगवती कालिका देवी शीघ्र प्रसन्न होती हैं। काली कनेर की जड़ धारण करने से भूतादि भाग जाते हैं। मारण प्रयोग में भी काली कनेर के पुष्प विशेष प्रभाव प्रदर्शित करते हैं।

## भूत जटा

गन्धमांसी को भूत जटा, पिशाची, पूतना तथा भूतकेशी भी कहते हैं। इसकी जड़ धारण करने से स्त्री जाति के भूत भागते हैं और पूतना शान्त होती है। यदि कोई पिशाची को सिद्ध करना चाहे तो मन्त्र अनुष्ठान के साथ भूत जटा का प्रयोग करें।

## पर्वत वासिनी

यह जटामांसी है। इसे धारण करने से पर्वत की देवी प्रसन्न होती है और धारक की पूर्ण रक्षा करती है। इसे कण्ठ में धारण करने भूत, ज्वर, त्वचा रोग नष्ट होते हैं। शरीर में चर्बी बढ़ती है। गौरी के साधक या पार्वती को प्रसन्न करने या सिद्ध करने वाले लोग इससे लाभ उठा सकते हैं।

## राक्षसी

यह कोई भूतिनी नहीं है बल्कि गठिवन जाति का ही एक

पौधा है। इसका प्रचलित नाम चोरक है। नेपाल में इसे चौरा कहते हैं। इसकी जड़ से भूतिनी की प्रतिमा बनाकर पूजा करने से भूतिनी शीघ्र प्रस्तुत होकर इच्छित फल प्रस्तुत करती है। परन्तु सावधान, इसे माँ की भाँति ही पूजें। यह शैय्या सुख प्रदान करती है। इसे शैय्या पर लेने के बाद दूसरी स्त्री को दूर से ही नमस्कार करना होगा। इसे धारण करने से राक्षसी धन के लाभ कराती है तथा औपरे की परेशानी दूर करती है।

## स्थूल वैदेही

यह गजपिप्पली है। इसे सेवन करने से पेट की कृमी मरती है, वात तथा कफ के रोग समाप्त होते हैं तथा देह पुष्ट होकर भर जाती है। यदि इसका तेल बना कर देह पर मालिश की जाय तो देह मोटी होती है। छोटे स्तन वाली स्त्रियाँ केवल स्तन पर तेल लगायें या गजपिप्पली का चूर्ण लेप की भाँति लगायें। इसके प्रभाव शीघ्र ही स्तन भारी हो जाते हैं। इसका लेप लिंग पर किया जाय तो लिंग भी मोटा होता है।

## चीता

यह एक वनस्पति है और इसी नाम से प्राप्त होती है। यह अपने रंगों के अनुसार विभिन्न गुण रखती है।

लाल चीता पारे को बाँधता है। देह को भारी करता है। यह चितावर की भाँति लोहे को वेध देता है। इसे धारण करने से शरीर निरोग होता है। किसी के द्वारा किया गया तान्त्रिक दुरुपयोग

प्रभाव नहीं करता।

काला चीता लाकर दूध में डालने से दूध भी काला हो जाता है अतः इसके सेवन तथा बालों में लगाने से बाल जड़ से ही काले हो जाते हैं।

## भूत नाशिनी

इसे वचा या वच कहते हैं और प्रायः पन्सारी के पास से मिल जाती है। इसे खाने तथा धारण करने से उन्माद तथा भूतादि का नाश होता है।

## कापाली

यह वायविंड़ग है। इसे खाने या धारण करने से वहम अर्थात भ्रम की शिकायत दूर होती है।

## रामशर

यह मूँज है। इसे घर में रखने से घर की रक्षा होती है। धारण करने से आदि-व्याधि का नाश होता है। पूजन कर्म में इसे पवित्र माना जाता है।

## लिंकनी

इसे शिवलिंगी भी कहते हैं। इसके बीज शिवलिंग की भाँति या योनि की भाँति होते हैं। यह एक लाल जातीय पौधा है। इसके बीज तथा जड़ का प्रयोग किया जाता है।

### सर्व सिद्धि

इसकी जड़ तथा बीज को ताबीज की भाँति धारण करने से किया जा रहा अनुष्ठान सिद्ध हो जाता है।

### पारा गुटिका

इसकी जड़ का अर्क निकाल करके पारे के साथ खरल करने पर पारा मर जाता है।

### वशीकरण

शिवलिंगी का बीज घिसकर ललाट में तिलक करने से जगत वशीकरण होता।

## शंख पुष्पी

इसे शंखाहुली भी कहते हैं और प्रायः पन्सारियों से मिल जाती है। यदि इसकी जड़ मिले तो धारण करें।

### मानसिक रोग

इसे ताबीज की भाँति पहनने से मानसिक रोगों तथा भ्रमों का नाश होता है। स्मरण शक्ति बढ़ती है।

### मंगलदायक

इसकी जड़ सदा सर्वदा मंगल करती है। अशुभताओं का नाश होकर उन्नति होती है।

### उपद्रव

इस ताबीज के धारण करने से भूतादि के साथ समस्त ग्रहों के उपद्रव शान्त हो जाते हैं।

## चण्डाल कन्द

यह पाँच प्रकार का होता है। इसकी जड़ धारण करने से विष निष्प्रभावी होता है तथा भूत प्रेतादि की समस्त लीलाओं का समापन होता है।

## संग-ऐ-मिकनातीस

तन्त्र में संग-ऐ-मिकनातीस का बहुत सफलता से प्रयोग किया जाता है। इसे चुम्बक पत्थर भी कहते हैं। यह वास्तव में चुम्बक की ही भाँति कार्य करता है परन्तु यह पत्थर होता है लोहा नहीं। यह पत्थर काला होता है। यदि आपको मिले तो व्यर्थ न जानें। इसके प्रयोग होते हैं।

इस पत्थर को ताबीज की भाँति धारण किया जाय तो दूरदर्शिता प्राप्त होती है। दूसरे वशीभूत होते हैं। भूत प्रेतादि की परेशानियाँ नहीं होतीं। इसे नगीने की भाँति अंगूठी में जड़ा करके उस हाथ में पहनें जिसके द्वारा आप जल पीते हैं। जल पीते हुए इस पत्थर को हथेली के भीतरी हिस्से में घुमा लें और चुल्लु के द्वारा जल पीयें। ऐसा करने से स्वस्थ रक्त का निर्माण होता है। फेफड़े तथा हृदय शक्तिशाली हो जाते हैं। बढ़ा हुआ रक्तचाप ठीक हो जाता है। शरीर स्वस्थ तथा सबल हो जाता है। रात को सोते समय इसे तकिये के नीचे रख कर सोयें। ऐसा करने से स्वस्थ नींद आयेगी। नींद में डर नहीं लगेगा बल्कि आपको भविष्यवाणी सुनने को मिलेगी।

# क्रिस्टल बाल

यह बिल्लोर से बनती है और काँच की भाँति होती है। इसे क्रिस्टल बाल अर्थात बिल्लोर की गेंद कहते हैं क्योंकि यह गेंद की भाँति होती है। यह भी एक प्रकार का पत्थर होता है और इसके चमत्कारी प्रभावों ने ही इसे तन्त्र में स्थान दिलाया है। इसके चमत्कारी गुणों से प्रभावित होकर अब इसके ऊपर अपने इष्ट के मन्त्र की खुदाई करवाते हैं और प्राण प्रतिष्ठा करवा करके पूजा गृह में स्थापित करते हैं। यह क्रिया भी इसके गुणों के कारण विशेष प्रभाव दिखाती है।

आप को स्मरण क़रवाऊँ। आपने बचपन में अपने दादा-दाजी या नाना-नानी से जादुई कहानियाँ सुनी होंगी और उस कहानी में एक जादूगर का भी चरित्र सुना होगा। जब उसे कुछ जानना होता था तो वह एक गोला लेकर बैठ जाता था और उस गोले से कहता था—'बता मेरे जादुई गोले! इस वक्त राजकुमार कहाँ हैं?' और गोले के ऊपर आज-कल के दूरदर्शन की भाँति चित्र आने लगते थे। इन चित्रों से राजकुमारी की स्थिति का पता करके जादूगर अन्य प्रयोग करता था। उपरोक्त वार्ता में मुख्य विषय है 'जादुई गोला'।

आपको इस जादुई गोले को परिचय दे रहा हूँ। ध्यान से समझ लें कि यह जादुई गोला कोई कोरी कल्पना ही नहीं थी वास्तव में जादुई गोला था और है। यह जादुई गोला कुछ और नहीं बल्कि क्रिस्टल बाल ही था। इसके चमत्कारों को देखकर

इसे क्रिस्टल गेजिंग भी कहा जाने लगा है। क्रिस्टल गेजर का मतलब गुप्त रहस्य प्रस्तुत करने वाले से है।

क्रिस्टल बाल के चमत्कारी प्रभावों से वशीभूत होकर सम्मोहन विशेषज्ञों ने इसे हिप्नोटाइज करने का प्रमुख साधन बनाया और वास्तव में ही यह बॉल इस सम्मान के योग्य भी थी।

यदि आप क्रिस्टल गेजिंग करना चाहें तो एक बेदोश क्रिस्टल बॉल प्राप्त कर लें और इस त्राटक का अभ्यास करें और इस जादुई गोले की चमत्कारी योग्यता से स्वयं ही परिचित हो जायें।

## स्त्री वशीकरण

किसी शुभ संयोग पर अश्वगन्धा की जड़ प्राप्त करें। इसे पीस कर चूर्ण कर लें। इस चूर्ण में कर्पूर का चूर्ण तथा दारचीनी को चूर्ण करके मिला लें। इस चूर्ण को किसी भी खाद्य सामग्री में मिला करके जिस स्त्री को खिलाया जायेगा वही मोहित होकर अपना सर्वस्व सौंप देगी।

## स्त्री मोहन

एक ब्याई हुई काली कुतिया को ढूँढ़े और रविवार के दिन उस कुतिया का दूध प्राप्त करें। इस दूध को लेकर घर आ जायें और उसमें छह-सात लौंग डाल दें। लगभग तीन दिन तक इन्हें दूध में ही रहने दें। बुधवार को यह लौंग निकालें। किसी बर्तन में अपना वीर्य रख कर उसमें यह लौंग इस भाँति डालें कि लौंग वीर्य से भली-भाँति तर हो जायें। यदि आपके पास धैर्य हो तो

वीर्य को सूखने दें और धैर्य नहीं हो तो शनिवार को यह लौंग वीर्य से निकाल लें। अब इन्हें छाया में सुखायें। जब यह सूख जाय तो एक स्त्री को एक लौंग किसी भी भाँति खिलाने से उसका महावशीकरण होता है। इस भाँति आपके पास जितने लौंग हों उतने ही पात्र वशीभूत किये जा सकते हैं।

## वीर्य स्तम्भन

अश्वगंधा कर्पूर तथा दारचीनी को पीस करके जायफल भी पीस करके मिला दें। इन्हें कपड़छान करके किसी द्रव्य के साथ गीला करके एक-एक ग्राम की गोलियाँ बना दें। सुनार से एक नगीना लगाने वाली अंगूठी लेकर उसमें यह गोली लगा लें। विषयभोग करते हुए जब तक यह अंगूठी हाथ में रहेगी वीर्य नहीं गिरेगा। इस अंगूठी के प्रभाव से केवल वीर्य स्तम्भन ही नहीं होता बल्कि पुरुषेन्द्रिय में उत्तेजना और सख्ती भी बनी रहती है।

## ज्वर नाश हेतु कुछ प्रयोग

१. यदि पारी वाला ज्वर समाप्त करना हो तो एक पोठी मछली लेकर रोगी के सारे शरीर पर छुआते हुए घुमायें और फिर किसी चौराहे पर फेंक दें।

२. यदि तीसरे दिन आने वाला ज्वर ठीक न हो तो एक लाल धागा लेकर सिर से पाँव तक नाप कर तोड़ लें। इस धागे में नील की जड़ बाँध करके रोगी को धारण करा दें।

३. यदि ज्वर का कारण कोई ऊपरी आबोहवा हो तो चिरचिटे

की जड़ या लाल पलाश (ढाक) की जड़ धारण करा दें।

४. एक गिरगिट को पकड़ करके रविवार के दिन उसकी पूँछ काट लें और गिरगिट को छोड़ दें। इस पूँछ को धारण करवा दें।

५. कमल की टहनी के छोटे-छोटे टुकड़े करके किसी धागे में पिरो लें और माला की भाँति धारण करायें।

६. शनिवार की शाम को आक के वृक्ष के पास जाकर धूप-दीप से वृक्ष की पूजा करें और लाल धागा किसी टहनी में बाँध कर यह कहें—'मेरा मेहमान आये तो तुम रख लेना।' इसके बाद घर आ जायें। इस प्रयोग में सावधानी यह रखनी होगी कि कोई व्यक्ति मेहमान बनकर न आ जाय। यदि कोई आये तो उसके लिये उचित नहीं होगा।

## परिवार नियोजन

१. यदि गर्भ स्थापन का विचार न हो तो मेढ़क की हड्डी कमर में धारण कर लें।

२. साँप के दाँतों को ताबीज में भर करके कमर में धारण करने से गर्भ स्थापन नहीं होता।

३. सरसों की जड़ को धारण करने से परिवार नियोजन में सहायता मिलती है।

## कील (विभिन्न प्रकार की)

जिस भाँति की कील होती है और उस कील के द्वारा घर

द्वार का कीलन किया जाता है। उसी भाँति कुछ और कीलें बनायी जाती हैं जो कि लोहे की नहीं होतीं बल्कि वृक्षों की जड़ तथा हड्डी आदि से बना ली जाती हैं। इन कीलों के प्रयोग विभिन्न होते हैं। मुख्यत: कील कोई भी हो उनके प्रयोग मारण तथा उच्चाटन के ही होते हैं। घर-द्वार को कीलने का यह अर्थ होता है कि घर में सुख-शान्ति हो और ऊपर आबोहवा का प्रभाव न हो और यदि प्रभाव हो तो नष्ट हो जाय। इसी भाँति कील के प्रयोग कुछ नष्ट करने के लिये ही होते हैं।

## आक की कील

आक एक सर्वविदित वृक्ष है। इस वृक्ष की जड़ को कृत्तिका नक्षत्र में लेकर तीन अंगुल प्रमाण की कील बना करके तालाब में गाड़ने से तालाब की समस्त मछलियाँ मर जाती हैं।

## बेरी की कील

विशाखा नक्षत्र में बेर वृक्ष की जड़ लेकर आठ अंगुल प्रमाण की कील बना करके केले के बाग में गाड़ने से केले का फल नष्ट हो जाता है।

## जंभीरी की कील

यह एक भाँति का नींबू होता है। इसकी जड़ को अश्विनी नक्षत्र में प्राप्त करके बारह अंगुल प्रमाण की एक कील बनाकर जुलाहे के घर में गाड़ देने से जुलाहे को धागा नष्ट हो जाता है।

## सुपारी का कील

शतभिषा नक्षत्र में सुपाड़ी की जड़ प्राप्त करके नौ अंगुल लम्बी कील बना करके पान की दुकान, पान के खेत या पान वाले

के घर में गाड़ देने से पान नष्ट हो जाता है।

## जामुन की कील

जामुन वृक्ष की जड़ को अनुराधा नक्षत्र में प्राप्त करके उसकी आठ अंगुल लम्बी कील बना कर दूधिये के घर में गाड़ने से दूध नष्ट हो जाता है।

## कनेर की कील

१. जब हस्त नक्षत्र हो तब कनेर वृक्ष की जड़ ग्रहण करके तीन अंगुल लम्बी एक कील बनावें और इसे कुम्हार के घर में गाड़ देने से कुम्हार के द्वारा बनाये सभी बर्तन नष्ट हो जाते हैं।
२. मृगशिरा नक्षत्र वाले दिन रक्त कनेर की टहनी लेकर नौ अंगुल लम्बी कील बना लें और इसे निम्नलिखित मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके भूमि में दबा दें। वशीकरण अवश्य ही हो जाता है।

**मन्त्र—"ॐ अमुकं हुँ हुँ स्वाहा॥"**

## साँप की कील

आश्लेषा नक्षत्र में साँप की हड्डी लेकर ढाई इंच लम्बी कील बनायें और इस कील को शत्रु के घर में गाड़ दें तो शत्रु की सन्तान नष्ट हो जाती है।

## मुलैहठी की कील

जब चित्रा नक्षत्र हो तब मुलहैठी वृक्ष की जड़ प्राप्त करके चार अंगुल लम्बी कील बनायें और उसे तेली के घर में गाड़ने से उसका तेल नष्ट हो जाता है।

## घोड़े की कील

जब अश्विनी नक्षत्र हो तब किसी घोड़े की हड्डी प्राप्त करके सात अंगुल लम्बी कील बनायें तथा उसे घुड़शाला में गाड़ें तो वहाँ के सारे घोड़े नष्ट हो जाते हैं।

## ऊँट की कील

कभी भी किसी ऊँट की हड्डी लेकर किसी भी अस्तबल में चारों कोने में गाड़ दें तो वहाँ के सारे पशु स्तम्भित हो जाते हैं।

## मनुष्य की कील

रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब किसी श्मशान से मनुष्य की हड्डी लाकार जिस द्वार पर गाड़ दिया जायेगा उस द्वार के समस्त निवासी नष्ट हो जायेंगे।

## क्षीरी की कील

जब भरणी नक्षत्र हो तब क्षीरी नामक वृक्ष की लकड़ी लेकर पाँच अंगुल लम्बी कील बना कर नाव में गाड़ दें या डाल दें। इसके प्रभाव से नाव जल में नहीं चलेगी।

## उल्लू की कील

जब भरणी नक्षत्र हो तब उल्लू की हड्डी लेकर जिस व्यक्ति के द्वार पर गाड़ देंगे। उसी का उच्चाटन हो जायेगा।

## लोहे की कील

एक कौवे को मार करके उसका पित्त निकालें और एक लोहे की कील लेकर इस पित्त में घुसा दें। लगभग पाँच सूत तक की कील इस पित्त में लिप्त हो जाय। अब इस कील को जिस द्वार पर गाड़ेंगे वह द्वार निवासियों से विहीन रहेगा।

## पीपल की कील

जब अश्विनी नक्षत्र हो तब पीपल की जड़ लेकर लगभग दस अंगुल लम्बी एक कील बना कर जिसके द्वार पर गाड़ देंगे वह अचानक लम्बी यात्रा पर चल देगा।

## वट की कील

यदि कोई स्त्री वट वृक्ष की जड़ को पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के संयोग में प्राप्त करके अपने भुजा पर धारण करती है तो उसे अवश्य ही गर्भ स्थापन होता है। इस प्रयोग का लाभ वन्ध्या स्त्री भी करके मातृत्व सुख प्राप्त कर सकती है।

## चिरचिटे की कील

यदि बच्चे को जन्म देने में स्त्री को अत्यन्त कष्ट हो रहा हो तो चिरचिटे की जड़ लेकर चार अंगुल लम्बी कील बना करके स्त्री की योनि में रख दें। इसके प्रभाव से बच्चा बिना कष्ट दिये ही सहजता से पैदा हो जाता है।

## आक की कील

कृतिका नक्षत्र में आक वृक्ष की जड़ लेकर सोलह अंगुल लम्बी कील बनावें और मदिरालय में गाड़ दें। इसके प्रभाव से वहाँ की सारी मदिरा अपना मद त्याग कर पानी की भाँति हो जाती हैं।

# औपरा स्पष्टीकरण

आपने प्रायः सुना होगा कि अमुक व्यक्ति को औपरे की शिकायत हो गयी है। अमुक व्यक्ति को भूत लग गया है। अमुक व्यक्ति चुड़ैल या कुछ और लग गया है। उपाय कराने के लिये

जब ओझा के पास जाते हैं तो वह कुछ तान्त्रिक उपाय करके रोग ठीक करता है और जिस भाँति एक डॉक्टर रोग का स्पष्टीकरण करते हुए बताता है कि अमुक व्यक्ति को अमुक औपरा था।

यह औपरा एक साधारण व्यक्ति के सामने प्रश्न चिह्न बना रहता है और जो कुछ भी ओझा समझा देता है वही सत्य मान कर भाग्य की विडम्बना मान लेते हैं।

वास्तव में यह एक गम्भीर विषय है और यह भी सत्य है कि सभी को सब भाँति के औपरे की शिकायत नहीं होती। अनेक बार वास्तव में ही औपरे की शिकायत नहीं होती बल्कि रोग होता है और इस रोग पर भी आयुर्वेद तथा होम्योपैथिक ओझा से भी बाजी मार जाता है। इस समय औपरे को समझने का प्रयास करें कि औपरा क्या और कैसा होता है।

कभी भी किसी देह पर अनजानी शक्तियों के प्रभाव का अधिकार हो जाने को औपरा कहते हैं। जब कभी भी औपरा के विषय में कहा-सुना जाता है तो कारण भूत प्रेतादि ही माने जाते हैं।

यहाँ पर मैं औपरा स्पष्टीकरण प्रस्तुत कर रहा हूँ जिसे समझकर कोई भी व्यक्ति औपरी पीड़ा से पीड़ित को देख करके समझ सकेगा कि उसे कौन-सा औपरा हुआ है?

औपरे कई भाँति के होते हैं जिन्हें कि—गन्धर्व, यक्ष, पितर, भूत, देवता, नाग, देव, शत्रु, राक्षस, पिशाच, प्रेत, राक्षस, क्षेत्रपाल, शाकिनी, डाकिनी, काकण, कामण, यति आदि कहते हैं। यह

भिन्न-भिन्न भाँति से लोगों को भिन्न-भिन्न समय पर परेशान करते हैं।

अब मैं उनकी पहचान का वर्णन प्रस्तुत कर रहा हूँ। इसे पढ़ करके कोई भी कभी भी औपरे की पहचान कर सकता है।

## भूत लगना

जब किसी को औपरे की शिकायत हो तो वह व्यक्ति साधारण लोगों जैसी बातें नहीं करता। उसकी बातों से लगता है कि वह बहुत बड़ा ज्ञानी पुरुष है और उसमें गजब की शक्ति आ जाती है। यदि वह गुस्से में आये तो आठ-दस व्यक्तियों पर तो भारी पड़ता ही है। इसके अलावा जग प्रसिद्ध भूतों के लक्षण भी इसमें आ जाते हैं।

## देवता लगना

जब किसी की देह पर देवता आ जाता है तो रोगी सदा पवित्र रहता है, नहाता-धोता है तथा मैथुन नहीं करता। यह भोजन भी नहीं करता या कम करता है। इसे नींद भी नहीं आती। बातें करने पर यदि प्रसन्न हो तो वरदान देता है। सदा धूप आदि जलाये रखता है तथा पुष्प मिले तो प्रसन्न रहता है। यह संस्कृत का उच्चारण करता है तथा इसकी दृष्टि सदा स्थिर रहती है।

## देव शत्रु लगना

जब किसी व्यक्ति की देह पर देवता का शत्रु आ जाता है तब उस रोगी को पसीना अत्यधिक आता है। उसे भय नहीं लगता। उसे कितना भी खिला दो फिर भी भूखा रहता है अर्थात सदा खाने को चाहिये। यह रोगी शास्त्रों में, गुरु में, धर्म में,

परमात्मा में दोष निकालता रहता है। यह रोगी क्रूर कार्यों को करके अत्यधिक प्रसन्न होता है।

**गन्धर्व लगना**

जब किसी व्यक्ति की देह पर गन्धर्व आ जाता है तो वह व्यक्ति सदा प्रसन्न रहता है। हँसी मजाक की बात करता है। यह फूलों सी भरी क्यारियों को देख हर्षित होता है। प्राय: वन में भाग जाता है। सुगन्धित वस्तुएँ खाना या पहनना चाहता है। जब देखो तब मुस्कराता रहता है। बहुत हल्के स्वर में वार्ता करता है।

**यक्ष लगना**

जब किसी व्यक्ति की देह पर यक्ष लग जाता है तो वह व्यक्ति लाल वस्त्रों में रुचि लेने लगता है। धीमे-धीमे स्वर उच्चारित करता है। व्यक्ति की देह भी पतली हो जाती है। जब वह चलता है तो तीव्र चलता है। इसके नेत्र का रंग ताँबे के रंग की भाँति हो जाता है। ज्यादातर यह नेत्रों से इशारा करता है।

**पितर लगना**

पितर तो अपने ही घर के बड़े-बूढ़े होते हैं। इन्हीं की शान्ति के लिये ही श्राद्ध किये जाते हैं। इतना करने पर भी व्यक्ति विशेष के शरीर पर आते हैं। जब किसी की देह पर पितर आते हैं तो वह व्यक्ति शान्त स्वभाव वाला हो जाता है। जब भी वस्त्र पहनेगा तो पहले बायाँ हिस्सा वस्त्र में प्रवेश करेगा। यह व्यक्ति पिण्ड दान करता है तथा मिठाई, तिल, गुड़ तथा गोश्त आदि खाता है। सदा ही खीर के आदेश देता रहता है और खीर को अत्यधिक प्रसन्न होकर खाता है।

## नाग लगना

जिस भाँति मनुष्य की आत्मा होती है और देह की समाप्ति पर भूतादि का रूप ग्रहण करती है उसी भाँति नाग की भी आत्मा होती है जो कि देह की समाप्ति पर भूतादि की ही भाँति कार्य करती है। जब किसी नाग का भूत किसी व्यक्ति को लग जाता है तो व्यक्ति पृथ्वी पर छाती के बल लेटा रहता है और उसकी सभी हरकतें नाग की भाँति होती हैं। यह क्रोधित होकर गर्म-गर्म श्वास छोड़ता है। दूध पीना चाहता है। प्राय: जीभ के द्वारा होंठों को चाटता रहता है।

## राक्षस लगना

जब किसी व्यक्ति को राक्षस लगता है तब यह व्यक्ति मदिरा पीना चाहता है, खून पीना चाहता है, गोश्त खाना चाहता है। अत्यधिक क्रोधी हो जाता है। जंजीरों में बाँधने पर जंजीरें भी तोड़ डालता है। बहुत कठोर हो जाता है। यह निर्लज्ज हो जाता है। वस्त्र फाड़ कर फेंक देता है। नेत्र लाल हो जाते हैं।

## पिशाच लगना

जब किसी व्यक्ति को पिशाच लग जाता है तो वह नग्न होता रहता है। कमजोर हो जाता है। कटु शब्दों का प्रयोग करता है। देह से अत्यधिक दुर्गन्ध आती है। सदा गन्दा तथा अपवित्र रहता है। स्वभाव में बहुत चन्चलता आ जाती है। एकान्त चाहता है। वन में भाग जाता है। घूमता-फिरता है। कभी-कभी रोने भी लगता है। इसे बहुत भूख लगती है। कभी भी खाने से मना नहीं करता।

## सती लगना

जब किसी स्त्री के शरीर को सती लगती है तब वह स्त्री अधिक वार्ता नहीं करती तथा सदा शृंगार किये रहती है। मन स्थिर नहीं रहता। गर्भपात होता है अर्थात सन्तान उत्पत्ति में बाधक होती है। जब भी बातें करेंगे तो सती प्रथा का पक्ष की बातों से हर्षित होती है। प्रायः शब्द उच्चारण नहीं करती परन्तु यदि कभी बोलती भी है तो आशीर्वाद तथा वरदान देती है। सदा नहा-धोकर पवित्र रहती है। धूप दीया करती है।

## कामण लगना

जब किसी को कामण लगती है तो स्त्री का कन्धा, माथा तथा सिर भारी हो जाता है। मन स्थिर नहीं रहता। देह दुर्बल हो जाता है। गाल धँस जाते हैं। स्तन और नितम्ब भी धँस जाते हैं। नाक, हाथ तथा नेत्रों में जलन रहती है। तेज तत्त्व समाप्त हो जाता है।

## शाकिनी लगना

औपरे की श्रेणी में शाकिनी तथा डाकिनी भी आती है। जब यह किसी स्त्री की देह को लगती है तो स्त्री की सारी देह में दर्द रहता है। नेत्रों में प्रबल पीड़ा रहती है तथा स्त्री बेहोश भी हो जाया करती है। देह पीपल के पत्ते की भाँति काँपती रहती है। रोगिणी चिल्लाती तथा रोती है। खाने में मन में नहीं लगता।

## क्षेत्रपाल लगना

जब किसी व्यक्ति के देह को क्षेत्रपाल लगता है तो वह व्यक्ति राख का तिलक करता है। श्मशान की राख से हर्षित होता

है। बड़े बुरे डरावने तथा अशोभनीय स्वप्न आते हैं। सदा ही पेट में दर्द होता है तथा प्रत्येक जोड़ दर्द करता है। मन एकाग्र नहीं हो पाता।

## ब्रह्म राक्षस

जब किसी व्यक्ति की देह को ब्रह्म राक्षस लगता है तो वह व्यक्ति पीड़ा से निढाल रहता है। समझता है कि अब मैं मर जाऊँगा परन्तु मर भी नहीं पाता। यह व्यक्ति सभी तीर्थों तथा पवित्र कार्यों को करने वाले लोगों के विरोध में बोलता है। यह स्वयं को सबसे उच्च मानने लगता है।

## प्रेत लगना

कभी-कभी कुछ लोग बहुत बुरी तरह अकाल मृत्यु से मरते हैं। पर जब मर कर भूत-प्रेतादि बनते हैं और किसी व्यक्ति को लगते हैं तो वह व्यक्ति चीखता-चिल्लाता है, रोता है, भागता है। इसकी देह बहुत काँपती है। खाता-पीता कुछ भी नहीं। साँस बहुत तीव्र स्वर करते हुए लेता है। किसी का कहा नहीं मानता। कठोर वचनों को उच्चारण करता है।

## चुड़ैल लगना

जब किसी को चुड़ैल लग जाती है तो उसकी देह पुष्ट हो जाती है। मैथुन करना चाहती है। गोश्त आदि खाना चाहती है। गर्भ गिरा देती है। सदा मुस्कराती रहती है।

इस भाँति अनेकों विवरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। क्योंकि औपरे के कारण अनगिनत होते हैं तथा इसकी पहचान भी अपने कारण के अनुसार ही विभिन्न होती है।

उपरोक्त विवरण में समस्त औपरे की देह पर की शिकायत बतायी गई है। परन्तु कभी-कभी यह सभी औपरे व्यक्ति के सामने स्वयं आ करके मनुष्य की भाँति वार्ता करते हैं। यह लोग अपनी इच्छानुसार देह दिखाते हैं। प्रायः स्त्री औपरे, पुरुषों के समक्ष आकर अत्यधिक रूप दिखा करके भ्रम में डालते हैं और मैथुन कर-करके परिवार बना लेते हैं। इसी भाँति पुरुष औपरे भी इच्छानुसार लुभावनी देह बना कर स्त्रियों के साथ विषयभोग करके परिवार बना लेते हैं। यह सारी स्थितियाँ बड़ी ही विकट होती है। कभी-कभी यह औपरे देह के ऊपर आकर देवी-देवता का परिचय देते हैं। कभी-कभी पूजन कार्य में चढ़ायी गई सामग्री से प्रभावित होकर आ आते हैं और साधक के विपरीत लिंगी वाला रूप धर करके साधक को वशीभूत कर लेते हैं तथा अपनी पूजा कराते रहते हैं।

## तेल बल

यह एक वृक्ष होता है तथा इसे बद्री केदार के वनों में अधिकता से प्राप्त किया जाता है। इसकी टहनी पर सिम्बल वृक्ष की भाँति घनघोर काँटे होते हैं। इसकी डण्डी को प्रायः हाथ में लेकर कुछ योगीजन घूमते हैं। इसके काँटे पीस कर खाने से पेट का दर्द समाप्त हो जाता है।

## छुहारा

छुहारे के अन्दर एक गुठली होती है। कभी-कभी यह गुठली

योनि के आकार की या फिर दोहरी जुड़ी हुई होती है। यह अकस्मात् ही प्राप्त होती है। इसकी प्राप्ति छुहारे से ही होती है। यदि कभी छुहारा खाते हुए आपको इस भाँति की गुठली मिल जाय तो उसे व्यर्थ जानकर फेंक न दें। बल्कि संग्रह कर लें।

यदि आपको जुड़वा गुठली मिले तो उसे जल से धो करके धूप दीप करें और ताबीज में भर करके धारण कर लें। इसके प्रभाव से आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत हो जायेगा।

यदि आपको योनि रूपी गुठली मिले तो उसे लाल वस्त्र लपेट कर पूजन स्थल पर रखें। इसके प्रभाव इष्ट सिद्धि शीघ्र मिलती है।

## एकाक्षी नारियल

आपने जब-जब पानी वाला नारियल लेकर छीला होगा तब-तब आपने उसमें दो या तीन काले रंग के गोल-गोल दाग से देखें होंगे। यदि कभी एक दाग वाला नारियल मिले तो उसे फोड़ें नहीं बल्कि उसे लक्ष्मी मान कर उसकी पूजा करें तथा घर में या खजाने में स्थापित कर दें। इसके प्रभाव से दिन-प्रतिदिन धन की बढ़ोत्तरी होने लगती है।

## महाशंख

जो साधक महाशंख की माला से जप करता है वह निःसन्देह अणिमादि सिद्धियों को प्राप्त करता है। यह माला बनानी तथा प्राप्त करनी तो सरल है क्योंकि इसमें धन का कोई व्यय नहीं

होता परन्तु खतरनाक अवश्य है। धन के विषय में जितनी सरल है उतनी ही स्वर्ग से भी दुर्लभ है। क्योंकि स्वर्ग तो आपको प्राप्त हो जायेगा परन्तु इस माला की प्राप्ति किसी व्यवसायिक व्यक्ति से नहीं होती। इसे प्राप्त करने के लिये श्मशान में घूमना पड़ता है। यह माला भाग्यवश ही गुरु कृपा से प्राप्त होती है तथा व्यक्ति बना पाता है। इस माला के द्वारा सही मन्त्रों का जप करना चाहिये। मन्त्र के समस्त दोषों को यह माला समाप्त कर देती है। मन्त्र किसी भाँति के दोष से युक्त हो सकता है परन्तु यह माला कभी भी दोषी नहीं होती। इसी कारण 'महाशंखं सर्वत्र तेषु योजितम्' अर्थात महाशंख ही सब प्रकार के मन्त्रों से लाभ प्राप्त करने के लिये सर्वश्रेष्ठ हैं।

पूर्वजन्म के शुभ तथा सफल कर्मों के प्रयास से यदि कभी किसी को महाशंख की माला प्राप्त हो जाती है तो वह व्यक्ति तो क्या उसका सारा परिवार ही समस्त साधनाओं का लाभ प्राप्त कर लेता है।

## महाशंख है क्या?

महाशंख के विषय में समस्त प्रभावशाली तथ्य केवल कुछ शाक्त ही जानते हैं। इसके अलावा सभी लोग तन्त्र में शंख का प्रयोग इसी महाशंख के कारण करते हैं। लेखक लोग शंख को ही तान्त्रिक सामग्री मान करके ग्रन्थ पूर्ण कर देते हैं। मैं आपसे यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि शंख और महाशंख क्या है? तथा इनके तन्त्र प्रयोग क्या हैं?

शंख को बजाना शुभ होता है। शंख के द्वारा अर्घ्य दिया

जाता है। शंख के द्वारा कुछ सेवन किया जाता है। देव स्नान भी शंख के द्वारा ही कराते हैं। इसके अलावा तन्त्र में शंख के कोई प्रयोग नहीं होते यदि कोई करता है तो क्या कहा जाय? एक बार मैंने एक उपासक को शंख में घी भर कर उसी में रुई की बाती डाल करके दीपक की भाँति शंख का प्रयोग करते देखा था। अब उसे कहा क्या जाय? शंख शान्ति, सौम्यता शुभता का प्रतीक होता है।

एक और शंख होता है 'दक्षिणावर्ती शंख'। इस शंख का प्रयोग लक्ष्मी उपासना में किया जाता है। यह शंख धन का लाभ कराता है।

अस्तु, प्रस्तुत विषय शंख पर वार्ता करने के लिये नहीं बल्कि महा शंख की वार्ता करने के लिये है।

वास्तव में महाशंख और शंख में बहुत भेद होता है।

व्यक्ति के प्राणान्त हो जाने पर उसी शव से यह महाशंख प्राप्त होता है और शंख? यह तो सर्वविदित है। अत: शंख तथा महाशंख में इस भेद को सदा याद रखना चाहिये।

स्त्री और शूत्र से चण्डाल की उत्पत्ति होती है तथा 'तज्जायश्चेव चाण्डाल सर्व मन्त्र विवर्जित:' इसी कारण यह लोग मन्त्रों से हीन होते हैं। 'मन्त्रहीनेतुस्थ्यादिसर्ववण्र विभूषिताम्' जो लोग मन्त्रों से हीन होते हैं उन्हीं की अस्थियों में सभी वर्ण रहते हैं।

हिन्दी की शब्द माला को ही वर्ण या वर्णमाला कहते हैं। इन्हीं वर्णों पर 'अं' की मात्रा लगने से यह वर्ण बीज वर्ण बन जाते हैं। 'अ' से लेकर 'क्ष' तक के सभी वर्ण अस्थियों के मध्य सदा

विद्यमान रहते हैं। अगले पृष्ठ पर एक पुरुषाकार आकृति दी गई है और इस पर उन सभी अंगों पर चिह्न दर्शाये गये हैं जिन-जिन स्थानों की अस्थि लेकर माला बनाने पर वह महाशंख की माला कहलाती है।

इस माला के द्वारा जप करने से समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। उपरोक्त स्थानों की अस्थियाँ लेकर स्थानानुसार ही माला में पिरोयें। इस माला को सर्प की भाँति बनायें अर्थात आगे से मोटी होते-होते जाकर पतली हो जाय। स्पष्टत: यह समझ लें कि माला का मूल मोटा और फिर क्रमश: पतली होती चली जाय। माला को बनाते समय पहले मोटी अस्थि डालें फिर उससे पतली, फिर और उससे पतली अस्थि पिरोते जायें। मुख्यत: यही स्मरण रखना है कि पहले मोटी तरफ से माला बना करके क्रमानुसार छोटा और उससे छोटा करते चला जाय। इस माला को बनाते समय पृष्ठ १८३ में चित्रानुसार जहाँ-जहाँ पर * चिह्न लगे हैं उन-उन स्थानों की अस्थियाँ ली जायेंगी। सिर से पैर तक की अस्थियाँ क्रमशः पिरोई जायेंगी। जब यह माला बन जाय तो प्रणव की गाँठ लगा दें। इसके ऊपर एक लम्बी अस्थि डाल कर पुनः ब्रह्मगाँठ लगायें। इसे बना करके फिर प्राण प्रतिष्ठा करें। प्राण प्रतिष्ठा का विधान मेरी पुस्तक 'मन्त्र रहस्य' में प्रस्तुत कर दिया गया है।

इसके बाद इस माला को गुप्त कर लें। किसी को भी नहीं दिखायें। जब आप इस माला पर जप करें तो मोटी तरफ से शुभारम्भ करें और पतली तरफ समापन करें। पुनः मोटी तरफ से प्रारम्भ करें। इस भाँति करने से निश्चित ही सिद्धि प्राप्त होती है।
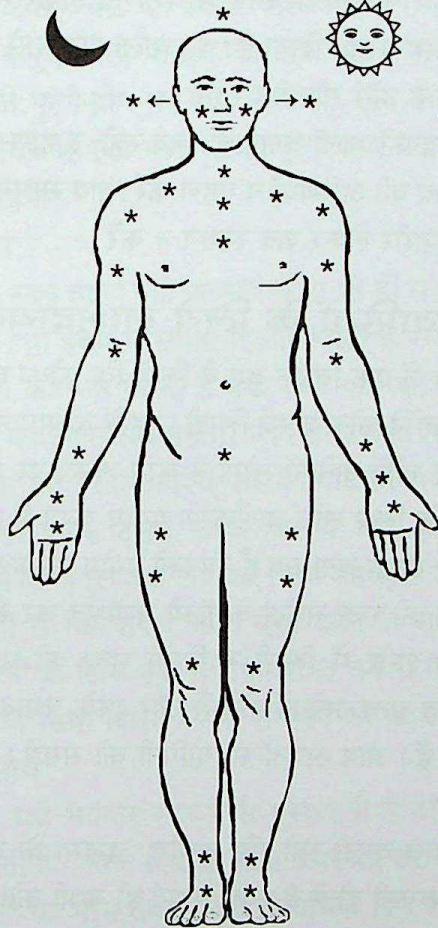
इस चित्र में वह स्थान दर्शाये गये है जिन स्थानों की अस्थियाँ महाशंख की माला बनाने के हेतु ग्रहण करते है।

आप सब पाठकों के स्नेह से वशीभूत होकर महाशंख की माला का रहस्य प्रस्तुत किया है। यह माला प्रारम्भ से ही गोपनीय थी, गोपनीय है और गोपनीय रहेगी।

महाशंख की माला बनाने के लिये स्त्री, ब्राह्मण तथा दीक्षित व्यक्ति के शव की अस्थियाँ न ग्रहण करें। शव साधन करने वाले भी स्त्री का शरीर लेकर शव साधन न करें।

## विवाहितों के लिये लाभदायक

कश्मीर में एक विद्वान हुए थे जिन्हें कि कोका पण्डित कहा जाता था। उन्होंने कोक शास्त्र लिखी। महर्षि वात्सायन ने कामसूत्र लिखी। इसी भाँति अनेकों लोगों ने काम शास्त्र पर शोध किया। इसी क्रिया के लिये लोग वशीकरण प्रयोग करते हैं। मैं यहाँ पर स्त्री के कुछ रहस्य बता रहा हूँ जिनको प्रयोग करके प्रत्येक पुरुष अपनी पत्नी को सदा सर्वदा के लिये वशीभूत कर सकता है।

प्रत्येक शरीर में किसी न किसी सत्व की बहुलता पायी जाती है। यह सत्व अनेकों होते हैं और इनके प्रभाव भी बड़े ही विशेष होते हैं। आप अपनी सहयोगिनी को समझें।

### देव सत्व

देव सत्व वाली स्त्री गौर वर्णीय, चन्द्रमा के समान आभा वाली तथा रूपसी होती है। यह शायद ही कभी क्रोध करती हो। इसका मन देवताओं की भाँति होता है। इसी कारण इसे देव सत्व वाली स्त्री कहा गया है। यदि आपके साथ देव सत्व वाली स्त्री का विवाह हो जाय तो मैथुन करते समय उसका सिर पूर्व दिशा

की ओर अवश्य कर दें। इसके अलावा मैथुन से पूर्व पीपली, मुलेहठी, कपूर, सोंठ, पाटला का अर्क एकत्र करके लेप बनायें तथा अपनी पुरुषेन्द्रीय पर लेप लगा लें, ऐसा करने से आपकी स्त्री आजीवन आपकी स्नेह भाजन होगी तथा सदा सर्वदा आपके वशीभूत रहेगी।

## मुनि सत्व

मुनि सत्व वाली स्त्री का रूप कैसा भी हो सकता है। इसकी आँखों में तथा हृदय में ममता हिलोरें भरती है। यह स्त्री माँ की भाँति सभी को प्यार करती है तथा सभी की रक्षा करती है। यदि ऐसी स्त्री का आपसे विवाह हो जाय तो उसका सिर मैथुन करते समय उत्तर की तरफ अवश्य कर दें। यदि हो सके तो बैगन का रस निकाल करके उसमें नमक मिलायें और अपनी पुरुषेन्द्रीय की जड़ में दो अंगुल तक लेप करें। जब यह सूख जाय तब अपनी सहयोगिनी से विषयानन्द करें। ऐसा करने से सदा सर्वदा आप अपनी पत्नी के लिये एक विशेष व्यक्ति बने रहेंगे और स्वप्न में भी आप के सिवा किसी से भी सम्भोग की कामना न करेगी।

## राक्षस सत्व

यह स्त्री भयंकर स्वरूप से मुस्कराती है और इसके वचन कठोर होती है। इसके सिर के बाल ऊपर को उठे हुए से होते हैं। इसे मछली का माँस तथा मदिरा अत्यधिक प्रिय लगती है। इसके बालों में लाल वर्ण की आभा पायी जाती है। यदि ऐसी स्त्री से आपका विवाह हो जाय तो विषयानन्द करते समय इसका सिर नैऋत्य दिशा में अवश्य कर दें। मैथुन करते समय सूअर की चर्बी

में शहद मिला करके अपनी इन्द्री पर लेप अवश्य कर लें। इन उपायों के फलस्वरूप यह स्त्री आपके प्रभाव में रहेगी।

## भूत सत्व

इस स्त्री का पेट बड़ा होता है तथा जाँघ छोटी-छोटी होती हैं। यह स्त्री लड्डू तथा हलुए आदि अत्यधिक प्रसन्न होकर खाती है। यदि इस भाँति की स्त्री से आपका विवाह हो जाय तो जब भी विषय भोग करें तो उसका सिर ईशान दिशा की तरफ अवश्य कर दिया करें। सफेद सुर्मा, सेंधा पीस करके शहद में मिला करके अपने पुरुषेन्द्री पर लेप अवश्य कर लिया करें। इसके प्रभाव के कारण होने वाले लाभ से आप स्वतः ही चमत्कृत होंगे। यह स्त्री कल्पना में भी आपके अलावा किसी और के विचार से मदन रस भी नहीं छोड़ेगी।

## यक्ष सत्व

यह स्त्री श्याम वर्ण की होती है तथा इसके अंग कोमल होते हैं। यह सदा फूलों तथा खुशबुओं को चाहती है। इसका स्वभाव निर्लज्जता वाला होता है। यदि ऐसी स्त्री से आपका विवाह हो जाय तो मैथुन करते समय इसका सिर नैऋत्य दिशा की तरफ अवश्य कर दें। मैथुन से पहले केशर, कपूर, पीपल, कूठ, गोरोचन को पीस करके शहद में मिला करके स्त्री के गुह्य प्रदेश में लेप कर दें। ऐसा करने से यह स्त्री सदा ही आपके गुणगान करती रहेगी।

## नाग सत्व

इस स्त्री को गुड़, चावल की पिट्ठी, नारियल तथा धवा वृक्ष

को गोंद अत्यधिक प्रिय होते हैं। यदि इस भाँति की स्त्री का पति बनने का सौभाग्य आपको प्राप्त हो तो उसे मैथुन करने के लिये सुरा पिलायें तथा उसका सिर वायव्य दिशा की तरफ अवश्य कर दें। कनेर वृक्ष का दूध, केतकी का पांचांच केशर तथा कपूर को शहद में मिला करके अपने गुप्त स्थान पर अवश्य लेप कर लें। इस प्रयोग के लाभ स्वरूप वह स्त्री आपको सदा सहयोग करेगी। आपके वशीभूत रहेगी।

## स्त्री वशीकरण

यदि किसी स्त्री को वशीभूत करना हो उसके बायें पाँव के नीचे की धूल ले लें। यह कार्य शनिवार को करें। उस धूल की पुतली बनावें और उस पुतली के सिर में उसी स्त्री के बाल लगा दें। इसके बाद इस पुतली को नीले वस्त्र पहना दें। इस पुतली पर स्त्री के समस्त अंग बनाने अनिवार्य हैं। पुतली बना लेने के पश्चात् पुतली की योनि पर अपना वीर्य त्याग करें। इसके बाद इस पुतली को धूप दीप करके उस स्त्री के द्वार पर या उसके आने-जाने वाले डगर में गाड़ दें। जब वह स्त्री उसे लाँघेगी तब ही वह आपकी तरफ आकर्षित होगी और समय निकाल कर आपको अवश्य प्राप्त होगी।

## ओपरे का उतारना

यदि किसी व्यक्ति को औपरे की शिकायत हो तो यह भी करके देखें। कोयले के सात टुकड़े, एक अण्डा, थोड़ा सा चावल,

थोड़ा हलुवा, बरगद की तथा पीपल की टहनी ले लें।

**पहला प्रयोग**

एक मिट्टी का सकोरा लें उसमें हलवा डाल दें। इसके ऊपर कोयला रख दें, कोयले के ऊपर कच्चा चावल डाल दें। इस बर्तन को रोगी के ऊपर से सात बार घुमा कर उतार लें। इसके बाद इसमें बरगद पीपल की टहनियाँ रख दें। इसे उठा करके किसी चौराहे पर रख दें। यह अण्डा उस सकोरे पर मार कर फोड़ दें और बिना पीछे मुड़े वापस घर आ जायें।

**दूसरा प्रयोग**

एक नारियल लें और उसे रोगी के ऊपर सात बार घुमा करके रोगी के सामने ही फोड़ दें (फूटे हुए नारियल की गिरी को किसी चौराहे पर डाल दें।)

**तीसरा प्रयोग**

एक नारियल का खोपा लें। उसमें सरसों का तेल भर, थोड़ा सा सिन्दूर डालें, काले उड़द डालें। एक लौंग रोगी के मुख में रख दें। यह खोपा रोगी के ऊपर इक्कीस बार घुमा करके उतारें। उतारा करके रोगी के समस्त वस्त्र उतरवा दें और उसके मुख वाला लौंग खोपे में ही थुकवा दें और स्वयं की रक्षा करते हुए किसी भी चौराहे पर रख करके सावधानी से वापस आ जायें।

**चौथा प्रयोग**

एक नींबू लेकर रोगी के ऊपर सात बार घुमा करके उतारें और रोगी के सामने रख दें। अब एक चाकू लेकर सिर से पाँव तक धीरे-धीरे स्पर्श करते हुए लायें तथा नींबू तक ले जायें। अब

आप नींबू को काट दें। जब इसे काट दें तो ईशान दिशा की तरफ फेंक दें।

### पाँचवा प्रयोग

एक ही रस्सी से बँधे हुए दो गधे देखें। जब यह मिल जायें तो उनकी रस्सी खोल लायें और रोगी के गले में पहना दें।

### छठा प्रयोग

एक अण्डा लें और रोगी के ऊपर से ग्यारह बार घुमा करके उतारें। इसके बाद इस अण्डे पर काली स्याही से मकड़ी का जाल बना दें और किसी नदी में डाल दें।

## चोला (हनुमान)

किसी भी संकट की निवृत्ति के लिये हनुमान जी को चोला चढ़ायें। सिन्दूर में चमेली का तेल मिला करके लेप सा बनायें तथा किसी मंगलवार या शनिवार के दिन किसी मन्दिर में जाकर मूर्ति के पूर्ण शरीर पर वह लेप करके हनुमत बीसा पढ़ें। पूर्ण विधि सहित विस्तृत विवरण परिशिष्ट खण्ड में देखें।

इस क्रिया के फलस्वरूप कई बार कुछ ऐसी स्थितियाँ प्रस्तुत होती हैं कि आपको चौकना नहीं चाहिये क्योंकि ऐसे समय किसी भी रूप में कोई शक्ति उपस्थित हो जाती है। उसे दुत्कारें नहीं बल्कि उससे अपने संकट के निवारण की प्रार्थना करें।

## रहस्यमयी प्रयोग

सिन्दूर लगी हनुमान जी की मूर्ति के माथे का सिन्दूर लेकर

सीता जी पाँव में लगा दें और जो चाहिये वही निवेदन करें परन्तु यह निवेदन एक ही साँस में होना चाहिये। इस प्रयोग के प्रभाव से आप अवश्य ही प्रसन्न होंगे।

## पितृ दर्शन

प्राय: लोग विश्वास नहीं करते कि पितृ भी कुछ होते हैं। जो लोग मानते हैं वही श्राद्ध करते हैं। यह श्राद्ध केवल अपने पिता तथा माता का ही करते हैं जबकि घर के सभी बड़े-बूढ़े मृत्यु के बाद पितृ कहलाते हैं। व्यक्ति के उत्थान के लिये इनका सहयोग होना बहुत आवश्यक होता है। यहाँ पर उनके लिये एक प्रयोग बताया जा रहा है जो कि पितृ प्रथा को नकारते हैं।

रविवार का दिन हो तो एक गधा खाजें। जब यह मिल जाय तो कोई बर्तन लेकर उसके पेशाब करने का इन्तजार करें। गधा जब पेशाब करे तो सावधानी से उस पेशाब को पृथ्वी पर गिरने से पहले ही बर्तन में ले लें और घर आ जायें। घर आकर इस मूत्र को गूगल की धूनि दें। जब रात्रि हो तो इस मूत्र को नेत्रों में लगा लें और वातावरण में घूमते-फिरते पितृ देख लें। चाहें तो उनसे बात करें परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि वह आपकी बात का उत्तर दें।

## शादी के हेतु उपाय

यदि कन्या की शादी का बार-बार प्रयास करने पर भी काम न बने तो जिस दिन उसे दिखाने के लिये ले जायें तो उसकी

विवाहित सहेली से एक चूड़ी माँग कर पहना दें। इस कार्य में सावधानी यही करनी है कि यह चूड़ी वापिस न करें। यदि इस चूड़ी को एक दिन पहले प्राप्त कर लिया जाय तो एक और प्रयोग कर लेना चाहिये। रात्रि में एकान्त होने पर एक पटरे पर लाल वस्त्र फैला कर वह चूड़ी उसके ऊपर रख दें। इसके बाद सारे वस्त्र उतार कर इस चूड़ी की पंचोपचार विधि से पूजा करें। इस पूजन के बाद चूड़ी पहन कर सारे वस्त्र पुनः पहन लें। अगले दिन दिखाने के लिये जाते समय घर से निकल कर पुनः वापिस न आयें तथा मुड़ कर भी न देखें।

## काजल द्वारा वशीकरण

किसी भी व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाने के लिये अनेकों प्रयोग किये जाते हैं, जिनमें से तन्त्र खिलाना, तन्त्र दबाना, तन्त्र लगाना या तन्त्र दिखाना होता है। प्रस्तुत प्रयोग तन्त्र दिखाना है, क्योंकि बतायी गई विधि के अनुसार काजल बना करके अपने नेत्रों में लगाया जायेगा और अभिलाषित व्यक्ति को सम्बोधित करके नेत्र से नेत्र मिलाया जायेगा। इस भाँति करने से अभिलाषित व्यक्ति मेहरबान हो जाता है।

काजल द्वारा वशीकरण करने के लिये एक काली बिल्ली लीजिये और उसे दो छाँटाक शुद्ध देशी घी खिला दीजिये। इसके बाद उस बिल्ली को अपने सामने रखें, कहीं भी न जाने दें, चाहें तो उसे रस्सी में बाँध लें। आप जानते हैं कि बिल्ली दूध की चहेती होती है, इस कारण वह घी को खायेगी नहीं उसे किसी

शीशी के द्वारा कण्ठ से नीचे घी उतार दें। चूँकि यह घी नहीं खाती अतः कुछ समय बाद बिल्ली इस घी को उगल देगी। इसी उगले हुए घी को सावधानी से संग्रह करके रख लें और बिल्ली के प्रति जैसी आपकी इच्छा हो वैसा ही करें। घी प्राप्त कर लेने के बाद इस प्रयोग में बिल्ली की आवश्यकता नहीं है। यदि आप बिल्ली की आँवर प्राप्त करना चाहें तो उसे पाल लें अन्यथा छोड़ सकते हैं।

रविवार की रात्रि किसी एकान्त स्थान पर बैठ करके इस घी का दीपक जलायें। इस दीपक में बत्ती के हेतु लाल धागा प्रयोग करें। जब दीपक बन जाय तो उसे जला दें। इस दीपक में लौ के ऊपर एक मिट्टी की प्याली उलट कर रखें जिसमें कि काजल तैयार होगा।

दीपक की बाती कुछ अधिक बाहर रखें, जिससे कि काजल उड़े। अब आप देखेंगे कि मिट्टी के प्याली के भीतर तो काजल एकत्र हो ही रहा है, इसके साथ ही कुछ काजल उड़ करके कुछ प्याली के ऊपर बैठ रहा है। इस क्रिया को दीपक के बन्द होने तक चलने दें। जब दीपक स्वतः ही बन्द हो जाय तब प्याली के ठण्डा होने पर प्याली के ऊपर उड़ करके पड़ने वाला काजल हल्के हाथ से उतार लें। यहाँ पर स्मरण रखें कि प्याली के भीतर वाला काजल ग्राह्य नहीं है।

अब आपके पास वशीकरण करने हेतु काजल एकत्र हो गया है और जब भी आपको आवश्यकता हो तो इस काजल को नेत्रों में लाकर अभिलाषित पुरुष या स्त्री के पास जाकर उसे

सम्बोधित करें। सम्बोधन के कारण वह आपकी तरफ देखेगा, उसी क्षण उसके नेत्र आपको नेत्रों से मिलेंगे और यही कुछ क्षण उसे सदा के लिये आपका बना देंगे।

## वशीकरण का गोपनीय प्रयोग

यह प्रयोग अनादिकाल से गुप्त रहा है जिसे कि आप सब पाठकों के स्नेह के वशीभूत होकर लिख रहा हूँ। यह प्रयोग खतरनाक है, अतः खिलवाड़ न करें।

इस प्रयोग को करने से पहले किसी शुभ अवसर पर निम्नलिखित मन्त्र को सिद्ध कर लें। यह मन्त्र एक सौ आठ बार जपने से सिद्ध हो जाता है।

**मन्त्र—"ॐ नमो भगवती सूची चाण्डालिनि नमः स्वाहा।"**

इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिये कहने का अभिप्राय केवल यही है कि उपरोक्त मन्त्र आपको भली-भाँति कण्ठाग्र हो जाय। यदि आप इसे सहजता से ही याद कर लेते हैं तो सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह मन्त्र सदा सर्वदा से सिद्ध मन्त्र है।

अब आप मधुमक्खी के छत्ते से मोम प्राप्त करें। यह मोम देशी मोम के नाम से पन्सारी से भी प्राप्त की जा सकती है। मोम प्राप्त करके आधी रात के समय जब सभी सो गये हों तब इस मोम की एक प्रतिमा बनावें जो कि आपके द्वारा अभिलाषित व्यक्ति की हो। इस प्रतिमा में उस व्यक्ति के सम्पूर्ण अंग भली-भाँति बनायें। यदि किसी स्त्री की प्रतिमा है तो उसके स्तन तथा

योनि भी बनानी होगी।

अभिलाषित व्यक्ति की मूर्ति बनाते समय उपरोक्त मन्त्र का निरन्तर जाप करते रहें और जब मूर्ति बन जाय तो उसमें प्राण प्रतिष्ठा कर दें।

आपको जब भी वशीकरण करना हो तब उपरोक्त मन्त्र को पढ़ते हुए, मूर्ति के हृदय को अंगारों से आँच पहुँचायें। इस क्रिया को रात्रि दस बजे से दो बजे तक करें तो अभिलाषित व्यक्ति वशीभूत होकर शीघ्र ही प्रस्तुत हो जाता है।

## शत्रु अंधा हो

यहाँ पर प्रस्तुत किये गये समस्त प्रयोग अत्यन्त खतरनाक तथा शीघ्र प्रभावी हैं। कृपया इन्हें याद तो रखें परन्तु प्रयोग कभी न करें। मैंने केवल तन्त्र की शक्ति बताने के लिये ही इस पुस्तक में अनेकों प्रयोग बताये हैं जिससे कि आप अपने भारत की प्राचीन तथा महान विद्या पर गर्व कर सकें। आज जबकि हथियारों की होड़ चरम सीमा को पार कर रही है तब प्रत्येक भारतीय को बताना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि भारत में कुछ ऐसा भी है, जो कि हथियारों को भी व्यर्थ कर सकता है।

अब मैं शत्रु को अन्धा करने की विधि बता रहा हूँ। इस कार्य के लिये अमलतास वृक्ष की जड़ लेकर उसे एक प्रतिमा का रूप दें। यह रूप आपके शत्रु का होगा। इस प्रतिमा पर सभी अंग उभरे हुए हों और नेत्र तो विशेष ही उभारें क्योंकि यही स्थान आपके प्रयोग के लिये हैं।

जब यह प्रतिमा बन चुके तो कृष्ण पक्ष के चौदसी वाले दिन जो कपिला गाय हथियार से मारी गई हो उसका पित्त ले आयें, इस पित्त को उस मूर्ति की आँखों में अन्जन की भाँति लगायें या दोनों नेत्रों में यह पित्त भर दें। इस क्रिया के प्रभाव से शत्रु अन्धा हो जायेगा और आप जानते ही हैं कि तन्त्र के प्रयोग के कारण हो रही क्रिया किसी दवा से ठीक नहीं होती।

## वशीकरण प्रयोग

किसी भी रविवार या सोमवार को इस प्रयोग के लिये आवश्यक क्रिया करनी होगी। आप शुद्ध होकर मोहिनी देवी की पूजा करके निकलें, खुले में आकर आप आकाश की तरफ देखें। जब आप को कोई चील उड़ती हुई मिले तो तीव्रता से देखें कि उसकी परछाई कहाँ पर पड़ रही है। जैसे ही आपको उड़ती हुई चील की परछाई दिखायी पड़े तो उस परछाई के ऊपर की मिट्टी उठा लें और वापस आ जायें।

जब आपको किसी को वशीभूत करता हो तब यह मिट्टी उसके सिर के ऊपर छिड़के दें। यह क्रिया करते ही वह व्यक्ति आपके वशीकरण के प्रभाव में आ जायेगा।

## आसन स्तम्भन

आसन का अर्थ पूजा हेतु बिछाये गये आसन से लगाया जाता है और यह उचित भी है।

प्रस्तुत प्रयोग में कहीं पर बैठे हुए व्यक्ति से अभिप्राय है कि

वह कहीं भी, कैसे भी बैठा हुआ है। आपके प्रयोग करने से वह जहाँ पर और जैसे भी बैठा है वैसा ही बैठा रह जायेगा, जब तक कि आप उसे बैठाये रखना चाहें। इसे आसन स्तम्भन कहते हैं।

इस प्रयोग के लिये कुत्ते तथा कुतिया के बाल लें। यह बाल तब लेंगे जब कुत्ता और कुत्तिया विषयभोग के बाद जुड़े रह जायें। इसके बाद नदी के दोनों किनारे की मिट्टी उठा लायें। संग्रह की गई मिट्टी को एकत्र करके एक गोली बना लें और अंकोल का तेल प्राप्त कर लें। अब आप आसन स्तम्भन के हेतु प्रयोग कर सकते हैं।

आपको जिसका भी आसन-स्तम्भन करना हो, उसका नाम लेकर उस गोली को अंकोल के तेल में डाल दें। ऐसा करते ही वह व्यक्ति जहाँ पर है, जिस भाँति है, उसी भाँति रह जायेगा। जब आप तेल से गोली निकालेंगे तभी वह व्यक्ति कुछ कर पायेगा।

आसन स्तम्भन के इस प्रयोग से आप किसी को भी, कभी भी स्तम्भित कर सकते हैं।

## बिच्छू

यह एक ऐसा जीव है जिसे प्रत्येक व्यक्ति भली भाँति जानता है अतः परिचय न दे करके इसके कुछ प्रयोग बता रहा हूँ जो कि विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।

### बिच्छू का डंक

जब कभी बिच्छू डंक मारे तो कुछ मक्खियाँ पकड़ कर मार

दें और डंक वाले स्थान पर बाँध दें। इससे पीड़ा शान्त हो जायेगी।

**बिच्छू उच्चाटन**

जब घर में बिच्छू निकलने लगे हों या आने लगे हों और कोई उपाय न चलता हो तो एक बिच्छू पकड़ कर घर में जला दें। इसके बाद कभी भी घर में बिच्छू न आयेंगे और न ही निकलेंगे।

**पथरी रोग**

यह एक कठिन रोग है और ऑपरेशन करने के बाद भी पुनः पथरी बन जाया करती है। इसके कारण बहुत दर्द होता है। यदि एक बिच्छू पकड़ कर उसकी भस्म बना कर खायी जाये तो पथरी रोग समूल नष्ट हो जाता है।

## विशेष वशीकरण

प्रस्तुत प्रयोग अत्यधिक सरल तथा शीघ्र प्रभावी है। इस विशेष वशीकरण के प्रभाव से जीव तो क्या, वृक्ष के फूल फलादि भी बुलाने से आ जाते।

किसी शुभ अवसर पर एक लोहे का छल्ला बनवा लें जो कि आपकी अंगुली में आ सके। इसके बाद उस समय का इन्तजार करें जब पुष्य नक्षत्र हो, कृष्ण पक्ष हो तथा चौदस हो। जब आपको यह संयोग प्राप्त हो, तब आपको एक कुत्तिया ढूँढनी होगी जो कि कामुक होकर किसी कुत्ते की खोज में हो या कुत्तों ने कुत्ती को गर्मा दिया हो। जब आपको ऐसी कुतिया मिल जाय तब उस छल्ले को कुत्तिया की योनि में डाल दें और उसका ध्यान रखें। जब वह छल्ला उसकी योनि से निकल जाय तो उसे उठा

लें। इस छल्ले के द्वारा आप किसी को भी, कभी भी बुला सकते हैं। वह अवश्य आयेगा। इस विषय में स्मरण यही रखना है कि जिसे बुलाया जा रहा है, वह आपसे अधिक दूर न हो।

## चोरी पकड़ें

प्रायः चोरी होती ही रहती है और चोरी करने वाला व्यक्ति भी आस-पास का ही होता है। यह भी देखने में आया है कि प्रायः लोग जानते हैं कि अमुक ने चोरी की है परन्तु प्रमाण के अभाव में कुछ भी नहीं कर पाते। प्रस्तुत प्रयोग इसी समस्या के समाधान हेतु है।

एक मेंढक पकड़ कर काटें और उसका गोश्त निकाल कर आटे में मिला करके आटा गूँथ लें। इस आटे की रोटी पका लें और जिस व्यक्ति के ऊपर सन्देह हो कि इसने चोरी की है या करवाई है तो वह रोटी उसे खिला दें। इस रोटी को खाते ही वह चोरी का सारा रहस्य स्वयं ही बता देगा।

## उच्चाटन प्रयोग

शिवजी के कण्ठ में लिपटे सर्प की जाति का सर्प और उसके बच्चे लेकर मार दें। इसके बाद इन्हें किसी सर्प के ही बिल में गाड़ दें। एक महीने तक दबा रहने के पश्चात् निकालें और सावधानी से रख लें।

जिस व्यक्ति को उच्चाटन करना अभिप्रेत हो तो इसमें से कुछ शत्रु के उस रास्ते या द्वार में गाड़ दें, जहाँ से उक्त व्यक्ति का

आवागमन अधिक रहता हो। बाकी बची हुई सामग्री को अग्नि की दिशा की तरफ यह कहते हुए फेंक दें, "इस स्थान पर रहने वाली समस्त आत्माओं जाओ और तुम सभी लोग वह बलि ग्रहण करो। यह बलि केवल तीन दिन के लिये ही है।"

इसके साथ ही यह मन्त्र भी पढ़ें—"**ॐ नमो भगवते डामेश्वर मूर्त्तये 'अमुक' उच्चाटयोच्चाटय स्वाहा।**"

इस प्रयोग के प्रभाव से एक ही हफ्ते में उपरोक्त व्यक्ति अन्यत्र चला जाता है।

## पाताल तुम्बी

यह एक वनस्पति है, जिसे कि नागतुम्बी भी कहते हैं। यह प्रायः मैदानों में तथा खेतों में स्वतः ही उग जाती है। इसके ऊपर बहुत बारीक काँटे होते हैं, जिसका कि रंग भी पीला होता है। यह काँटे बिच्छू के डंक के समान ही होते हैं। यह प्रायः साँप के बिलों के पास अधिक मिलती है। यह लता जाति की है तथा उसके ऊपर तुम्बी के समान फल लगते हैं।

यह एक चमत्कारिक दिव्य औषधि है।

## विद्वेषण

अब आपको कुछ लोगों का परस्पर झगड़ा करा देने का प्रयोग बता रहा हूँ।

एक ऐसी स्त्री का चुनाव करें जो कि विधवा हो तथा दुर्भाग्यशाली भी हो। जब ऐसी स्त्री मिल जाय तो उसे कुछ पैसों

का लोभ देकर यह कार्य करवा लें।

जब उसे मासिक स्राव प्रारम्भ हो तब सरसों के दाने लेकर वह अपनी योनी में रख ले और जब तक मासिक होता रहे, यह दाने भग में ही रहे। प्रायः मासिक तीन से सात दिन तक रहा करता है।

मासिक समाप्त होते ही उसके नहाने के पहले ही वह सरसों के दाने प्राप्त कर लें। इसके बाद जहाँ झगड़ा कराने की इच्छा हो, वहाँ पर यह दाने फेंक दें और प्रभाव को स्वयं देखें।

## पूर्व जन्म देखें

प्रस्तुत प्रयोग करने से पूर्व जन्म दिखाई देता है। जबकि इसके दिखायी देने क़ोई लाभ विशेष नहीं होता। यदि कोई अपना पूर्व जन्म देखना चाहें तो अंकोल वृक्ष के बीजों का तेल निकलवा कर उसका दीपक जलायें और काँसे के पात्र में काजल उतारे। इस काजल क़ो गाय के शुद्ध घी में मथ करके नेत्रों में लगा करके शीशे में देखें। ऐसा करने से शीशे में आपको अपना पूर्व जन्म दिखायी पड़ेगा।

## धन का लाभ

यदि आप अकस्मात् धन लाभ करना चाहते हैं तो बराबर के सात पत्थर ले लें और साथ ही साथ छोटे कंकर ले लें। इन्हें हरे वस्त्र में बाँध करके कमर में धारण करें और महालक्ष्मीमन्त्र का जप करें।

इसके बाद भटकटैया बूटी को उखाड़ करके, आधी बूटी का रस निकाल पाँव के तलवे में लगा लें और शेष बूटी मुट्ठी में दबा कर बन्द कर लें। अब आप धन प्राप्ति हेतु साधन करें। निश्चय ही आपको धन लाभ होगा।

## मारण प्रयोग

एक गोह को पकड़ कर लायें और लाल तथा सफेद सरसों के साथ, जहाँ पर ऊँट बाँधते हैं, वहाँ पर गड्ढा खोद करके दबा दें। इसे पैंतालिस दिन तक दबा रहने दें।

अब आपको जिसे मारना हो, उससे मिलकर दिखावटी प्रेम व्यवहार करें। पैंतालिस दिन पूरे हो जाने पर उससे गड्ढा खुदवायें। गड्ढा खोदने पर जैसे ही गोह निकलेगी या दिखायी देगी वैसे ही वह व्यक्ति जो कि खुदाई कर रहा था, मर जायेगा।

## पुतली द्वारा मारण

१. किसी अशुभ योग के अवसर पर मोम की एक प्रतिमा बनायें। यह कार्य करते समय मन्त्र पढ़ते रहें। जब प्रतिमा बन चुके तो उसमें उस व्यक्ति की प्राण प्रतिष्ठा करें जिसे कि मारना है। अब मारण मन्त्र से अभिमन्त्रित करके पिन (जो कि कागज पर लगायी जाती है) उस प्रतिमा को गाड़ते रहें। यह क्रिया तब तक करते रहें जब तक कि पुतली पर पिन गाड़ने की जगह बची रहे। आप जब-जब पिन गाड़ेंगे आप का शत्रु पीड़ा से तड़पेगा। और पूरी पुतली पिनों से

आच्छादित होने पर कुछ ही दिनों में आपका शत्रु मर जायेगा।

२. नीम के वृक्ष की जड़ लेकर उसके ऊपर एक प्रतिमा खुदवायें और फिर उसमें प्राण-प्रतिष्ठा कर दें। अब मारण मन्त्र से अभिमन्त्रित करके लोहे की कील ऊपर से ठोकें। यह कील जहाँ-जहाँ पर ठुकेगी वहीं-वहीं अंग संज्ञाहीन होता जायेगा और जब हृदय में कील गाड़ी जायेगी तो उक्त व्यक्ति का प्राणान्त हो जायेगा।

## विष्ठा द्वारा मारण

मंगलवार के दिन भरणी नक्षत्र का संयोग हो तो जो व्यक्ति मरे उसकी राख ले आयें। अब शत्रु की विष्ठा (पाखाना) प्राप्त करें और उसमें वह राख मिला दें। अब दो मिट्टी के बर्तन लेकर उनमें यह सामग्री भर दें और बर्तनों को परस्पर जोड़कर उसी मुर्दे के बालों से लपेट कर बाँध दें। यह सब करने के बाद इस बर्तन को किसी उजड़े या वीरान कमरे में रख दें। वहीं पर बैठ कर निम्नलिखित मन्त्र की माला फेरें।

**मन्त्र—"ॐ नमो डामरेश्वराय 'अमुक' मारय मारय स्वाहा।"**

इसके बाद आप अपने घर जा सकते हैं। आपके द्वारा किये गये प्रयोग फलस्वरूप जैसे-जैसे बर्तन में विष्ठा सूखेगी, ठीक वैसे ही शत्रु की देह निस्तेज होती जायेगी और जब सारी विष्ठा सूख जायेगी तो शत्रु भी सूखकर समाप्त हो जायेगा। ऐसे प्रयोग के कारण करे हुए व्यक्ति का यदि शीघ्र दाह संस्कार न किया जाय तो उसमें कीड़े पड़ जाते हैं क्योंकि विष्ठा के सूखते ही

उसमें कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं।

## चित्र रोदन

एक दीवार के ऊपर किसी पुतली का चित्र बनायें और इस पुतली को यदि रुलाना हो तो स्त्री के जरायु की धूप इस पुतली को दें। ऐसा करने से वह बनाई गई पुतली रोने लगेगी।

अब यदि आप उसका रोदन बन्द करना चाहें तो उसे गूगल की धूप कर दें।

इस बनायी गई पुतली को यदि गायब करना हो तो इसे बिल्ली तथा स्त्री की जरायु की धूप करें। ऐसी धूप करते ही पुतली का यह चित्र अदृश्य हो जायेगा। जब आप इसी स्थान पर गूगल का धूप करेंगे तो पुनः यह चित्र दर्शित होगा।

## मोहन प्रयोग

यदि कबूतर के हृदय को ताबीज में भर करके कण्ठ में धारण कर लिया जाय तो हर व्यक्ति प्रेम करने लगता है।

## देवी की कृपा

रात्रि में केशों को स्वतन्त्र करके सम्पूर्ण वस्त्र का त्याग कर दें और पहने गये गंडे ताबीज और माला आदि भी उतार कर रख दें और पाठ करें। इस पाठ को करने से देवी प्रसन्न होकर पुत्र मान कर कृपा करती है। इसके पाठ करने से सभी विघ्न इस भाँति नष्ट हो जाते हैं जैसे कि आग में पतंगे जलकर नष्ट हो जाते हैं।

यह पाठ इसी पुस्तक के परिशिष्ट खण्ड में दिया गया है।

## स्त्री पुरुष के हेतु

प्राय: पुरुषों का वीर्य क्षीण हो जाया करता है और शीघ्र पतन अर्थात् जल्दी ही वीर्य का स्खलन हो जाना नामक रोग हो जाते हैं। कभी पुरुषेन्द्रिय पतली भी होती है। इसी भाँति स्त्री के भग ढीली हो जाने से स्त्री–पुरुष को सम्भोग में आनन्द नहीं प्राप्त हो पाता।

यहाँ पर आप दोनों के सुख हेतु एक प्रयोग बता रहा हूँ। इसे प्रयोग में लायें और प्रभु को धन्यवाद करें।

एक कीकर वृक्ष होता है जिसे बबूल भी कहते हैं। आप इससे भली–भाँति परिचित हैं अत: इसका परिचय न बता कर प्रयोग बता रहा हूँ। यह वृक्ष की चिकनी बक्कल तोड़ लायें। कुछ नींबू लेकर उसका रस निकाल लें। इस रस में बबूल की बक्कल को डुबो दें। एक दिन डूबा रहने के बाद इसी में एक शुद्ध तथा स्वच्छ वस्त्र डाल दें। जब यह वस्त्र उस रस में भींग जाय तो निकाल लें। इस वस्त्र का रंग धुआँ सा होगा।

१. इस गीले वस्त्र को एक गिलास दूध में डाल कर धो डालें और उसी में इसे निचोड़ दें। अब आप यह दूध पी जायें, इस प्रयोग को कुछ दिन करने से वीर्य गाढ़ा हो जायेगा। सम्भोग में शीघ्र स्खलन होना रुक जायेगा और देह भी पुष्ट हो जायेगा।

२. इस गीले वस्त्र को यदि स्त्री अपने भग में रखेगी तो कुछ ही

दिन में भग संकुचित हो जायेगी और सम्भोग में परम आनन्द की प्राप्ति होने लगेगी।

३. इसी गीले वस्त्र को यदि पुरुष अपने इन्द्री पर लपेटा करे तो कुछ ही दिनों में उसकी इन्द्री सीधी तथा मोटी हो जायेगी।

## अदृश्य कैसे हों?

प्राय: प्रारम्भ से ही मनुष्य अदृश्य होने की कल्पना करता रहा है। इस विषय में अनेकों प्रयोग किये जाते हैं, जिनमें से कुछ बता चुका हूँ। अब एक और प्रयोग बता रहा हूँ, जिसके करने से व्यक्ति अदृश्य हो सकता है।

पुष्य नक्षत्र आने से तीन रात्रि पहले से उपवास का शुभारम्भ करें। यह उपवास रात्रि में चलता रहेगा। जब पुष्य नक्षत्र हो तब लोहे की एक सलाई और एक सुरमेदानी बनायें। अब किसी ऐसे जानवर की खोपड़ी लें जो रात्रिचर हो। इसकी खोपड़ी में अंजन भर करके किसी मरी हुई स्त्री की योनि में प्रविष्ट करके उसी मरी हुई स्त्री को जला दें। जब वह जल चुके तब उसकी योनि से यह खोपड़ी निकालकर अंजन निकालें और लोहे की सुरमेदानी में भर लें। यह सब क्रियायें पुष्यकाल में ही प्रारम्भ करके समाप्त करनी है।

अब आप जब भी अदृश्य होना चाहें या किसी को अदृश्य करना चाहें तब इस सुरमेदानी से लोहे की सलाई के द्वारा अंजन लेकर नेत्र में लगायें। इसके प्रभाव से व्यक्ति शीघ्र ही अदृश्य हो जाता है।

# अग्निदेव का दर्शन

यदि आप अग्नि देव के दर्शन करना चाहें तो पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से यह प्रयोग करें।

भटकटैया नामक बूटी, पलाश (ढाक) की लकड़ी और अरण्ड की लकड़ी से हवन हेतु प्रबन्ध करें। इन सब लकड़ियों में अंकोल के बीजों का तेल लगा दें। अब पारे तथा गन्धक को खरल में घोंट करके कजली बना लें। इस कजली को गरम घी में मिला कर उन लकड़ियों पर हवन करें। ऐसा करने से आग के जलते ही अग्निदेव प्रकट हो जाते हैं।

# तन्त्र प्रयोग
## परिशिष्ट खण्ड

### तन्त्र प्रयोग कब करें?

यूँ तो आवश्यकतानुसार तन्त्र प्रयोग कभी भी किये जा सकते हैं। इन प्रयोगों को यदि निम्नलिखित दिनों के अनुसार किया जाय तो विशेष प्रभाव का दर्शन होता है।

### दिनों की समयसारिणी

| दिन | तन्त्र प्रयोग |
|---|---|
| रविवार | मारण प्रयोग करें। |
| सोमवार | शान्तिक प्रयोग करें। |
| मंगलवार | विद्वेषण कर्म करें। |
| बुधवार | उच्चाटन प्रयोग करें। |
| गुरुवार | पौष्टिक प्रयोग करें। |
| शुक्रवार | लक्ष्मी सिद्धि करें। |
| शनिवार | वशीकरण प्रयोग करें। |

इसके अलावा कुछ और नियम भी होते हैं। इन्हें सारांश में यूँ कहा जा सकता है कि क्रूर दिनों में क्रूर कार्य करें तथा शुभ

दिनों में शुभ करें। क्रूर दिनों की गणना में शनिवार मंगलवार तथा रविवार आते हैं। बुधवार, गुरुवार तथा सोमवार शुभ अर्थात सौम्य दिन हैं। इन दिनों सौम्य कार्य विशेष प्रभावी होते हैं। बुधवार तथा शुक्रवार को वशीकरण प्रयोग सर्वदा लाभकारी होता है। मंगलवार तथा शनिवार को शत्रु के हेतु किये गये कार्यों से शत्रु की हानि होती ही है। इन दिनों में यदि तिथि भी सहयोगी हो जाय तो सोने पे सुहागा जैसी बात बनती है।

## तिथि सारिणी

| तिथि | तन्त्र प्रयोग |
| --- | --- |
| १. पड़वा | स्तम्भन प्रयोग करें। |
| २. दूज/दोयज | उच्चाटन प्रयोग करें। |
| ३. तीज | आकर्षण प्रयोग करें। |
| ४. चौथ | स्तम्भन प्रयोग करें। |
| ५. पंचमी | मारण प्रयोग करें। |
| ६. छठ | उच्चाटन प्रयोग करें। |
| ७. सप्तमी | वशीकरण प्रयोग करें। |
| ८. अष्टमी | मोहनार्थ प्रयोग करें। |
| ९. नवमी | मोहनार्थ प्रयोग करें। |
| १०. दशमी | इस दिन गुरुवार हो तथा पुष्य नक्षत्र हो तो कुछ भी करें। |
| ११. एकादशी | मारण प्रयोग करें। |
| १२. द्वादशी | मारण प्रयोग करें। |

| | |
|---|---|
| १३. त्रयोदशी | आकर्षण प्रयोग करें। |
| १४. चौदश | स्तम्भन प्रयोग करें। |
| १५. पूर्णमासी | मारण प्रयोग करें। |

प्रत्येक वर्ष के ऋतुओं की विशेषता दृष्टिगोचर होती है। माना जाता है कि यह ऋतु ही प्रकृति है। हमारे तन्त्र-शास्त्र में इन ऋतुओं का भी विशेष प्रयोग करके लाभ उठाया जाता है। हमारा तन्त्र-शास्त्र ऋतु के अनुसार कर्म के बल को स्वीकार करता है परन्तु ऋतु के आने तक ठहरता नहीं बल्कि कहता है कि प्रतिदिन विशेष समय पर वर्ष भर की ऋतुओं का आगमन होता है। इस काल का तन्त्र प्रयोग में विशेष योगदान है। प्रस्तुत है ऋतु सारिणी—

## ऋतु सारिणी

| **ऋतु** | **ऋतु का काल** | **ऋतु के तन्त्र प्रयोग** |
|---|---|---|
| बसन्त | दोपहर से पहले | वशीकरण तथा आकर्षण प्रयोग करें। |
| ग्रीष्म | मध्याह्न में | विद्वेषण प्रयोग करें। |
| वर्षा | तीसरे पहर में | स्तम्भन प्रयोग करें। |
| शिशिर | प्रदोष में | मारण प्रयोग करें। |
| शरद | अर्द्ध रात्रि में | शान्ति प्रयोग करें। |
| हेमन्त | उषा काल में | पौष्टिक प्रयोग करें। |

## तन्त्र प्रयोग के लिये बान्दा, जड़ या औषधि की प्राप्ति

किसी भी व्यक्ति को यदि कोई वृक्ष मिले और उसे प्रयोग में

लाना ग्राह्य हो तो विधि के अनुसार ग्रहण करना चाहिये। आप सब जानते हैं कि प्रायः वृक्षों पर भूत प्रेतादि का निवास रहता है। सम्भवतः इसलिये पीपल को जलार्पण किया जाता है। इस कार्य में शायद यही भावना निहित होती है कि भूत प्रेतादि शान्त रहें। इसके अलावा पीपल को जल देने का वैज्ञानिक कारण भी है। यदि आप किसी वृक्ष की मूल को बिना विधि के प्राप्त करते हैं तब भी लाभ प्राप्त होता है परन्तु वह लाभ क्षणिक तथा विशेष प्रभावी नहीं होता। अतः सभी पाठकों से निवेदन है कि स्वयं की सुरक्षा रक्षा मन्त्र से करें तथा नीचे दी गई विधि के अनुसार ही मूल ग्रहण करें। यदि आपको संस्कृत न आती हो तो उसका हिन्दी में पाठ करें। यदि हो सके तो किसी विद्वान से, किसी शुभाकांक्षी से यह कार्य करा लेना चाहिये।

तन्त्र प्रयोग की सफलता का पहला मूल मन्त्र ही गोपनीयता है अतः प्रयास करें कि अमुक कार्य आप बिना किसी को सूचित करे ही पूर्ण कर पायें।

जब आपको अपनी इच्छानुसार वृक्ष मिल जाये तो निम्नलिखित विधि से काय्र करके लाभ उठायें।

थोड़ी-सी सरसों, काले उड़द तथा चावल हाथ में लकर वृक्ष के पास जाकर निम्नलिखित मन्त्र बोल कर चारों तरफ बिखेर दें—

**ॐ वेतालाश्च पिशाचारश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः।**
**अपसर्पन्तु ते सर्वे वृक्षादिस्माच्छिवाज्ञया॥**

***भावार्थ***— शिव की आज्ञा है कि इस वृक्ष से सभी भूत-प्रेत

दूर हो जायें। इसके बाद वृक्ष के मूल में धूप दीप से पूजा करें। थोड़ा-सा गुड़, थोड़ी-सी रोली तथा एक सिक्का वहाँ रख करके वृक्ष को निमंत्रण देते हुए कहें कि, "हे वृक्ष मैं कल प्रातः आपकी (मूल त्वचा, टहनी या पत्ता जो भी चाहिये हो उसका नाम लेकर बोलें) लेने आऊँगा। मैं इस समय आपको निमंत्रण देता हूँ आपके द्वारा प्रदान की गई (वृक्ष का अभिप्रेत अंश) मुझ बल दे, आयु दे, सर्व सिद्धि दे।"

पुनः अगले दिन प्रातःकाल निश्चित योग में एक खुरपी तथा कोई औजार लेकर चलें जिससे वृक्ष का ग्राह्य अंश काटकर प्राप्त किया जा सके। हो सके तो इसे लोहा न लगायें।

अगले दिन वृक्ष के पास आकर वृक्ष को प्रणाम करें। निम्न मन्त्र पढ़ें—

**ॐ नमस्तेऽमृत सम्भूते बल वीर्य विवर्द्धिनी।**
**बल मायुश्च मे देहि पापान्में त्राहि दूरतः॥**

**भावार्थ**—हे अमृत से उत्पन्न हुए, बल वीर्य को बढ़ाने वाले वृक्षराज मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। आप मुझे बल दो तथा आयु दो। इसके साथ ही दूर से मेरी पापों से रक्षा करो।

अब आप अगला मन्त्र बोल करके मूल के आस-पास की पृथ्वी को खुरपी से खोदना प्रारम्भ करें।

**येन त्वां खनते ब्रह्मा, येन त्वां खनते भृगुः।**
**येन हीन्दोऽय वरुणो, येन त्वामपचक्रमे॥**
**तेनाहं खनिष्यामि मन्त्रपूतेन पाणिना।**
**मा पातेमानि पतित जोन्यथा माते भवेत्॥**

**अत्रैव तिष्ठ कल्याणि मम कार्यकरी भव।**
**मम कार्ये सिद्धे ततङ स्वर्ग गमिष्यसि॥**

**भावार्थ**—हे वृक्षराज! जिस कारण तुम्हें ब्रह्मा ने खोदा था, जिस कारण तुम्हें भृगु ने खोदा था एवं जिस कारण तुम्हें वरुण ने तथा इन्द्र ने खोदा था, उसी कारण मैं अपने हाथों को शुद्ध करके तुम्हें खोद रहा हूँ कहीं तुम्हारा तेज व्यर्थ न हो जाय। हे कल्याण कारिणी वनस्पति। तुम यहीं पर रह करके मेरे काम पूर्ण करो। मेरी कामना पूर्ति के पश्चात् तुम्हारा स्वर्ग को गमन होगा।

जब खुरपी से मिट्टी खुद जाय और जड़ उखाड़ने लगें तो निम्नलिखित मन्त्र बोल करके ही जड़ उखाड़ें—

**मन्त्र—"ॐ ह्रीं चण्डे हूँ फट् स्वाहा।"**

इस मन्त्र को पढ़ करके मूल उखाड़ें तथा अपने निवास स्थान को वापस आते समय निम्नलिखित मन्त्र का सारे रास्ते जप करते रहें—

**मन्त्र—"ॐ नमो भैरवाय महासिद्धप्रदायकाय**
**आपदुत्तरणाय हुँ फट्।"**

अपने निवास स्थान पर आकर लायी गई मूल में किसी साधन से छिद्र करें। छिद्र करते समय निम्नलिखित मन्त्र का पाठ करें—

**मन्त्र—"ॐ ह्रीं क्षौं फट् स्वाहा।"**

इसके बाद इस छिद्र से काला धागा डाल करके कण्ठ में या भुजा पर धारण कर लें। धारण करते समय धूप दीपादि अवश्य दिखा लें।

यदि आपने किसी वृक्ष का बाँदा ग्रहण किया है तो भी खुदाई वाले मन्त्रों का जप करें। यह जप करते हुए पृथ्वी की नहीं बल्कि उस स्थान की खुदाई करें जहाँ पर की बाँदा उगा हुआ हो। जब आप बाँदा उखाड़ेंगे तो इस मन्त्र का जप करें—

**मन्त्र— "ॐ वनदण्डे महादण्डाय स्वाहा।**
**ॐ शूद्री कपालमालिनी स्वाहा॥"**

इसके बाँदा ग्रहण करके घर आयें। वापस आते समय ऊपर दिये अनुसार ही मन्त्र का जप करते हुए आयेंगे।

## देवी पाठ

प्रस्तुत पाठ परम पूजनीय आद्याय श्री श्मशान काली देवी से सम्बन्धित है। तन्त्र जगत में इन्हें ही देवी परमेश्वरी माना जाता है। यह तथ्य स्वीकार किया जा चुका है कि देवी कालिका ही आदि अन्त से रहित हैं। अन्य इष्ट रखने वाले स्पष्ट शब्दों में इसे स्वीकार नहीं करते क्योंकि अपने इष्ट में संशय रखना ब्रह्महत्या से भी जघन्य अपराध है।

मैंनें इस पाठ के चमत्कारी प्रभावों को स्वयं अनुभव क्रिया और अनेकों लोगों को इसका अनुभव करवाया भी है। हो सकता है कि पहली बार पाठ करने पर आपको चमत्कार दर्शित न हो हालाँकि ऐसा हुआ ही नहीं अर्थात पहली ही बार इसने अपने शक्ति का परिचय दिया है इस पर भी यदि चमत्कार से साक्षात्कार न हो तब भी संशय न करें और विधि के अनुसार पाठ करते हुए लाभ उठायें।

विश्वास करें कि माँ कालिका का चित्र देखने में कैसा भी क्यों न हो उसका हृदय भक्त एवं पुत्र वात्सल्य से पूर्णतः भरा हुआ है। भैरव तन्त्र का कथन है कि कालिका देवी के ज्ञान मात्र से ही मनुष्य मोक्ष का अधिकारी हो जाता है। यामल तन्त्रानुसार काली का ककार ही सर्वप्रथम मोक्ष का प्रदायक है। सम्भवतः इसलिये इनका बीज मन्त्र ''क्रीं'' माना गया है। मेरा विचार ही नहीं बल्कि विश्वास भी है कि माँ कालिका को पूजने वाले के हाथ में सर्वसिद्धियाँ सदा विद्यमान रहती हैं सम्भवतः इसी कारण इन्हें तान्त्रिकों ने सर्वोपरि आराध्य माना है।

प्रस्तुत देवी पाठ आद्याय देवी मुण्डमाला धारिणी कालिका जी का एक हजार नामों का संग्रह मात्र है परन्तु इसमें चमत्कार कूट-कूट कर भरे हुए हैं। इसे केवल नामावली ही न मानें। इस पाठ को 'श्री श्मशान काली सहस्त्रनाम स्तोत्र' कहा जाता है। यह संस्कृत में दृष्टिगोचर होता है परन्तु इसने संस्कृत न जानने वाले के लिये भी कोई कलिष्टता नहीं हैं क्योंकि केवल नामों का उच्चारण मात्र ही प्रस्तुत किया गया है। अतः संशय में न पड़ते हुए कही गयी संक्षिप्त विधि के अनुसार पाठ करके लाभ उठायें।

इस पाठ को करने से हुए विभिन्न साक्षात्कारों का मैं प्रस्तुतिकरण नहीं कर रहा क्योंकि मुझे भय है आपको सम्भवतः यह चर्चा अतिशयोक्ति लगे। आजकल इस सत्य को स्वीकार कर लेने में कोई भय नहीं रहा कि एक झूठ को सत्य प्रमाणित करने के लिये कुछ झूठ ही बोलने पड़ते हैं परन्तु एक सत्य को सत्य प्रमाणित करने के लिये लाखों सत्य प्रमाणित करते हुए भी सत्य

को सत्य कह पाना असम्भव रह जाता है। ज्ञान और अज्ञान का युद्ध सदा-सदा से चला आ रहा है, जिसमें शायद ज्ञान को ही पराजय स्वीकार करके हटना पड़ता है। इसी कारण मैं साक्षात्कारों का वर्णन न करते हुए क्योंकि यह अनेकों हैं, मैं देवी पाठ की बात कर रहा हूँ।

एक बार श्री परशुराम जी ने तपस्या करके शिव जी को प्रसन्न किया और उनसे देवी के परम रहस्य को जानने की अभिलाषा व्यक्त की।

श्री परशुराम जी की अभिलाषा जानकर श्री शिव जी ने कहा—हे भृगुवंश के वंशज श्री परशुराम जी! आप श्रेष्ठ हैं क्योंकि आपने श्रेष्ठ बात पूछी है। मैं आपको ऐसा पाठ बता रहा हूँ जो कि पूर्णतः सिद्ध है और जिसे करने के लिये पूजन, होम, न्यास, प्राणायाम, ध्यान, भूत शुद्धि, जप आदि की आवश्यकता नहीं है।

श्री शिव जी के कथनानुसार—

- ❖ इस पाठ को करने मात्र से ही समस्त विघ्न समाप्त हो कर सौभाग्य का उदय होता है।
- ❖ इस पाठ को करने वाले के सभी शत्रु देखते ही हतबुद्धि हो जाते हैं।
- ❖ इस पाठ को करने वाले के हाथ में सदा सर्वदा सभी सिद्धियाँ विद्यमान रहती हैं।
- ❖ इस पाठ के करने वाले में प्रबल आकर्षण शक्ति आ जाती है और उसे देखते ही बड़े-बड़े पदाधिकारी (राजा) भी शीश झुका देते हैं।

उपरोक्त बातों के अलावा और भी विशेषतायें परिचय में आई हैं अतः संशय मुक्त होकर रात्रि में दस बजे से दो बजे के मध्य वाले काल जिसे कि महानिशा कहा जाता है, के समय अपने बालों को बिखरा कर पूर्णतः नग्न होकर कम्बलासन पर बैठ करके करें। इस पाठ को करने से—

❖ **प्रसन्ना कालिका तस्य पुत्रत्वेनानुकम्पते** अर्थात देवी कालिका प्रसन्न होकर उसके ऊपर पुत्र भाव से कृपा करती हैं।

❖ इस पाठ को करते समय **यं यं कामयते कामं...तत्तक्षप्नोति निश्चितम्** के अनुसार जो भी कामनायें की जाती हैं वह भगवती कालिका की कृपा से अवश्य पूर्ण होती हैं।

❖ इस पाठ को श्रद्धा या अश्रद्धा से जो भी करता या सुनता है वह निश्चय परमगति को पा लेता है।

❖ इस पाठ को करने या सुनने मात्र से ही बन्ध्या, मृत वत्सा, काक बन्ध्या स्त्री गर्भ धारण करके दीर्घजीवी पुत्रोकं को जन्म देती है।

❖ इस पंाठ के गायन या श्रवण मात्र से सर्व पाप विविर्मुक्तः के अनुसार सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है।

इस पाठ को करने की अनेक विधियाँ हैं परन्तु उन्हें यहाँ स्पष्ट नहीं किया जा सकता। क्योंकि यह विधियाँ केवल बालिगों के लिये हैं और परम गोपनीय हैं। इस विषय का पूर्ण परिचय आपको मेरी पुस्तक 'संकट मोचिनी कालिका सिद्धि' में प्राप्त होगा। यहाँ पर जैसा कहा गया है वैसा ही करें और माँ भगवती
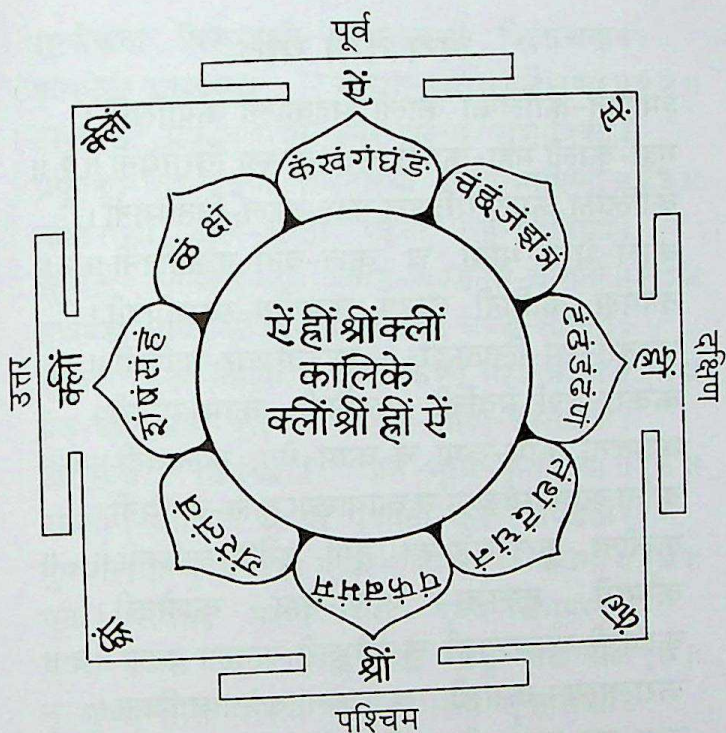
का धन्यवाद करें कि उनकी कृपा से यह पाठ आपकी सेवा में प्रस्तुत हो पाया है क्योंकि यह पाठ तो उपरोक्त वर्णन में बताये नामानुसार प्राप्त हो जायेगा। परन्तु, इसकी विशेषता आपके समक्ष प्रस्तुत न हो सकती थी। यह प्रयास भगवती कालिका का प्रसाद है, इसे सहर्ष स्वीकार करें।

इस पाठ को करते समय यदि अपने समक्ष इस पृष्ठ पर दिये गये यन्त्र को बना कर रख लें तो पाठ को करने से प्राप्त होने वाले लाभ शीघ्रतिशीघ्र प्राप्त हो जाते हैं।

# अथ देवी पाठ

श्मशान-कालिका काली भद्रकाली कपालिनी।
गुह्य-काली महा-काली कुरु-कुल्ला विरोधिनी ॥ १ ॥
कालिका काल-रात्रिश्च महा-काल-नितम्बिनी।
काल-भैरव-भार्या च कुल-वर्त्म-प्रकाशिनी ॥ २ ॥
कामदा कामिनी कन्या कमनीय-स्वरूपिणी।
कस्तूरी-रस-लिप्ताङ्गी कुञ्जरेश्वर-गामिनी ॥ ३ ॥
ककार-वर्ण-सर्वाङ्गी कामिनी काम-सुन्दरी।
कामार्त्ता काम-रूपा च काम-धेनुः कलावती ॥ ४ ॥
कांता काम-स्वरूपा च कामाख्या कुल-कामिनी।
कुलीना कुल-वत्यम्बा दुर्गा दुर्गति-नाशिनी ॥ ५ ॥
कौमारी कुलजा कृष्ण-देहा कृशोदरी।
कृशाङ्गी कुलाशाङ्गी च क्रीङ्कारी कमला कला ॥ ६ ॥
करालास्य कराली च कुल-कांतापराजिता।
उग्रा उग्र-प्रभा दीप्ता विप्र-चित्ता महा-बला ॥ ७ ॥
नीला घना मेघ-नादा मात्रा मुद्रा मिताऽमिता।
ब्राह्मी नारायणी भद्रा सुभद्रा भक्त-वत्सला ॥ ८ ॥
माहेश्वरी च चामुण्डा वारही नारसिंहिका।
वज्रांगी वज्र-कंकाली नृ-मुण्ड-स्त्रग्विणी शिवा ॥ ९ ॥
मालिनी नर-मुण्डाली-गलद्रक्त-विभूषणा।
रक्त-चन्दन-सिक्ताङ्गी सिंदूरारुण-मस्तका ॥ १० ॥
घोर-रूपा घोर-दंष्ट्रा घोरा घोर-तरा शुभा।
महा-दंष्ट्रा महा-माया सुदन्ती युग-दन्तुरा ॥ ११ ॥

सुलोचना विरूपाक्षी विशालाक्षी त्रिलोचना।
शारदेन्दु-प्रसन्नस्या स्फुरत्-स्मेराम्बुजेक्षणा॥ १२॥
अट्टहासा प्रफुल्लास्या स्मेर-वक्त्रा सुभाषिणी।
प्रफुल्ल-पद्म-वदना स्मितास्या प्रिय-भाषिणी॥ १३॥
कोटराक्षी कुल-श्रेष्ठा महती बहु-भाषिणी।
सुमतिः मतिश्चण्डा चण्ड-मुण्डाति-वेगिनी॥ १४॥
प्रचण्डा चण्डिका चण्डी चर्चिका चण्ड-वेगिनी।
सुकेशी मुक्त-केशी च दीर्घ-केशी महा-कचा॥ १५॥
प्रेत-देह-कर्ण-पूरा प्रेत-पाणि-सुमेखला।
प्रेतासना प्रिय-प्रेता प्रेत-भूमि-कृतालया॥ १६॥
श्मशान-वासिनी पुण्या पुण्यदा कुल-पण्डिता।
पुण्यालया पुण्य-देहा पुण्य-श्लोका च पावनी॥ १७॥
पूता पवित्रा परमा परा पुण्य-विभूषणा।
पुण्य-नाम्नी भीति-हरा वरदा खड्ग-पाशिनी॥ १८॥
नृ-मुण्ड-हस्ता शस्त्रा च छिन्नमस्ता सुनासिका।
दक्षिणा श्यामला श्यामा शांता पीनोन्नत-स्तनी॥ १९॥
दिगम्बरा घोर-रावा सृक्कान्ता-रक्त-वाहिनी।
महा-रावा शिवा संज्ञा निःसंगा मदनातुरा॥ २०॥
मत्ता प्रमत्ता मदना सुधा-सिन्धु-निवासिनी।
अति-मत्ता महा-मत्ता सर्वाकर्षण-कारिणी॥ २१॥
गीत-प्रिया वाद्य-रता प्रेत-नृत्य-परायणा।
चतुर्भुजा दश-भुजा अष्टादश-भुजा तथा॥ २२॥
कात्यायनी जगन्माता जगती-परमेश्वरी।
जगद्-बन्धुर्जगद्धात्री जगदानन्द-कारिणी॥ २३॥

जगज्जीय-मयी हेम-वती माया महा-लया।
नाग-यज्ञोपवीताङ्गी नागिनी नाग-शायनी ॥ २४ ॥
नाग-कन्या देव-कन्या गान्धारी निन्नरेश्वरी।
मोह-रात्री महा-रात्री दरुणाभा सुरासुरी ॥ २५ ॥
विद्या-धारी वसु-मती यक्षिणी योगिनी जरा।
राक्षसी डाकिनी वेद-मयी वेद-विभूषणा ॥ २६ ॥
श्रुति-स्मृतिर्महा-विद्या गुह्य-विद्या पुरातनी।
चिंताऽचिंता स्वधा स्वाहा निद्रा तन्द्रा च पार्वती ॥ २७ ॥
अर्पणा निश्चला लीला सर्व-विद्या-तपस्विनी।
गङ्गा काशी शची सीता सती सत्य-परायणा ॥ २८ ॥
नीतिः सुनीतिः सुरुचिस्तुष्टिः पुष्टिर्धृतिः क्षमा।
वाणी बुद्धिर्महा-लक्ष्मी लक्ष्मीर्नील-सरस्वती ॥ २९ ॥
स्त्रोतस्वती स्त्रोत-वती मातङ्गी विजया जया।
नदी सिन्धुः सर्व-मयी तारा शून्य निवासिनी ॥ ३० ॥
शुद्धा तरंगिणी मेधा लाकिनी बहु-रूपिणी।
सदानन्द-मयी सत्या सर्वानन्द-स्वरूपणि ॥ ३१ ॥
स्थूला सूक्ष्मा सूक्ष्म-तरा भगवत्यनुरूपिणी।
परमार्थ-स्वरूपा च चिदानन्द-स्वरूपणी ॥ ३२ ॥
सुनन्दा नन्दिनी स्तुत्या स्तवनीया स्वभाविनी।
रंकिणी टंकिणी चित्रा विचित्रा चित्र-रूपिणी ॥ ३३ ॥
पद्मा पद्मालया पद्म-मुखी पद्म-विभूषणा।
शाकिनी हाकिनी क्षान्ता राकिणी रुधिर-प्रिया ॥ ३४ ॥
भ्रान्तिर्भवानी रुद्राणी मृडानी शत्रु-मर्दिनी।
उपेन्द्राणी महेशानी जयोत्स्ना चन्द्र-स्वरूपिणी ॥ ३५ ॥

सूर्य्यात्मिका रुद्र-पत्नी रौद्री स्त्री प्रकृतिः पुमान्।
शक्तिः सूक्तिर्मति-मती भक्तिर्मुक्तिः पति-व्रता॥ ३६॥
सर्वेश्वरी सर्व-माता सर्वाणी हर-वल्लभा।
सर्वज्ञा सिद्धिदा सिद्धा भाव्या भाव्या भयापहा॥ ३७॥
कर्त्री हर्त्री पालयित्री शर्वरी तामसी दया।
तमिस्रा यामिनीस्था न स्थिरा धीरा तपस्विनी॥ ३८॥
चार्वङ्गी चंचला लोल-जिह्वा चारु-चरित्रिणी।
त्रपा त्रपा-वती लज्जा निर्लज्जा ह्रीं रजोवती॥ ३९॥
सत्व-वती धर्म-निष्ठा श्रेष्ठा निष्ठुर-वादिनी।
गरिष्ठा दुष्ट-संहर्त्री विशिष्टा श्रेयसी घृणा॥ ४०॥
भीमा भयानका भीमा-नादिनी भीः प्रभा-वती।
वागीश्वरी श्रीर्यमुना यज्ञ-कर्त्री यजुः-प्रिया॥ ४१॥
ऋक्-सामाथर्व-निलया रागिणी शोभन-स्वरा।
कल-कण्ठी कम्बु-कण्ठी वेणु-वीणा-परायणा॥ ४२॥
वशिनी वैष्णवी स्वच्छा धात्री त्रि-जगदीश्वरी
मधुमती कुण्डलिनी ऋद्धिः सिद्धिः शुचि-स्मिता॥ ४३॥
रम्भोवैशी रती रामा रोहिणी रेवती मघा।
शाङ्खिनी चक्रिणी कृष्णा गदिनी पद्मनी तथा॥ ४४॥
शूलिनी परिघास्त्रा च पाशिनी शार्ङ्ग-पाणिनी।
पिनाक-धारिणी धूम्रा सुरभि वन-मालिनी॥ ४५॥
रथिनी समर-प्रीता वेगिनी रण-पण्डिता।
जटिनी वज्रिणी नीला लावण्याम्बुधि-चन्द्रिका॥ ४६॥
बलि-प्रिया महा-पूज्या पूर्णा दैत्येन्द्र-मन्थिनी।
महिषासुर-संहन्त्री वासिनी रक्त-दन्तिका॥ ४७॥

रक्तपा रुधिराक्ताङ्गी रक्त-खर्पर-हस्तिनी।
रक्त-प्रिया माँस-रुविरासवासक्त-मानसा॥४८॥
गलच्छोणित-मुण्डालि-कण्ठ-माला-विभूषणा।
शवासना चितान्तःस्था माहेशी वृष-वाहिनी॥४९॥
व्याघ्र-त्वगम्बरा चीर-चेलिनी सिंह-वाहिनी।
वाम-देवी महा-देवी गौरी सर्वज्ञ-भाविनी॥५०॥
बालिका तरुणी वृद्धा वृद्ध-माता जरातुरा।
सुभ्रुर्विलासिनी ब्रह्म-वादिनी ब्रह्माणी मही॥५१॥
स्वप्नावती चित्र-लेखा लोपा-मुद्रा सुरेश्वरी।
अमोघाऽरुन्धती तीक्ष्णा भोगवत्यनुवादिनी॥५२॥
मन्दाकिनी मन्द-हासा ज्वालामुख्यसुरान्तका।
मानदा मानिनी मान्या माननीय मदोद्धता॥५३॥
मदिरा मदिरोन्मादा मेध्या नव्या प्रसादिनी।
सुमध्यानन्त-गुणिनी सर्व-लोकोत्तमोत्तमा॥५४॥
जयदा जित्वरा जेत्री जयश्रीर्जय-शालिनी।
सुखदा शुभदा सत्या सभा-संक्षोभ-कारिणी॥५५॥
शिव-दूती भूति-मती विभूतिर्भीषणानना।
कौमारी कुलजा कुन्ती कुल-स्त्री कुल-पालिका॥५६॥
कीर्तिर्यशस्विनी भूषां भूष्या भूत-पति-प्रिया।
सगुणा-निर्गुणा धृष्ठा काष्ठा प्रतिष्ठिता॥५७॥
धनिष्ठा धनदा धन्या वसुधा स्व-प्रकाशिनी।
उर्वी गुर्वी गुरु-श्रेष्ठा सगुणा त्रिगुणात्मिका॥५८॥
महा-कुलीना निष्कामा सकामा काम-जीवना।
काम-देव-कला रामाभिरामा शिव-नर्तकी॥५९॥

चिन्तामणिः कल्पलता जाग्रती दीन-वत्सला।
कार्तिकी कृत्तिका कृत्या अयोध्या विषमा समा॥६०॥
सुमंत्रा मंत्रिणी घूर्णा ह्लादिनी क्लेश-नाशिनी।
त्रैलोक्य-जननी हृष्टा निर्मांसा मनोरूपिणी॥६१॥
तडाग-निम्न-जठरा शुष्क-मांसास्थि-मालिनी।
अवन्ती मथुरा माया त्रैलोक्य-पावनीश्वरी॥६२॥
व्यक्ताव्यक्तानेक-मूर्तिः शर्वरी भीम-नादिनी।
क्षेमङ्करी शंकरी च सर्व-सम्मोहन-कारिणी॥६३॥
ऊर्ध्व-तेजस्विनी क्लिन्न महा-तेजस्विनी तथा।
अद्वैत भोगिनी पूज्या युवती सर्व-मङ्गला॥६४॥
सर्व-प्रियंकारी भोग्या धरणी पिशिताशना।
भयंकारी पाप-हरा निष्कलंका वशंकरी॥६५॥
आशा तृष्णा चन्द्र-कला निद्रिका वायु-वेगिनी।
सहस्त्र-सूर्य-संकाशा चन्द्र-कोटि-सम-प्रभा॥६६॥
वह्नि-मण्डल-मध्यस्था सर्व-तत्त्व-प्रतिष्ठिता।
सर्वाचार-वती सर्व-देव-कन्याधिदेवता॥६७॥
दक्ष-कन्या दक्ष-यज्ञ-नाशिनी दुर्ग तारिणी।
इज्या पूज्या विभीर्भूतिः सत्कीर्तिर्ब्रह्म-रूपिणी॥६८॥
रम्भीरुश्चतुरा राका जयन्ती करुणा कुहुः।
मनस्विनी देव-माता यशस्या ब्रह्म-चारिणी॥६९॥
ऋद्धिदा वृद्धिदा वृद्धिः सर्वाद्या सर्व-दायिनी।
आधार-रूपिणी ध्येया मूलाधार-निवासिनी॥७०॥
आज्ञा प्रज्ञा-पूर्ण-मनाश्चन्द्र-मुख्यानुकूलिनी।
वावदूका निम्न-नाभिः सत्या सन्ध्या दृढ़-व्रता॥७१॥

आन्वीक्षिकी दंड-नीतिस्त्रयी त्रि-दिव-सुन्दरी।
ज्वलिनी ज्वालिनी शैल-तनया विन्ध्य-वासिनी ॥ ७२ ॥
अमेया खेचरी धैर्या तुरीया विमलातुरा।
प्रगल्भा वारुणीच्छाया शशिनी विस्फुलिङ्गिनी ॥ ७३ ॥
भुक्ति सिद्धि सदा प्राप्तिः प्राकाम्या महिमाणिमा।
इच्छा-सिद्धिर्विसिद्धा च वशित्वीर्ध्व-निवासिनी ॥ ७४ ॥
लघिमा चैव गायित्री सावित्री भुवनेश्वरी।
मनोहरा चिता दिव्या देव्युदारा मनोरमा ॥ ७५ ॥
पिंगला कपिला जिह्वा-रसज्ञा रसिका रसा।
सुषुम्नेडा भोगवती गान्धारी नरकान्तका ॥ ७६ ॥
पाञ्चाली रुक्मिणी राधाराध्या भीमाधिराधिका।
अमृता तुलसी वृन्दा कैटभी कपटेश्वरी ॥ ७७ ॥
उग्र-चण्डेश्वरी वीर-जननी वीर-सुन्दरी।
उग्र-तारा यशोदाख्या देवकी देव-मानिता ॥ ७८ ॥
निरन्जना चित्र-देवी क्रोधिनी कुल-दीपिका।
कुल-वागीश्वरी वाणी मातृका द्राविणी द्रवा ॥ ७९ ॥
योगेश्वरी-महा-मारी भ्रमरी विन्दु-रूपिणी।
दूती प्राणेश्वरी गुप्ता बहुला चामरी-प्रभा ॥ ८० ॥
कुब्जिका ज्ञानिनी ज्येष्ठा भुशुंडी प्रकटा तिथिः।
द्रविणी गोपिनी माया काम-बीजेश्वरी क्रिया ॥ ८१ ॥
शांभवी केकरा मेना मूषलास्त्रा तिलोत्तमा।
अमेय-विक्रमा क्रूरा सम्पत्-शाला त्रिलोचना ॥ ८२ ॥
सुस्थी हव्य-वहा प्रीतिरुष्मा धूम्रार्चिरङ्गदा।
तपिनी तापिनी विश्वा भोगदा धारिणी धरा ॥ ८३ ॥

त्रिखंडा बोधिनी वश्या सकला शब्द-रूपिणी।
बीज-रूपा महा-मुद्रा योगिनी योनि-रूपिणी॥८४॥
अनङ्ग - मदनानङ्ग - लेखनङ्ग - कुशेश्वरी।
अनङ्ग-मालिनी-कामेश्वरी सर्वार्थ-साधिका॥८५॥
सर्व-मन्त्र-मयी मोहिन्यरुणानङ्ग-मोहिनी।
अनङ्ग-कुसुमानङ्ग-मेखलानङ्ग-रूपिणी॥८६॥
वज्रेश्वरी च जयिनि सर्व-द्वन्द-क्षयङ्करी।
षडङ्ग-युवती योग-युक्ता ज्वालांशु-मालिनी॥८७॥
दुराशया दुराधारा दुर्जया दुर्ग-रूपिणी।
दुरन्ता दुष्कृति-हरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा॥८८॥
हंसेश्वरी त्रिकोणस्था शाकम्भर्यनुकम्पिनी।
त्रिकोण-निलया नित्या परमामृत-रञ्जिता॥८९॥
महा-विद्येश्वरी श्वेता भेरुण्डा कुल-सुन्दरी।
त्वरिता भक्त-ससक्ता भक्ति-वश्या सनातनी॥९०॥
भक्तानन्द-मयी भक्ति-भाविका भक्त-शङ्करी।
सर्व-सौन्दर्य-निलया सर्व-सौभाग्य-शालिनी॥९१॥
सर्व-सौभाग्य-भवना सर्व-सौख्य-निरूपिणी।
कुमारी-पूजन-रता कुमारी-व्रत-चारिणी॥९२॥
कुमारी-भक्ति-सुखिनी कुमारी-रूप-धारिणी।
कुमारी-पूजक-प्रीता कुमारी-प्रीतिदा प्रिया॥९३॥
कुमारी-सेवकासंगा कुमारी-सेवकालया।
आनन्द-भैरवी बाला भैरवी वटुक-भैरवी॥९४॥
श्मशान-भैरवी काल-भैरवी पुर-भैरवी।
महा-भैरव-पत्नी च परमानन्द-भैरवी॥९५॥

सुधानन्द-भैरवी च उन्मादानन्द-भैरवी।
मुक्तानन्द-भैरवी च तथा तरुण-भैरवी॥९६॥
ज्ञानानन्द-भैरवी च अमृतानन्द-भैरवी।
महा-भयङ्करी तीव्रा तीव्र-वेगा तपस्विनी॥९७॥
त्रिपुरा परमेशानी सुन्दरी पुर-सुन्दरी।
त्रिपुरेशी पञ्च-दशी पञ्चमी पुर-वासिनी॥९८॥
महा-सप्त-दशी चैव षोडशी त्रिपुरेश्वरी।
महांकुश-स्वरूपा च महा-चक्रेश्वरी तथा॥९९॥
नव-चक्रेश्वरी चक्रेश्वरी त्रिपुर-मालिनी।
राज-राजेश्वरी धीरा महा-त्रिपुर-सुन्दरी॥१००॥
सिन्दूर-पूर-रुचिरा श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दरी।
सर्वांग-सुन्दरी रक्ता रक्त-वस्त्रोत्तरीयिणी॥१०१॥
जवा-यावक-सिन्दूर-रक्त-चन्दन-धारिणी।
जवा-यावक-सिन्दूर-रक्त-चन्दन-रूप-धृक्॥१०२॥
चामरी बाल-कुटिल-निर्मल-श्याम-केशिनी।
वज्र-मौक्तिक-रत्नाढ्य-किरीट-मुकुटोज्ज्वला॥१०३॥
रत्न-कुण्डल-संसक्त-स्फुरद्-गण्ड-मनोरमा।
कुञ्जरेश्वर-कुम्भोत्थ-मुक्ता-रञ्जित-नासिका॥१०४॥
मुक्ता-विद्रुम-माणिक्य-हाराढ्य-स्तन-मण्डला।
सूर्य - कान्तेन्दु - कान्ताढ्य - कण्ठ - भूषणा॥१०५॥
वीजपूर - सफुरद् - वीज - दन्त - पंक्तिरनुत्तमा।
काम-कोदण्डकाभुग्न-भ्रू-कटाक्ष-प्रवर्षिणी॥१०६॥
मातंग-कुम्भ-वक्षोजा लसत्कोक-नदेक्षणा।
मनोज्ञ-शष्कुली-कर्णा हंसी-गति-विडम्बिनी॥१०७॥

पद्म - रागांगद - ज्योतिर्दोश्चतुष्क - प्रकाशिनी।
नाना-मणि-परिस्फूर्जच्चद्द्ध-कांचन-कंकणा॥१०८॥
नागेन्द्र - दन्त - निर्माण - वलयांचित - पाणिनी।
अंगुरीयक-चित्रांगी विचित्र-क्षुद्र-घण्टिका॥१०९॥
पट्टाम्बर-परीधाना कल-मञ्जीर-शिंजिनी।
कर्पूरागरु - कस्तूरी - कुंकुम - द्रव - लेपिता॥११०॥
विचित्र-रत्न-पृथिवी-कल्प-शाखि-तल-स्थिता।
रत्न-द्वीप-स्फुरद्-रक्त-सिंहासन-विलासिनी॥१११॥
षट्-चक्र-भेदन-करी परमानन्द-रूपिणी।
सहस्त्र - दल - पद्मान्तश्चन्द्र - मण्डल - वर्तिनी॥११२॥
ब्रह्म - रूप - शिव - क्रोड - नाना - सुख - विलासिनी।
हर - विष्णु - विरिंचीन्द्र - ग्रह - नायक - सेविता॥११३॥
शिवा शैवा च रुद्राणी तथैव शिव-वादिनी।
मातंगिनी श्रीमती च तथैवानन्द-मेखला॥११४॥
डाकिनी योगिनी चैव तथोपयोगिनी मता।
माहेश्वीर वेष्णवी च भ्रामरी शिव-रूपिणी॥११५॥
अलम्बुषा वेग-वती क्रोध-रूपा सु-मेखला।
गान्धारी हस्ति-जिह्वा च इडा चैव शुभङ्करी॥११६॥
पिंगला ब्रह्म-सूत्री च सुषुम्णा चैव गन्धिनी।
आत्म - योनिर्ब्रह्म - योनिर्जगद - योनिरयोनिजा॥११७॥
भग-रूपा भग-स्थात्रो भगनि भग-रूपिणी।
भगात्मिका भगाधार-रूपिणी भग-मालिनी॥११८॥
सिंगाख्या चैव लिंगेशी त्रिपुरा-भैरवी तथा।
लिंग-गीतिः सुगीतिश्च लिंगस्था लिंग-रूप-धृक्॥११९॥

लिंग-माना लिंग-भवा लिंग-लिंगा च पार्वती।
भगवती कौशिकी च प्रेमा चैव प्रियंवदा॥१२०॥
गृध्र-रूपा शिवा-रूपा चक्रिणी चक्र-रूप-धृक्।
लिंगाभिधायिनी लिंग-प्रिया लिंग-निवासिनी॥१२१॥
लिंगस्था लिंगनी लिंग-रूपिणी लिंग-सुन्दरी।
लिंग-गीतिमहा-प्रीता भग-गीतिर्महा-सुखा॥१२२॥
लिंग-नाम-सदानन्दा भग-नाम-सदा-रतिः।
लिंग-माला-कण्ठ-भूषा भग-माला-विभूषणा॥१२३॥
भग-लिंगामृत-प्रीता भग-लिंगामृतात्मिका।
भग-लिंगाचन-प्रीता भग-लिंग-स्वरूपिणी॥१२४॥
भग-लिंग-स्वरूपा च भग-लिंग-सुखावहा।
स्वयम्भू-कुसुम-प्रीता स्वयम्भू-कुसुमार्चिता॥१२५॥
स्वयम्भू-पुष्प-प्राणा स्वयम्भू-कुसुमोत्थिता।
स्वयम्भू-कुसुम-स्नाता स्वयम्भू-पुष्प-तर्पिता॥१२६॥
स्वयम्भू-पुष्प-घटिता स्वयम्भू-पुष्प-धारिणी।
स्वयम्भू-पुष्प-तिलका स्वयम्भू-पुष्प-चर्चिता॥१२७॥
स्वयम्भू-पुष्प-निरता स्वयम्भू-कुसुम-ग्रहा।
स्वयम्भू-पुष्प-यज्ञांगा स्वयम्भूकुसुमात्मिका॥१२८॥
स्वयम्भू-पुष्प-निचिता स्वयम्भू-कुसुम-प्रिया।
स्वयम्भू - कसुमादान - लालसोन्मत्त - मानसा॥१२९॥
स्वयम्भू - कुसुमानन्द - लहरी - स्निग्ध - देहिनी।
स्वयम्भू-कुसुमाधारा स्वयम्भू-कुसुमा-कला॥१३०॥
स्वयम्भू-पुष्प-निलया स्वयम्भू-पुष्प-वासिनी।
स्वयम्भू-कुसुम-स्निग्धा स्वयम्भू-कुसुमात्मिका॥१३१॥

स्वयम्भू-पुष्प-कारिणी स्वयम्भू-पुष्प-पाणिका।
स्वयम्भू-कुसुम-ध्याना स्वयम्भू-कुसुम-प्रभा॥१३२॥
स्वयम्भू-कुयुम-ज्ञाना स्वयम्भू-पुष्प-भोगिनी।
स्वयम्भू-कुसुमोल्लास स्वयम्भू-पुष्प-वर्षिणी॥१३३॥
स्वयम्भू-कुसुमोत्साहा स्वयम्भू-पुष्प-रूपिणी॥
स्वयम्भू-कुसुमोन्मादा स्वयम्भू-पुष्प-सुन्दरी॥१३४॥
स्वयम्भू-कुसुमाराध्या स्वयम्भू-कुसुमोद्भवा।
स्वयम्भू-कुसुम-व्यग्रा स्वयम्भू-पुष्प-पूर्णिता॥१३५॥
स्वयम्भू-पूजक-प्रज्ञा स्वयम्भू-होतृ-मातृका।
स्वयम्भू-दातृ-रक्षित्री स्वयम्भू-रक्त-तारिका॥१३६॥
स्वयम्भू-पूजक-ग्रस्ता स्वयम्भू-पूजक-प्रिया।
स्वयम्भू-वन्दकाधारा स्वयम्भू-निन्दकान्तका॥१३७॥
स्वयम्भू-प्रद-सर्वस्वा स्वयम्भू-प्रद-पुत्रिणी।
स्वयम्भू-प्रद-सस्मेरा स्वयम्भू-प्रद-शरीरिणी॥१३८॥
सर्व-कालोद्भव-प्रीता सर्व-कालोद्भवात्मिका।
सर्व-कालोद्भवोद्भावा सर्व-कालोद्भवोद्भवा॥१३९॥
कुण्ड-पुष्प-सदा-प्रतिर्गोल-पुष्प-सदा-रतिः।
कुण्ड-गोलोद्भव-प्राणा कुण्ड-गोलोद्भवात्मिका॥१४०॥
स्वयम्भुवा शिवा धात्री पावनी लोक-पावनी।
कीर्तिर्यशस्विनी मेधा विमेधा शुक्र-सुन्दरी॥१४१॥
अश्विनी कृत्तिका पुष्या तैजस्का चन्द्र-मण्डला।
सूक्ष्माऽसूक्ष्मा वलाका च वरदा भय-नाशिनी॥१४२॥
वरदाऽभयदा चैव मुक्ति-बन्ध-विनाशिनी।
कामुका कामदा कान्ता कामाख्या कुल-सुन्दरी॥१४३॥

दुःखदा सुखदा मोक्षा मोक्षदार्थ-प्रकाशिनी।
दुष्टादुष्ट-मतिश्चैव सर्व-कार्य-विनाशिनी॥१४४॥
शुक्राधारा शुक्र-रूपा-शुक्र-सिन्धु-निवासिनी।
शुक्रालय शुक्र-भोगा शुक्र-पूजा-सदा-रतिः॥१४५॥
शुक्र-पूज्या शुक्र-होम-सन्तुष्टा शुक्र-वत्सला।
शुक्र-मूर्त्तिः शुक्र-देहा शुक्र-पूजक-पुत्रिणी॥१४६॥
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्र-संस्पृहा शुक्र-सुन्दरी।
शुक्र-स्नाता शुक्र-करी शुक्र-सेव्याति-शुक्रिणी॥१४७॥
महा-शुक्रा शुक्र-भवा शुक्र-वृष्टि-विधायिनी।
शुक्राभिधेया शुक्रार्हा शुक्र-वन्दक-वन्दिता॥१४८॥
शुक्रानन्द-करी शुक्र-सदानन्दाभिधायिका।
शुक्रोत्सवा सदा-शुक्र-पूर्णा शुक्र-मनोरमा॥१४९॥
शुक्र-पूजक-सर्वस्वा शुक्र-निन्दक-नाशिनी।
शुक्रात्मिका शुक्र-सम्पत् शुक्राकर्षण-कारिणी॥१५०॥
शारदा साधक-प्राणा साधकासक्त-रक्तपा॥१५१॥
साधकानन्द-सन्तोषा साधकानन्द-कारिणी।
आत्म-विद्या व्रह्म-विद्या पर-ब्रह्म-स्वरूपिणी॥१५२॥
त्रिकूटस्था पञ्चि-कूटा सर्व-कूट-शरीरिणी।
सर्व-वर्ण-मयी वर्ण-जप-माला-विधायिनी॥१५२॥

## हनुमद् बीसा

तन्त्र शास्त्र में यह विश्वास अनेकों वर्षों से किया जा रहा है कि 'जिसके पास बीसा, उसका क्या करे जगदीशा'। परन्तु प्रश्न

है कि कौन सा बीसा ? क्योंकि अनेकों बीसे अपनी-अपनी विभिन्न आकृतियों में पाये जाते हैं और प्रत्येक बीसे का सम्बन्ध किसी न किसी देवी देवता से जोड़ा गया है। आज आधुनिक काल में लेखक बनकर विद्वान कहलाने के शौकिनों ने तिल का ताड़ और पर्वत को खाक कर डाला है। जिस कारण अपनी स्वतन्त्र स्थिति तन्त्र की वास्तविकता प्रदर्शित ही नहीं कर पाती।

इससे पहले कि हनुमद् बीस प्रस्तुत करूँ मुझे इसके विषय में कुछ कहना है क्योंकि हनुमद् बीसा आज से पहले आपने कहीं देखा या सुना न होगा। मैं इसे सर्वप्रथम प्रस्तुत कर रहा हूँ और यह प्रस्तुतीकरण स्वयं प्रभु श्री राम भक्त हनुमान जी की इच्छा ही है जबकि आज से बीस साल पहले चमत्कारिक रूप में प्राप्त हुआ था।

उत्तर प्रदेश की विशेष औद्योगिक नगरी के कर्मचारी आवास कालोनी के मध्य एक कुआँ था जो कि अब सम्भवतः पाट दिया गया है। वह कुआँ वर्षों से सूखा पड़ा था और उसमें ईंट-पत्थर भरे पड़े थे इस पर भी वह बहुत गहरा था। एक दिन रात्रि के समय मैं उसमें गिर पड़ा जो कि सम्भवतः प्रभु इच्छा रही होगी। कुएँ में गिरने पर मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे जल में गिरा हूँ परन्तु वास्तविकता यह थी कि मैं ईंट-पत्थरों के ऊपर पड़ा हुआ था और मुझे रत्ती भर भी हानि न पहुँची थी।

इस नगर में पनकी नामक स्थान पर श्री हनुमान जी का प्रसिद्ध एवं जाग्रत सिद्ध पीठ है जो कि हनुमान मन्दिरों में अपने आप में अनेकों विशेषतायें संग्रह किये हुए है। यहाँ पर जाने की

जब भी अभिलाषा होती तब ही दर्शन करने पहुँच जाता था और जब भी कोई 'भीड़' पड़ती तब उन्हें ही पुकारता तो क्षण मात्र में ही उस विपदा का हरण हो जाता है।

कुएँ में गिरने पर सर्वप्रथम मैं हतप्रभ रह गया और फिर रोने लगा। काफी देर तक ऊपर सितारों से जड़े काले आसमान को देखता हुआ रोता रहा और रो-रो कर मेरी आँख लग गई।

नींद में मैंने हनुमान जी एक आकृति देखी और कहीं से एक आवाज आने लगी। उसे मैं सुनता रहा। मन में आया मैंने भी उसे गाया। बीच-बीच में गलती या रुकावट होने पर वह आवाज पुनः मेरी भूल का संशोधन कर देती थी।

इसके बाद मेरी आँख खुल गयी और मैं काफी समय तक मन ही मन मन्थन करता रहा और फिर मैंने हनुमान जी को आवाज लगायी तो मस्तिष्क पटल पर पुनः स्वप्न वाली आकृति उभर आयी। इसके साथ ही मैंने वह शब्द उच्चारित करने आरम्भ कर दिये जो कि स्वप्न में मुझे कण्ठाग्र करवाये गये थे।

यदि आपने शास्त्रों का अध्ययन किया होगा तो यह भी आपने समझा होगा कि स्वप्न में प्राप्त मन्त्र स्तोत्रादि पूर्णतः सिद्ध होते हैं।

कुएँ में ही यह जप करने पर मैंने देखा कि मेरे पास एक रस्सी आ गयी है, उसे छूने पर वह कुछ मुलायम लगी और उसके ऊपर मुलायम बाल उगे हुए थे। मैंने ऊपर देखा तो कोई भी न था। मैंने उसे पकड़ लिया तो जैसे हवा का तीव्र झोंका आया हो, ऐसा प्रतीत हुआ और मैं अगले ही क्षण कुएँ से बाहर खड़ा था।

इस भाँति से मुझे हनुमद् बीसा प्राप्त हुआ था जो कि संकट मोचन श्री हनुमान जी का प्रसाद ही है। इसे मैंने अनेकों मित्रों को लिखवाया और सभी ने अपनी-अपनी परेशानियों से राहत पायी। आज सर्वप्रथम आप सब पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इसके साथ ही मैं यह अवश्य कहना चाहूँगा कि यह पाठ प्रभु का प्रसाद ही है जो कि मुझे प्राप्त हुआ है। अत: कोई भी अन्य लेखक या प्रकाशक बिना मेरी पूर्व अनुमति लिये अन्यत्र प्रकाशन न करे।

## श्री हनुमद् बीसा प्रारम्भ

(हनुमन्त बीसा)

॥ दोहा ॥

**राम भक्त विनती करूँ, सुन लो मेरी बात।**
**दया करो कुछ मेहर उपायो, सिर पर रखो हाथ॥**

॥ चौपाई ॥

**जय हनुमन्त, जय तेरा बीसा।**
**कालनेमि को जैसे खींचा॥**
**करुणा पर दो कान हमारो।**
**शत्रु हमारे तत्क्षण मारो॥**
**राम भक्त जय जय हनुमन्ता।**
**लंका को थे किये विध्वंसा॥**
**सीता खोज खबर तुम लाये।**
**अजर अमर के आशीष पाये॥**

लक्ष्मण प्राण विधाता हो तुम।
राम के अतिशय पासा हो तुम॥
जिस पर होते तुम अनुकूला।
वह रहता पतझड़ में फूला॥
राम भक्त तुम मेरी आशा।
तुम्हें ध्याऊँ मैं दिन राता॥
आकर मेरे काज सँवारो।
शत्रु हमारे तत्क्षण मारो॥
तुम्हरी दया से हम चलते हैं।
लोग न जाने क्यों जलते हैं॥
भक्त जनों के संकट टारे।
राम द्वार के हो रखवारे॥
मेरे संकट दूर हटा दो।
द्विविधा मेरी तुरन्त मिटा दो॥
रुद्रावतार हो मेरे स्वामी।
तुम्हरे जैसा कोई नाहीं॥
ॐ हनु हनु हनुमन्त का बीसा।
बैरिहु मारु जगत के ईशा॥
तुम्हरो नाम जहाँ पढ़ जावे।
बैरि व्याधि न नेरे आवे॥
तुम्हरा नाम जगत सुखदाता।
खुल जाता है राम दरवाजा॥
संकट मोचन प्रभु हमारो।
भूत प्रेत पिशाच को मारो॥

अंजनी पुत्र नाम हनुमन्ता।
सर्व जगत बजता है डंका॥
सर्व व्याधि नष्ट हो जावे।
हनुमद् बीसा जो कह पावे॥
संकट एक न रहता उसको।
हं हं हनुमंत कहता नर जो॥
ह्रीं हनुमंते नमः जो कहता।
उससे तो दुख दूर ही रहता ॥

॥ दोहा ॥

मेरे राम भक्त हनुमन्ता, कर दो बेड़ा पार।
हूँ दीन मलीन कुलीन बड़ा, कर लो मुझे स्वीकार॥
राम लषन सीता सहित, करो मेरा कल्याण।
संताप हरो तुम मेरे स्वामी, बना रहे सम्मान॥
प्रभु राम जी माता जानकी जी, सदा हों सहाई।
संकट पड़ा यशपाल पे, तभी आवाज लगाई॥

हनुमत् बीसा यन्त्र को बनाते समय, फ्रेम करते या करवाते समय और धूप दीप करते समय निम्नलिखित मन्त्र का धाराप्रवाह जप करते रहें।

मन्त्र—"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रू ह्रें ह्रों ह्रः श्री हनुमंते नमः। रं राम भक्त हं हनुमन्ता सर्व सिद्धि प्रदः सर्व संकाटादि नाशकः अं अंजनी पुत्र आँजनेय मम सहाय कुरु कुरु स्वाहा॥"

इसके बाद हनुमद् बीसा का गायन शैली में पाठ करने से

**श्री हनुमान बीसा यन्त्रम्**

(इस चित्र की फोटोस्टेट निकालकर पूजा में प्रयोग कर सकते हैं।)

अभीष्ट सिद्धि प्राप्त हुआ करती है।

## हनुमद् बीसा जप विधि

श्री राम भक्त हनुमान जी को पूजने से पहले माता जानकी जी एवं श्री राम जी का पंचोपचार से पूजन कर लेना चाहिये। इसके बाद सवा पाव का रोट, दो लड्डू, जनेऊ, खड़ाऊँ, पताका, लंगोट, सवा रुपया, एक नारियल, सिन्दूर तथा तेल (चमेली) मन्दिर में जाकर हनुमान जी को दे आना चाहिये। इसके बाद हनुमद (हनुमन्त) बीसे का पाठ करें।

यूँ तो यह एक सिद्ध पाठ है फिर भी साधक को चाहिये कि पाठ को अपने अनुकूल कर लें। इसके लिये यदि हनुमान जी की कृपा चाहिये तो मंगल के दिन शुभारम्भ करें और यदि शत्रु, दुर्गति, विघ्न, बाधादि का नाश करना हों तो शनिवार कें दिन से शुभारम्भ करें। रात्रि को दस बजे रक्त वस्त्र धारण करके रक्त कम्बलासन पर उत्तर दिशा की तरफ मुख करके बैठ जायें। अपने समक्ष बतायी गयी तस्वीर, कहे गये मन्त्रानुसार रख कर हनुमद् बीसा के पाठ करें और वहीं पर शयन करें। स्त्री भोग, व्यर्थ की वार्तादि का प्रयास न कर। खट्टा तीता न खाकर मीठे चावल खायें और प्रतिदिन हनुमान जी के मन्दिर जायें और एक गुड़हल का पुष्प उनके सिर पर रख आयें। यह क्रिया बीस दिन तक करनी है। इक्कीसवें दिन हवन करें। इसमें हनुमद् बीसे का पाठ करते हुए इक्कीस आहुतियाँ दें। इक्कीस ब्राह्मणों को भोजन करावें और अखण्ड रामायण का पाठ करवायें।

इस भाँति से यह पाठ सिद्ध होकर हनुमानास्त्र बन जायेगा,

जो कि कभी भी किसी भी कार्य के हेतु प्रयोग किया जा सकेगा।

इस कार्य के मध्य यदि कोई चमत्कार हो तो घबरायें नहीं कार्यक्रम को पूरा करें अन्यथा हांनि की अधिक सम्भावना है।

**न मैं ज्ञानी, न मैं ध्यानी। अदना पुरुष नाकारा हूँ॥**
**गुप्त विद्या के प्रचार को। प्रभु कृपा से पधारा हूँ॥**

शेष फिर कभी।

**पक्षियों को मारना अब कानूनी अपराध है इसकी भूल न करें। अतः** पाठक पुस्तक को पढ़कर कोई प्रयोग करने की चेष्टा न करें। उस प्रयोग करने से पूर्व किसी योग्य तान्त्रिक, मन्त्रवेत्ता व ज्योतिषी से पूरी जानकारी प्राप्त करना उचित होगा।

## क्षमा प्रार्थना

पुस्तक में दिये गये सभी स्तुति, पाठ, स्तोत्र, पूजन–विधि इत्यादि में शुद्धता का पूरा ध्यान रखा गया है। फिर भी मानवीय भूलवश कोई संशोधन हो तो पाठकर्ता वह ठीक कर लें तथा हमें सूचित करें। हम नए संस्करण में भूल सुधार देगें। चूँकि पुस्तक के लेखक अब बैकुण्ठवासी हो चुके हैं अंतः हम विद्वानों से क्षमाप्रार्थी हैं कि वह भूलसुधार में सहयोग देगें।

—प्रकाशक, मुद्रक

प्रकाशक : **रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार**

## तन्त्र मन्त्र विषयक अन्य प्रसिद्ध पुस्तकें

- ❐ तंत्र महायोग (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
- ❐ महाविद्या तन्त्र मन्त्र (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
- ❐ सचित्र तान्त्रिक जड़ी बूटी दर्शन (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
- ❐ गुरु नानक मंत्र शक्ति (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
- ❐ मन्त्र पोथी (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
- ❐ बावन जंजीरा (यशपाल जी व अटवाल जी)
- ❐ मंत्र दीक्षा और रहस्य (पं. महावीर प्रसाद मिश्र)
- ❐ तंत्र के अचूक प्रयोग (तांत्रिक बहल)
- ❐ पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें (बहल)
- ❐ नाग और नागमणि (तांत्रिक बहल)
- ❐ तंत्र मंत्र द्वारा रोग निवारण (तांत्रिक बहल)
- ❐ सौन्दर्य लहरी (यंत्र और व्याख्या सहित) प्रस्तुति तांत्रिक बहल
- ❐ गोरख तंत्र (तांत्रिक बहल)
- ❐ मुस्लिम तंत्र (तांत्रिक बहल)
- ❐ मृत आत्माओं से सम्पर्क और अलौकिक साधनाएँ (तांत्रिक बहल)
- ❐ वनस्पति तंत्र (तांत्रिक बहल)
- ❐ चमत्कारी मंत्र साधना (तांत्रिक बहल)
- ❐ सुखी जीवन के लिए टोटके और मंत्र (तांत्रिक बहल)
- ❐ सुगम तांत्रिक क्रियाएँ (तांत्रिक बहल)
- ❐ तंत्र मंत्र यंत्र (चाणक्य विरचित) प्रस्तुति तांत्रिक बहल
- ❐ पराविज्ञान की साधना और सिद्धियाँ (तांत्रिक बहल)
- ❐ मंत्र साधना कैसे करें (तांत्रिक बहल)
- ❐ तंत्र साधना कैसे करें (तांत्रिक बहल)
- ❐ तंत्र द्वारा मनोकामना सिद्धि (पं. भृगुनाथ मिश्र)
- ❐ त्रिसूक्तम् : यंत्र और अनुवाद सहित (पं. हरिओम कौशिक)
- ❐ तंत्र द्वारा यश, धन और विद्या प्राप्ति (पं. हरिओम कौशिक)
- ❐ तंत्र द्वारा दूर करें दुर्भाग्य (गोपाल राजू)
- ❐ धनदायक तांत्रिक प्रयोग (गोपाल राजू) रंगीन चित्रों सहित
- ❐ अन्धविश्वास सत्य और तथ्य (गोपाल राजू)
- ❐ तंत्र सिद्धि (पं. राधाकृष्ण श्रीमाली)

## योगीराज यशपाल जी की अद्वितीय पुस्तकें-

बैकुण्ठवासी

## योगीराज
## श्री यशपाल जी

को

### शत शत प्रणाम
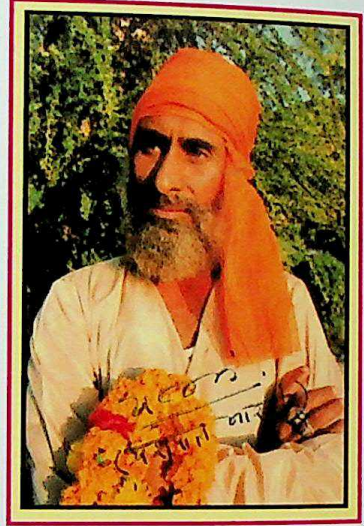
मन्त्र-तन्त्र के उद्भट विद्वान और भविष्यद्रष्टा श्री यशपाल जी ने ज्योतिष,योग एवं तन्त्र विद्या में देश-विदेश में अपूर्व ख्याति प्राप्त की है। इनका समुचा जीवन प्राचीन, शास्त्रीय और भारतीय मर्यादायों से जुड़ा हुआ रहा। इन्होने प्राच्य गुप्त विद्यायों की विविध शाखाओं के पुनर्जागरण में विशेष योगदान किया। एतदर्थ अखिल भारतीय ज्योतिर्विज्ञान अध्ययन केंन्द्र की ओर से सम्मानित भी किया जा चुका है। इन्होने अध्ययन व अनुसंधान से जो अनुभव पाया उसे पुस्तकों के रूप में समाज को अर्पित करके सराहनीय कार्य किया है। परमात्मा की असीम कृपा से यशपाल जी की कृतियों एवं उनके अनुभवों से लाखों लोग लाभ उठा चुके हैं।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार